सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 110, नई दिल्ली, रविवार 29 जून 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिसकी फितरत हमेशा बदलने की हो, वह कभी किसी का नहीं हो सकता, चाहे वह समय हो या इंसान!

03 गरीबों की झुग्गियां बचाने के लिए बीजेपी की तानाशाही के खिलाफ
06 वर्षावनों के नष्ट होने से संकट में मानव अस्तित्व
08 जन शताब्दी एक्सप्रेस पर पथराव के आरोप में एक व्यक्ति गिरफ्तार

पार्किंग के नये नियम से दिल्ली रेलवे स्टेशन पर यात्री परेशान, जाम और जुर्माने से वाहन चालक परेशान

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर नई पार्किंग व्यवस्था शुरू होने से यात्रियों को परेशानी हो रही है। मुफ्त ड्रॉप जोन में आठ मिनट की समय सीमा अव्यवहारिक है जिससे जाम लग रहा है और कैब-ऑटो चालकों पर जुर्माना लग रहा है। पार्किंग तक पहुंचने का रास्ता भी सुविधाजनक नहीं है। यात्रियों ने समय सीमा बढ़ाने या यातायात प्रबंधन सुधारने का सुझाव दिया है।

संजय बाटला

नई दिल्ली। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर लागू की गई नई पार्किंग व्यवस्था पहले ही दिन यात्रियों और वाहन चालकों के लिए मुसीबत बन गई। स्टेशन के बाहर अजमेरी गेट साइड पर ड्रॉप आउट के लिए निर्धारित आठ मिनट की मुफ्त पार्किंग नीति अव्यवहारिक साबित हो रही है। जिससे न केवल जाम की स्थिति पैदा हो रही है बल्कि कैब और ऑटो चालकों की जेब पर भी अतिरिक्त बोझ पड़ रहा है।

रेलवे स्टेशन अधिकारियों के अनुसार परिसर में दो तरह की पार्किंग बनाई गई है। एक मुक्त ड्रॉप जोन है और दूसरी सामान्य पार्किंग जहां शुल्क देकर गाड़ियां खड़ी की जा सकती हैं। मुक्त ड्रॉप जोन में वाहन के प्रवेश करते ही समय की गिनती शुरू हो जाती है। ऐसे में यदि वाहन चालक आठ मिनट के भीतर बाहर नहीं निकल पाए तो समय के अनुसार जुर्माना बढ़ना शुरू हो जाता है।

15 से 30 मिनट होने पर 200 रुपये जुर्माना

कैब और आटो चालकों का आरोप है कि आठ मिनट से ज्यादा होने पर 50 रुपये, 15 से 30 मिनट होने पर 200 रुपये जुर्माना और 30 मिनट से अधिक होने पर 500 रुपये तक जुर्माना देना पड़ रहा है। ऐसे में उन्हें बिना किसी गलती के मुफ्त पार्किंग में भी भारी भरकम जुर्माना भरना पड़ रहा है। क्योंकि स्टेशन परिसर के बाहर जाम और अव्यवस्था होने के कारण वाहन निकल नहीं पाते और समय सीमा पार हो जाती है।

पार्किंग तक पहुंचने का रास्ता भी सुविधाजनक नहीं

दूसरी समस्या यह है कि पार्किंग तक पहुंचने का रास्ता भी सुविधाजनक नहीं है। खराब साइनबोर्ड और दिशाओं के अभाव में वाहन चालक भ्रमित हो जाते हैं। इस कारण वाहन जाम में रेंगते हुए चलते हैं। ऐसे में वाहन चालकों की मांग है कि मुक्त पार्किंग की समय सीमा को बढ़ाकर कम से कम 15 से 20 मिनट किया जाए या फिर ड्रॉप जोन को अवरोध मुक्त और स्पष्ट दिशा- निर्देशों के साथ संचालित किया जाए।

वहीं, कुछ कैब चालकों और यात्रियों ने सुझाव दिया कि यदि रेलवे प्रशासन की ओर से स्टेशन परिसर के चारों ओर यातायात प्रबंधन और प्रवेश- निकास द्वारा पर सुव्यवस्थित कर दे तो जाम की स्थिति स्वत कम हो जाएगी।

वाहन चालकों की प्रतिक्रिया

स्टेशन पर रोजाना लाखों यात्री आते- जाते हैं और मौजूदा हालात में न केवल उनकी यात्रा बाधित हो रही है बल्कि मानसिक तनाव और आर्थिक नुकसान भी हो रहा है। - **देवेश कुमार, कैब चालक**

कई वाहन चालकों का कहना है कि रेलवे की यह व्यवस्था सुविधा के बजाय सजा बनकर सामने आई है। यदि जल्द ही व्यावहारिक समाधान नहीं निकाला गया तो यह अव्यवस्था और अधिक बढ़ सकती है। - **दीप चंद यादव, कैब चालक**

रेलवे प्रशासन को स्टेशन परिसर के प्रवेश और निकास द्वार पर लगने वाले वाहनों के जाम को खत्म करने के लिए काम करना चाहिए। तब जाकर वाहन चालकों को फ्री पार्किंग का लाभ मिलेगा। - **नदीम खान, कैब चालक**

रेलवे स्टेशन के बाहर जाम लगने के कारण परिसर के अंदर से वाहन नहीं निकल पाते है। जिसका हर्जाना परिसर में मौजूद कैब और आटो चालकों को अपनी जेब से चुकाना पड़ता है। - **पुष्पेंदर कुमार, कैब चालक**

दिल्ली के इस इलाके को जाम से मिल जाएगी मुक्ति, NHAI को मांडी रोड सौंपने की तैयारी शुरू

लोक निर्माण मंत्री प्रवेश वर्मा ने छतरपुर विधानसभा क्षेत्र का निरीक्षण किया और कई विकास परियोजनाओं की घोषणा की। मांडी रोड को एनएचएआई को सौंपा जाएगा और 80 एमजीडी क्षमता का वाटर ट्रीटमेंट प्लांट बनाया जाएगा। सीवर परियोजनाओं का काम जल्द शुरू होगा। उन्होंने स्थानीय लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं भी सुनीं और अधिकारियों को परियोजनाओं को समय पर पूरा करने का निर्देश दिया।

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली। छतरपुर विधानसभा क्षेत्र का व्यापक निरीक्षण करने के दौरान शुक्रवार को लोक निर्माण मंत्री प्रवेश वर्मा ने न केवल लोगों की समस्याएं सुनी बल्कि कई घोषणाएं भी कीं। उन्होंने कहा कि मांडी रोड को एनएचएआई (नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया) को सौंपने की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

जैसे ही ये सड़क एनएचएआई के अधीन आएंगी, इन्हें राष्ट्रीय मानकों के अनुसार चौड़ा किया जाएगा। इससे जाम और खराब सड़कों की समस्याओं का स्थायी समाधान हो जाएगा।

उन्होंने कहा कि छतरपुर में 80 एमजीडी क्षमता का वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट बनाया जा रहा है। इसमें हिमाचल प्रदेश से कच्चा पानी लाकर क्षेत्र में स्वच्छ और निरंतर जल आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी।

पानी की समस्या कम करने के लिए 85 ट्यूबवेल क्षेत्र के लिए पहले ही स्वीकृत किए जा चुके हैं और इनके इंस्टालेशन कार्य चल रहा है। यूजीआर (अंडरग्राउंड रिजर्वायर) से जलापूर्ति जोड़ने का काम भी तेजी से हो रहा है।

सीवर परियोजनाओं को लेकर पीडब्ल्यूडी मंत्री ने कहा कि टेंडर की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। जल्द ही काम शुरू कर दिया जाएगा। निरीक्षण के दौरान उन्होंने क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों की समीक्षा की।

लोगों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं भी सुनीं। उन्होंने कहा कि छतरपुर से मेरे पिता सांसद रहे हैं। मैंने यह जमीन, यहां की तकलीफों और संघर्षों को करीब से जिया है। मेरे लिए यहां की सेवा राजनीति नहीं, बल्कि पारिवारिक जिम्मेदारी है।

दिल्ली के गांवों में सड़क, पानी या सीवर, हर मूलभूत सेवा को प्राथमिकता दी जा रही है। दिल्ली देहात के विकास के लिए धन की कभी कमी नहीं होने दी जाएगी। हम केवल इन्फ्रास्ट्रक्चर नहीं, विश्वास भी बना रहे हैं।

निरीक्षण के क्रम में पीडब्ल्यूडी मंत्री ने 100 फुटा रोड, सीडीआर चौक, जौनापुर गांव, नेब सराय चौपाल और मैदानगढ़ी गांव में स्थानीय लोगों से मुलाकात की और उनकी शिकायतें सुनीं।

इस दौरान पीडब्ल्यूडी, दिल्ली जल बोर्ड व अन्य संबंधित विभागों के अधिकारियों को उन्होंने तय समय सीमा के भीतर सभी परियोजनाएं पूरी पारदर्शिता और गुणवत्ता के साथ पूरी करने का निर्देश दिया।

ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस (AIMTC) के नेतृत्व में की जा रही महत्वपूर्ण बैठक आज

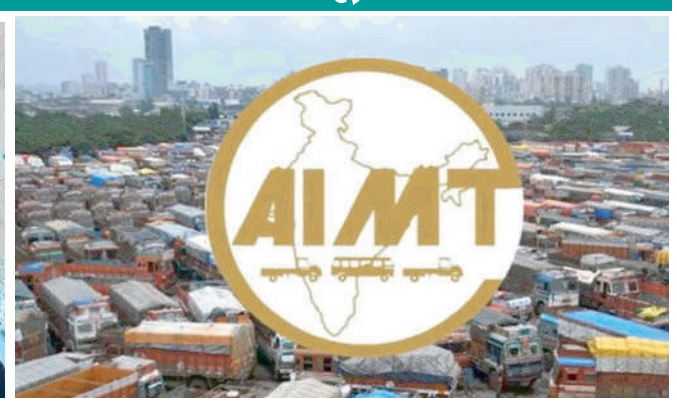

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। परिवहन क्षेत्र से जुड़े ज्वलंत मुद्दों, विशेष रूप से CAQM द्वारा BS-IV और पुराने ट्रकों पर दिल्ली में प्रवेश प्रतिबंध के निर्णय के विरुद्ध, परिवहन समुदाय की भावनाओं और चिंताओं को उजागर करने हेतु एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस (AIMTC) के नेतृत्व में किया जा रहा है।

इस महत्वपूर्ण सभा में ट्रक, बस, टेंपो, ऑटो, टैक्सी और ड्राइवर यूनियनों एवं संगठनों के सैकड़ों प्रतिनिधि एकत्र होंगे।

हम मीडिया के सभी सम्मानित साथियों को इस महत्वपूर्ण आयोजन में सादर आमंत्रित करते हैं ताकि वे जनहित से जुड़े इस गंभीर मुद्दे को समाज और सरकार के समक्ष प्रस्तुत करने में हमारी सहभागिता करें।

समयः प्रातः 11:00 बजे से
मध्याह्न भोजन : 2.00 -2.30 बजे
स्थानः लॉन न. 2, पंजाबी बाग क्लब, Opp. C K Birla Hospital, नई दिल्ली
तिथिः रविवार, 29 जून 2025
मुख्य मुद्देः

* दिल्ली में BS IV व नीचे के मानकों के गुड्ज़ वाहनों पर 1 नवंबर 2025 से घोषित प्रतिबंध के आदेश को CAQM / सरकार द्वारा वापस लिया जाए
* एप आधारित ओला, उबर व मोटर बाइक टैक्सी जैसे गैर कानूनी वाहनों पर प्रतिबंध लगाया जाए
* सरकार ड्राइवरस कल्याण बोर्ड के गठन का वादा पूरा करे।

आपकी गरिमामयी उपस्थिति से इस बैठक का उद्देश्य और भी प्रभावशाली होगा।

सधन्यवाद

आपकी गरिमामयी उपस्थिति से इस बैठक का उद्देश्य और भी प्रभावशाली होगा।

सधन्यवाद।

निवेदक..
डॉ. हरीश सभरवाल
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस (AIMTC)

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

नरेला बस टर्मिनल का उद्घाटन, दिल्लीवालों को मिली 100 नई बसें; सीएम रेखा गुप्ता ने दिखाई हरी झंडी

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने नरेला में नए डीटीसी बस टर्मिनल का उद्घाटन किया और 100 से अधिक नई देवी बसों को हरी झंडी दिखाई। 2.63 करोड़ की लागत से बना यह टर्मिनल 9 रूटों पर 75 बसों का संचालन करेगा जिनमें अधिकांश इलेक्ट्रिक बसें हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली की सड़कों पर 2000 से अधिक इलेक्ट्रिक बसें चल रही हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शुक्रवार को नरेला के सेक्टर ए-9 में स्थित नवनिर्मित डीटीसी बस टर्मिनल का उद्घाटन और 100 से अधिक नई देवी बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। करीब 2.63 करोड़ की लागत से बना यह टर्मिनल 9 प्रमुख रूट्स पर 75 बसों का संचालन सुनिश्चित करेगा, जिनमें से अधिकांश इलेक्ट्रिक बसें होंगी।

यह डिपो मात्र 90 दिन में तैयार कर लिया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली की सड़कों पर अब 2000 से अधिक इलेक्ट्रिक बसें दिल्ली की सड़कों पर दौड़ रही हैं। सरकार का लक्ष्य है कि 2027 तक पूरी परिवहन व्यवस्था इलेक्ट्रिक हो। लोकार्पण कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इस बात पर खुशी जताई कि कुछ नई देवी बसों का संचालन महिला ड्राइवरों कर रही हैं।

यह महिला सशक्तिकरण का देश में नया अध्याय खुला है। हमने वादा किया था कि दिल्ली के हर बस डिपो और टर्मिनल को उन्नत किया जाएगा और नए डिपो विकसित किए जाएंगे आज का यह टर्मिनल और देवी बसें उसी संकल्प का साक्ष्य हैं। उन्होंने कहा कि मात्र 90 दिनों में यह डिपो तैयार किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछली सरकारों ने दिल्ली की लाइफलाइन मानी जाने वाली डीटीसी को गड्ढे में धकेल दिया। सीएजी रिपोर्ट के अनुसार डीटीसी पर 65,000 करोड़ रुपये से अधिक का घाटा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछली सरकारें काम में दाम खोजती थीं, जबकि मौजूदा सरकार कामरू पर ध्यान देती है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि हमारा लक्ष्य 100 प्रतिशत सार्वजनिक परिवहन बेड़े को इलेक्ट्रिक बनाना है। कार्यक्रम में परिवहन मंत्री डा. पंकज कुमार सिंह ने कहा कि नरेला सेक्टर-9 में 4000 वर्गमीटर क्षेत्र में बना यह टर्मिनल न केवल स्मार्ट सुविधाओं से लैस है, बल्कि इसमें इलेक्ट्रिक बसों की चार्जिंग, मेंटेनेंस और पार्किंग की व्यवस्था भी है। कार्यक्रम में सांसद योगेंद्र चंदोलिया, मुख्य सचिव धर्मेंद्र सहित डीटीसी अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

इन रुट पर चलेंगी नई बसें

मुख्यमंत्री ने बताया कि नरेला के इस बस टर्मिनल से चलने वाली अधिकांश इलेक्ट्रिक बसें होंगी। नई बसें नौ रुट पर चलेंगी। इस बस टर्मिनल से चलने वाली बसें पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन, मोरी गेट, दिल्ली सचिवालय, उत्तम नगर और बॉर्डर एरिया को जोड़ेंगी।

बसों के नरेला डिपो से संचालित होने से उत्तर-पश्चिमी दिल्ली में आवागमन बेहतर होगा। ये बसें लो-फ्लोर, एसी, व्हीलचेयर-फ्रेंडली बसें पैनिक बटन, सीसीटीवी और रियल टाइम ट्रैकिंग जैसी सुविधाओं से लैस हैं।

नई देवी बसों में नारंगी रंग पर सीएम का जवाब

दिल्ली रंग-बिरंगी नई देवी बसों में नारंगी रंग मिक्स करने के सवाल का मुख्यमंत्री ने अपने ही अंदाज में जवाब दिया। कहा, दिल्ली रंग-बिरंगी है, देश के विभिन्न राज्यों के लोग रहते हैं।

हर जगह के अपने रंग हैं तो कई रंगों का इस्तेमाल होना चाहिए, इसलिए नए प्रयोग के तौर पर हरे और नारंगी रंग की बसें शुरू की गई हैं।

"जगन्नाथ रथ यात्रा" के अंतर्गत भगवान जगन्नाथ, देवी सुभद्रा और भगवान बलराम के रथों की विशेष जानकारी

यह तीनों रथ अपने-अपने नाम, रचना, ध्वज, रक्षक, सारथी, रस्सी, घोड़े, एवं देवता के अनुसार विशिष्ट हैं।

भगवान जगन्नाथ का रथ – नन्दीघोष

- पहियों की संख्याः 16
- रक्षकः गरुड़
- सारथीः दारुक
- घोड़े (सफेद): शंख, बलाहक, सुव्रत, हरिदाश
- रसी का नामः शंखचूड़ नागिनी
- साथ चलने वाले देवताः मदनमोहन
- ध्वज का नामः त्रैलोक्यमोहिनी
- ऊँचाईः 44' 2''
- मापः 34'6'' x 34'6''

देवी सुभद्रा का रथ – दर्पदलना

- पहियों की संख्याः 12
- रक्षकः जयदुर्गा
- सारथीः अर्जुन
- घोड़े (लाल): रोचिक, मोचिक, जीत, अपराजिता
- रसी का नामः स्वर्णचूड़ा नागिनी
- साथ चलने वाले देवताः सुदर्शन
- ध्वज का नामः नादम्बिका
- ऊँचाईः 42'3''
- मापः 31'6'' x 31'6''
- लकड़ी की कुल संख्याः 832

भगवान बलराम का रथ – तलध्वज

- पहियों की संख्याः 14
- रक्षकः वासुदेव
- सारथीः मातलि
- घोड़े (काले): त्रिविक्रम, घोर, दीर्घशर्मा, शर्बरिया
- रसी का नामः वासुकी नाग
- साथ चलने वाले देवताः रामकृष्ण
- ध्वज का नामः उन्नानी
- ऊँचाईः 43'3''
- मापः 33' x 33'

महाभारत के इन पात्रों से आज भी अनजान है दुनिया, जानिए कौन थीं अर्जुन की सास

अनन्या मिश्रा

महाभारत के कई पात्र ऐसे भी हैं, जिनके बारे में हम सभी बहुत अधिक नहीं जानते हैं। ऐसे ही पात्रों में अर्जुन की सास हैं। यही नहीं अर्जुन की द्रौपदी के अलावा अन्य तीन पत्नियां भी थीं। जिनका नाम सुभद्रा, उलूपी और चित्रांगदा था।

महाभारत काल का अपना इतिहास और हर एक पात्र की अलग कहानी है। वहीं महाभारत के कई पात्र ऐसे भी हैं, जिनके बारे में हम सभी बहुत अधिक नहीं जानते हैं। ऐसे ही पात्रों में अर्जुन की सास हैं। यही नहीं अर्जुन की द्रौपदी के अलावा अन्य तीन पत्नियां भी थीं। जिनका नाम सुभद्रा, उलूपी और चित्रांगदा था। हालांकि अर्जुन की पत्नियों के बारे में तो आप सबने से सुना होगा। लेकिन इन पत्नियों की माताओं और अर्जुन की सास के बारे में आप नहीं जानते होंगे। महाभारत में उन सभी का जिक्र मिलता है, लेकिन उनकी कई ऐसी बातें हैं, जिससे लोग अभी भी अंजान हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको महाभारत काल से जुड़े इस सभी पात्रों से जुड़ी कुछ खास बातों के बारे में बताने जा रहे हैं।

अर्जुन की सास

महाभारत ग्रंथ में धर्म, कर्म, न्याय और रिश्तों की जटिलता के बारे में अनगिनत बातें सामने आती हैं। इस महाकाव्य का हर एक पात्र अपना विशिष्ट स्थान और महत्व रखता है। वहीं इनके जीवन की कथाएं हमें जीवन की कई महत्वपूर्ण बातें सिखाती हैं। सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर पांडवों में माने जाने वाले अर्जुन अपनी वीरता, पराक्रम और भगवान श्रीकृष्ण के अनन्या मित्र के रूप में जाने जाते हैं। अर्जुन की सभी पत्नियां द्रौपदी, सुभद्रा, उलूपी और चित्रांगदा के बारे में कई लोग जानते हैं। ऐसे में आज हम आपको अर्जुन की सास और पत्नियों की माताओं के बारे में बताने जा रहे हैं।

द्रौपदी की माता- महारानी पृषती

महाभारत काल का एक महत्वपूर्ण पात्र द्रौपदी थी। जोकि पांचाल देश के राजा द्रुपद की पुत्री थीं। पांचाली का नाम पांचों पांडवों के साथ हुआ था। जिनमें से अर्जुन प्रमुख थे। द्रौपदी स्वयंवर में अर्जुन विजय हुए थे। द्रौपदी के पिता का नाम राजा द्रुपद और उनकी पत्नी का नाम पृषती था। जोकि अर्जुन के सास-ससुर के रूप में जाने जाते थे। अर्जुन की पहली पत्नी द्रौपदी की मां महारानी पृषती एक शक्तिशाली और प्रतिष्ठित रानी थीं।

सुभद्रा की माता-महारानी रोहिणी

अर्जुन का दूसरा विवाह द्वारका के राजा वासुदेव श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा के साथ हुआ था। सुभद्रा के पिता का नाम वासुदेव और माता का नाम रोहिणी था। इस तरह से रोहिणी अर्जुन की सास थीं। सुभद्रा अपनी सुंदरता, बुद्धिमत्ता और धार्मिक स्वभाव के लिए फेमस थीं।

महाभारत काल में महारानी रोहिणी एक शांत और ममतामई माता के रूप में वर्णित है। वह बलराम और सुभद्रा की माता थीं और वह अपने पुत्र और पुत्री से स्नेह रखती थीं। बताया जाता है कि जब अर्जुन ने सुभद्रा का हरण करके उनसे विवाह किया था, तब रोहिणी ने इस घटना को सहजता से स्वीकार किया था।

उलूपी की माता-नागमाता

अर्जुन का तीसरा विवाह नाग कन्या उलूपी के साथ हुआ था। उलूपी नागराज कौरव्य की पुत्री थीं और नागलोक की राजकुमारी भी थीं। वनवास के 12 वर्षों के दौरान अर्जुन गंगा नदी में स्नान कर रहे थे, तब उलूपी ने उनको नागलोक में खींच लिया था और अर्जुन के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। इस तरह नागराज कौरव्य और उनकी पत्नी को नागमाता के रूप में जाना जाता है। साथ ही वही अर्जुन के सास-ससुर था। लेकिन अर्जुन की तीसरी सास का महाभारत में जिक्र नहीं मिलता है।

चित्रांगदा की माता-मणिपुर की महारानी

मणिपुर के राजा चित्र वाहन की पुत्री चित्रांगदा के साथ अर्जुन का चौथा विवाह हुआ था। चित्रांगदा एक वीर और सुंदर राजकुमारी थीं। जब वनवास के दौरान अर्जुन मणिपुर पहुंचे, तो उनको चित्रांगदा से प्रेम हो गया और उन्होंने राजा चित्रवाहन से उनकी बेटी के साथ विवाह का प्रस्ताव रखा। राजा चित्रवाहन ने इस शर्त पर विवाह स्वीकार किया कि उनकी बेटी का पुत्र ही आगे चलकर मणिपुर का उत्तराधिकारी होगा और अर्जुन सदैव उनके साथ रहेंगे। इस तरह से राजा चित्रवाहन और उनकी पत्नी थी, वह आगे चलकर अर्जुन के सास-ससुर बने। हालांकि महाभारत में इनका जिक्र काफी कम मिलता है।

जीवन संघर्षों से बनता है। संघर्ष ही हमारी रीढ़ को मजबूत करते हैं। अन्यथा हम जीवन को समझ ही नहीं पायेंगें।

पहले परिवार बड़ा और बच्चे ज्यादा होने के कारण, बहुत सी समस्याओं से बच्चे स्वयं सीखते/समझते थे। लेकिन आजकल एक या दो बच्चे होने के कारण, माता-पिता बच्चों को एक-एक कदम पर इतनी सहायता/सहयोग/आराम देतें हैं कि बच्चे कमजोर रह जातें हैं। उनका शारीरिक और मानसिक विकास भी नहीं हो पाता है। सोने का चम्मच लेकर पैदा हुए बच्चे, जरा सी चोट/खरोंज से ही उधड़/बिखर जातें हैं। इसलिए जीवन के छोटे-बड़े संघर्षों से उबरने की शक्ति/साहस, बचपन से ही मजबूत बनाता है। वह जीतेगा या हम उसे जिताएंगे तो, उसे यह कभी पता ही नहीं चलेगा कि जीवन में असफलता भी मिलती है और भगवान ना करें बड़ा होने पर उसे कोई असफलता मिलती है तो वह उसका सामना ही ना कर पाएं और हिम्मत हार जाएं। हारे हुए ऐसे व्यक्तित्व में ही आत्महत्या की भावना प्रबल होतीं हैं। ध्यान रहे कि आत्महत्या किसी भी हालत में समस्या के समाधान हेतु कोई विकल्प नहीं है। हर रात के बाद एक नई सुबह होती है, हर सुख के बाद दु:ख और दु:ख के बाद सुख हमेशा आता-जाता रहता है। इसलिए धैर्य रखें और अस्तित्व पर विश्वास बनाए रखें।

कड़वे स्वाद के कारण करेला खाने में मुंह बनाते हैं बच्चे? एक बार जरूर ट्राई करें ये रेसिपी

सेहतमंद रहने के लिए करेला चिप्स एक स्वादिष्ट और आसान विकल्प है। इसे बनाने के लिए करेले को पतला काटकर नमक लगाकर कड़वाहट निकालना होता है। इसके बाद कुछ मसालों को मिलाकर करेला चिप्स बनाना होता है। ये दाल चावल के साथ परोसने के लिए परफेक्ट है। इसे बच्चे भी बड़े चाव के साथ खाते हैं।

लाइफस्टाइल डेस्क, नई दिल्ली। सेहतमंद रहने के लिए हेल्दी डाइट लेना जरूरी होता है। इसके लिए हमें हरी सब्जियों और मौसमी फलों को डाइट में शामिल करने की सलाह दी जाती है। वैसे तो हरी सब्जियां सेहत के लिए बेहद फायदेमंद मानी जाती हैं, लेकिन ज्यादातर लोग इन्हें खाने में मुंह बनाते हैं। खासकर बच्चों को। करेले की बात करें तो ये हर किसी को पसंद नहीं आता है। दरअसल, इसका स्वाद कड़वा होता है, इस कारण हर कोई इसे नहीं खा पाता है।

लेकिन क्या हो अगर करेला से एक ऐसी रेसिपी बनाई जाए जो न सिर्फ स्वाद फिट हो, बल्कि कुरकुरी भी हो? जी हां, करेला चिप्स एक ऐसा हेल्दी और स्वादिष्ट ऑप्शन है, जिसको आप एक स्नैक्स की तरह भी खा सकते हैं। इसे बनाने में आपको ज्यादा मेहनत भी नहीं लगेगी। इसकी खास बात तो ये है इसमें ज्यादा तेल भी नहीं सोखता है। ऐसे में आप इसे एक बार तो ट्राई कर ही सकते हैं।

यकीन मानिए आप सभी को इसका स्वाद जरूर पसंद आएगा। आज का हमारा लेख भी इसी विषय पर है। हम आपको करेला चिप्स की आसान रेसिपी बताने जा रहे हैं। इसे खाकर आपको वाकई मजा आएगा। आइए इसकी रेसिपी के बारे में जानते हैं विस्तार से -

करेला चिप्स बनाने के लिए जरूरी सामग्री

करेला 4 मध्यम आकार के

बेसन तीन बड़े चम्मच

चावल का आटा दो बड़े चम्मच क्रिस्पनेस के लिए

हल्दी आधी छोटी चम्मच

लाल मिर्च पाउडर एक छोटा चम्मच

अमचूर पाउडर आधा छोटा चम्मच

नमक स्वादानुसार

तेल तलने के लिए

करेला चिप्स बनाने की विधि

सबसे पहले करेले को धोकर पतले-पतले गोल आकार में काट लें।

ध्यान रहे कि काटते समय बीजों को निकाल लें।

अब कटे हुए करेले में थोड़ा सा नमक लगाकर 15 से 20 मिनट के लिए रख दें। इसके बाद हाथ से दबाकर इसका पानी निकाल दें।

इससे करेले की कड़वाहट निकल जाएगी।

अब एक कटोरे में करेले में बेसन, चावल का आटा, हल्दी, लाल मिर्च, अमचूर और थोड़ा सा नमक मिलाएं।

अब थोड़ा-थोड़ा पानी डालते हुए मसालों को अच्छे से कोट करें।

ध्यान रहे कि पानी ज्यादा न हो।

अब एक कड़ाही में तेल गर्म करें।

इसके बाद मीडियम आंच पर करेला स्लाइस को क्रिस्पी होने तक तल लें।

एक बार में ज्यादा चिप्स न डालें, वरना क्रिस्पी नहीं बनेंगे।

आपका करेला चिप्स बनकर तैयार हो गया है। आप इसे दाल चावल के साथ परोस सकती हैं।

अपना भला, अपनों का भला और जग का भला यह तीनों स्थितियाँ मानव मन की विकास यात्रा को दर्शाती हैं — स्वार्थ से परमार्थ तक की यात्रा। आइए इन्हें एक-एक कर विवेचित करें:

1. जो केवल अपना भला चाहते हैं: (स्वार्थ केंद्रित अवस्था)

यह स्थिति मनुष्य की प्रारंभिक मानसिक अवस्था को दर्शाती है। इसमें व्यक्ति का ध्यान मुख्यतः अपनी सुख-सुविधा, सुरक्षा और सफलता पर रहता है।

यह अवस्था आवश्यक भी होती है क्योंकि जीवन का आरंभ आत्मरक्षा और आत्मविकास से ही होता है।

परंतु यदि व्यक्ति केवल अपने भले तक सीमित रह जाए, तो वह स्वार्थी या अहंकारी भी हो सकता है।

इसका दायरा सीमित होता है और आत्मकेन्द्रित जीवन अंततः अकेलापन या असंतोष भी दे सकता है।

2. जो अपनों का भला चाहते हैं: (सामाजिक/संकीर्ण परमार्थ की अवस्था)

यह स्थिति पहले से उन्नत है। इसमें व्यक्ति अपने परिवार, मित्रों, जाति, धर्म, देश आदि के कल्याण की भावना रखता है।

इसमें अपनत्व जुड़ता है, और सेवा, त्याग जैसे गुण उभरते हैं।

यह अवस्था समाज के निर्माण और संरचना के लिए अत्यंत आवश्यक है।

परंतु यह भी सीमित परमार्थ है, क्योंकि ₹अपनों₹ की परिभाषा प्रायः सीमित ही होती है। इसमें ₹पराए₹ अभी भी बाहर ही रहते हैं।

3. जो सबका भला चाहते हैं: (विराट परमार्थ/अहं-शून्यता की अवस्था)

यह अवस्था आध्यात्मिक उन्नयन की चरम अवस्था मानी जाती है।

इसमें व्यक्ति की दृष्टि संकीर्ण नहीं, वसुधैव कुटुम्बकम्‌ की हो जाती है।

यह अवस्था आत्मा के अनुभव से आती है, जब व्यक्ति सबको एक ही आत्मा का अंश मानने लगता है।

ऐसे व्यक्ति में न स्वार्थ रहता है, न पक्षपात — केवल करुणा, प्रेम और सेवा भाव।

यह स्थिति संतों, महापुरुषों, और ईश्वरावतारों में पाई जाती है, जो किसी विशेष के लिए नहीं, समस्त जगत के लिए कार्य करते हैं

यह तीनों अवस्थाएं एक क्रमशः उन्नत होती हुई चेतना की अवस्था को दर्शाती हैं:

स्व-हित → स्वजन-हित → सर्व-हित।

मनुष्य की यात्रा इन अवस्थाओं से होकर ही पूर्णता की ओर बढ़ती है।

जहाँ पहली दो अवस्थाएं मानव स्वभाव के अंग हैं, वहीं तीसरी अवस्था मानव धर्म का सार है।

लड़कियों की शर्ट में लेफ्ट साइड ही क्यों होते हैं बटन? जानिए

फैशन की दुनिया में हर चीज का कोई न कोई मतलब जरूर होता है। फिर चाहे वो कपड़ों का डिजाइन हो या फिर बटन का साइड ही क्यों न हो। लड़कों के मुकाबले, लड़कियों के आउटफिट्स ज्यादा होते हैं। लेकिन क्या आपने कभी गौर किया है कि लड़कियों की शर्ट्स या कुर्तों में बटन हमेशा लेफ्ट साइड ही होते हैं, जबकि लड़कों के कपड़ों में ये राइट साइड होते हैं।

हालांकि, ये कोई नया ट्रेंड नहीं, बल्कि सदियों से ऐसा होता आ रहा है। मॉडर्न फैशन भले ही बदल गया हो, लेकिन कुछ क्लासिक स्टाइल आज भी वैसी की वैसी ही बनी हुई हैं। आपको बता दें कि बटन का साइड सिर्फ पहनावे का हिस्सा नहीं, बल्कि इसके पीछे इतिहास, सुविधा और सामाजिक परंपराएं भी छिपी हैं। ये छोटी-सी बात फैशन की बड़ी कहानियों का हिस्सा बन चुकी है। आज का हमारा लेख भी इसी विषय पर है।

हम आपको बताएंगे कि आखिर क्यों फैशन की दुनिया में लड़कियों की शर्ट के बटन को लेफ्ट साइड ही रखा जाता है। इसकी शुरुआत कैसे और कब हुई, इसके बारे में भी जानेंगे। तो आइए बिना देर किए जानते हैं विस्तार से-

बताया जाता है कि 13वीं शताब्दी में शर्ट वो लोग ही पहन पाते थे जिनके पास पैसों की कोई कमी नहीं होती थी। बड़-बड़े घरों में महिलाओं या लड़कियों को कपड़े पहनाने के लिए दासियां या नौकरानियां हुआ करतीं थीं। जो उन्हें कपड़े पहनाने का काम करती थीं। ऐसे में बटन को इसलिए लेफ्ट साइड लगाया जाता था जिससे उन्हें कोई दूसरा आसानी से बंद कर सके। तभी से ये ट्रेंड आज के समय में भी फैशन की दुनिया का हिस्सा है।

वहीं, लड़कों की बात करें तो वे अपने शर्ट खुद ही पहनते थे, उन्हें खुद ही बटन बंद करना होता था। इस कारण उनके शर्ट में बटन को राइट साइड यानी कि दाईं ओर लगाया जाता था। इससे उन्हें बटन को बंद करने में सहूलियत होती थी।

स्तनपान कराने में होती है आसानी

ऐसा भी माना जाता है कि महिलाएं अपने बच्चे को दूध पिलाने के लिए लेफ्ट साइड ही पकड़ती हैं। इसके लिए उन्हें शर्ट के बटन खोलने के लिए अपने राइट हैंड यानी कि दाएं हाथ का इस्तेमाल करना पड़ता है। ये भी एक कारण है महिलाओं की शर्ट के बटन को लेफ्ट साइड लगाया जाता है।

रोज सुबह खाली पेट पीकर देखें यह मैजिकल वॉटर, तेजी से कम होने लगेगी बाहर निकली हुई तोंद

क्या आप भी अपनी बढ़ती हुई तोंद से परेशान हैं? लाख कोशिशों के बाद भी क्या पेट की चर्बी कम होने का नाम नहीं ले रही? अगर हां तो यह आर्टिकल आपके लिए ही है। आज हम आपके लिए लेकर आए हैं एक ऐसा मैजिकल वॉटर जिसे रोज सुबह खाली पेट पीने से आपकी तोंद तेजी से अंदर जाने लगेगी।

क्या सुबह उठते ही सबसे पहले नजर अपनी बढ़ती हुई तोंद पर जाती है? क्या अलमारी में रखे आपके पसंदीदा कपड़े अब फिट नहीं होते और हर बार शीशे के सामने खड़े होकर एक गहरी आह निकलती है? अगर इन सवालों का जवाब 'हां' है, तो आप अकेले नहीं हैं।

दरअसल, इसका हल आपकी रसोई में ही मौजूद है। जी हां, एक ऐसा जादुई पानी जो न केवल आपकी तोंद को तेजी से कम करेगा, बल्कि आपको अंदर से तरोताजा और हल्का महसूस कराएगा? आइए जानते हैं इस 'मैजिकल वॉटर' के बारे में, जो दिला सकता है आपको बेली फैट से छुटकारा।

कौन-सा है यह मैजिकल वॉटर?

हम बात कर रहे हैं, पुदीने के पानी की! जी हां, वही पुदीना जो हमारी चटनी का स्वाद बढ़ाता है और शरबत में ताजगी भरता है। पुदीना सिर्फ स्वाद ही नहीं, बल्कि सेहत का खजाना भी है, खासकर पेट की चर्बी कम करने के लिए।

डाइजेशन को बेहतर बनाएः पुदीना आपके पाचन तंत्र को मजबूत करता है। जब आपका पाचन सही होता है, तो खाना ठीक से पचता है और शरीर में चर्बी जमा नहीं होती।

मेटाबॉलिज्म बढ़ाएः मेटाबॉलिज्म वह प्रक्रिया है जिससे आपका शरीर भोजन को एनर्जी में बदलता है। पुदीना मेटाबॉलिज्म को तेज करता है, जिससे आपका शरीर ज्यादा कैलोरी बर्न करता है।

पेट की सूजन कम करेः कई बार पेट की चर्बी केवल चर्बी नहीं होती, बल्कि गैस और सूजन के कारण भी पेट फूला हुआ लगता है। पुदीना पेट की सूजन को कम करने में बहुत प्रभावी है।

टॉक्सिन्स को बाहर निकालेः यह शरीर से हानिकारक टॉक्सिन्स (विषैले पदार्थों) को बाहर निकालने में मदद करता है, जिससे आपका शरीर अंदर से साफ और स्वस्थ रहता है।

भूख कम करेः पुदीने की खुशबू और स्वाद भूख को कंट्रोल करने में मदद कर सकते हैं, जिससे आप बेवजह ज्यादा खाने से बचते हैं।

कैसे बनाएं यह मैजिकल वॉटर?

सामग्रीः

ताजे पुदीने के पत्ते (लगभग 10-15 पत्तियां)

एक गिलास पानी

आधा नींबू का रस (ऑप्शनल)

एक चुटकी काला नमक (ऑप्शनल)

बनाने की विधिः

सबसे पहले, पुदीने के पत्तों को अच्छे से धो लें।

एक गिलास पानी में पुदीने के पत्तों को रात भर भिगो कर रख दें।

आप सुबह भी पत्तों को पानी में डालकर हल्का सा मसल सकते हैं।

सुबह इस पानी को छान लें। आप चाहें तो इसमें आधा नींबू का रस और एक चुटकी काला नमक मिला सकते हैं, इससे स्वाद और फायदे दोनों बढ़ेंगे।

कब और कैसे पिएं?

रोजाना सुबह खाली पेट इस पुदीने के पानी का सेवन करें। इसे पीने के बाद कम से कम 30-45 मिनट तक कुछ और न खाएं-पिएं ताकि यह अपना काम ठीक से कर सके।

इन बातों का भी रखें ध्यान

इस पानी को रोज पीना होगा। एक या दो दिन पीने से फर्क नहीं दिखेगा।

सिर्फ पुदीने का पानी पीने से सब नहीं होगा। आपको अपने खाने-पीने की आदतों में भी सुधार लाना होगा। इसलिए, जंक फूड, मीठा और ऑयली खाने से बचें।

अगर आप पेट की चर्बी तेजी से कम करना चाहते हैं, तो पुदीने के पानी के साथ-साथ हल्की-फुल्की कसरत, जैसे पैदल चलना, योग या पेट की एक्सरसाइज जरूर करें।

दिल्ली में पुलिस की बड़ी कार्रवाई, अशोक विहार से 18 बांग्लादेशी गिरफ्तार; आईएमओ ऐप का करते थे इस्तेमाल!

दिल्ली के अशोक विहार में पुलिस ने 18 अवैध बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया है जिनमें 5 ट्रांसजेंडर शामिल हैं। वे प्रतिबंधित IMO ऐप के माध्यम से अपने परिवारों से संपर्क करते थे। पुलिस उपायुक्त भीष्म सिंह ने बताया कि यह गिरफ्तारी अवैध प्रवासियों के खिलाफ चलाए जा रहे एक विशेष अभियान का हिस्सा है। आगे की जांच जारी है।

दिल्ली। अशोक विहार क्षेत्र में अवैध रूप से रह रहे 18 बांग्लादेशियों को उत्तर-पश्चिमी जिला विदेशी सेल ने पकड़ा है। जिनमें पांच ट्रांसजेंडर भी शामिल हैं। पुलिस जांच में पता चला कि आरोपित बांग्लादेश स्थित अपने स्वजनों से संपर्क करने के लिए प्रतिबंधित आईएमओ ऐप का इस्तेमाल करते हैं। इनके पास सात स्मार्ट मोबाइल फोन बरामद किए गए हैं।

उत्तर-पश्चिमी जिला पुलिस उपायुक्त भीष्म सिंह ने बताया कि जिले में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है। टीम ने अशोक विहार में घेराबंदी कर करीब 100 झुग्गियों और 150 गलियों की गहन जांच की। इसी दौरान एक संदिग्ध व्यक्ति को पकड़कर पूछताछ की गई।

खुद को बांग्लादेशी नागरिक स्वीकार किया

पहले उसने पुलिस को गुमराह करने की कोशिश की। बाद में उसने खुद को बांग्लादेशी नागरिक स्वीकार किया। उससे मिली जानकारी के आधार पर उसके परिवार के अन्य सदस्यों को भी गिरफ्तार किया गया। इस दौरान पुलिस ने पाया कि 13 वयस्क और 3 बच्चे अवैध रूप से बिना वैध दस्तावेजों के भारत में रह रहे हैं। सभी ने पुलिस को पकड़ लिया।

पुलिस ने पांच ट्रांसजेंडर को पकड़ा

वहीं, अन्य जगह पर छापेमारी के दौरान पुलिस ने पांच ट्रांसजेंडर को पकड़ा। पूछताछ में खुलासा हुआ कि उन्होंने पहचान छुपाने के लिए हार्मोनल उपचार व छोटी सर्जरी भी करवाई थी। इन सभी व्यक्तियों को विदेशी सेल लाया गया, जहां विस्तृत पूछताछ के दौरान इनके पास से सात मोबाइल फोन बरामद हुए। जिनमें प्रतिबंधित आईएमओ ऐप इंस्टाल थे।

बांग्लादेशियों को पकड़ने के लिए अभियान जारी

आरोपितों की पहचान हाकिम, मलिका, सुहैल, जुबेद, महबूब, अकबर, मंजूरा, मरियम, सिपुली, आलम, जेना शहजान, शान मोहम्मद, मोहम्मद अंतर, मोहम्मद राहुल, रिया, अल्वी और कौसर के रूप में हुई है। पुलिस अधिकारी का कहना है कि क्षेत्र में बांग्लादेशियों को पकड़ने के लिए अभियान जारी है।

वहीं, अन्य जगह पर छापेमारी के दौरान पुलिस ने पांच ट्रांसजेंडर को पकड़ा। पूछताछ में खुलासा हुआ कि उन्होंने पहचान छुपाने के लिए हार्मोनल उपचार व छोटी सर्जरी भी करवाई थी। इन सभी व्यक्तियों को विदेशी सेल लाया गया, जहां विस्तृत पूछताछ के दौरान इनके पास से सात मोबाइल फोन बरामद हुए। जिनमें प्रतिबंधित आईएमओ ऐप इंस्टाल थे।

बांग्लादेशियों को पकड़ने के लिए अभियान जारी

आरोपितों की पहचान हाकिम, मलिका, सुहैल, जुबेद, महबूब, अकबर, मंजूरा, मरियम, सिपुली, आलम, जेना शहजान, शान मोहम्मद, मोहम्मद अंतर, मोहम्मद राहुल, रिया, अल्वी और कौसर के रूप में हुई है। पुलिस अधिकारी का कहना है कि क्षेत्र में बांग्लादेशियों को पकड़ने के लिए अभियान जारी है।

इस मामले की तेजी से सघन जांच की जाए ताकि हत्या के वास्तविक कारण का पता चल सके : भाजपा

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा एवं केंद्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने गीता कॉलोनी के 21 वर्षीय युवक यश की हत्या पर शोक व्यक्त किया है और दिल्ली पुलिस से आग्रह किया है कि इस मामले को रोड़ रेज मामले तक सीमित ना समझें, इस मामले की तेजी से सघन जांच की जाए ताकि हत्या के वास्तविक कारण का पता चल सके क्योंकि मृतक के परिजनों ने कुछ संदेह प्रकट किया है।

केंद्रीय राज्य मंत्री एवं पूर्वी दिल्ली के सांसद हर्ष मल्होत्रा ने आज दोपहर स्थानीय विधायक डॉ. अनिल गोयल के साथ रानी गार्डन स्थित मृतक के परिजनों के घर जाकर शोक संतप्त माता-पिता से मुलाकात की और उन्हें ढांढस बंधाया।

सांसद ने परिजनों को आश्वस्त किया कि दिल्ली पुलिस इस मामले की पूरी गहनता से जांच करेगी और एक मजबूत एवं पुख्ता केस तैयार किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि आवश्यकता पड़ने पर दिल्ली सरकार की ओर से आरोपियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई के लिए सर्वोत्तम विधिक सहायता प्रदान की जाएगी।

उन्होंने कहा कि पूर्वी दिल्ली भाजपा पीडित परिवार के साथ खड़ी है और किसी भी प्रकार की सहायता के लिए परिवार स्थानीय विधायक डॉ. अनिल गोयल या शाहदरा जिला अध्यक्ष दीपक गाबा से संपर्क कर सकता है।

शाम को युवक यश के अंतिम संस्कार में शाहदरा जिला भाजपा अध्यक्ष श्री दीपक गाबा एवं अन्य स्थानीय पदाधिकारी सम्मिलित हुए।

सफदरजंग अस्पताल में एंटी-ग्रेविटी ट्रेडमिल का हुआ उद्घाटन

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर, वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल में एंटी-ग्रेविटी ट्रेडमिल का उद्घाटन स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर, वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल ने अत्याधुनिक एंटी-ग्रेविटी ट्रेडमिल के उद्घाटन के साथ उन्नत पुनर्वास सेवाओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर स्थापित किया। इस सुविधा का औपचारिक उद्घाटन भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव सुश्री रोली सिंह ने किया।

इस कार्यक्रम में सफदरजंग अस्पताल के निदेशक डॉ. संदीप बंसल और सफदरजंग अस्पताल की चिकित्सा अधीक्षक डॉ. चारू भांबा के साथ-साथ चिकित्सा और प्रशासनिक बिरादरी के संकाय, कर्मचारी और गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। अपने स्वागत भाषण में, स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर के निदेशक डॉ. दीपक जोशी ने रोगी देखभाल को बेहतर बनाने के लिए अत्याधुनिक तकनीक को शामिल करने पर केंद्र के निरंतर जोर पर प्रकाश डाला, विशेष रूप से आर्थोपेडिक्स, पुनर्वास और खेल चिकित्सा के क्षेत्रों में।

एंटी-ग्रेविटी ट्रेडमिल एक क्रांतिकारी पुनर्वास उपकरण है जो चलने या दौड़ने के दौरान रोगी के प्रभावी शरीर के वजन को 80% तक कम करने के लिए अंतर वायु दबाव तकनीक का उपयोग करता है। यह निम्नलिखित के लिए अनुमति देता है:

x जोड़ों पर कम तनाव के साथ पोस्ट-ऑपरेटिव रोगियों की शीघ्र गतिशीलता,

x निचले अंग की चोटों वाले व्यक्तियों के लिए दर्द रहित रिकवरी,

x न्यूरोलॉजिकल स्थितियों के लिए बेहतर पुनर्वास

x सटीक चाल प्रशिक्षण और मांसपेशियों की कंडीशनिंग के साथ बेहतर एथलेटिक प्रदर्शन।

इस उन्नत उपकरण की स्थापना से पोस्ट-ऑपरेटिव आर्थोपेडिक मामलों, खेल चोटों और न्यूरोरिहैबिलिटेशन से गुजरने वाले रोगियों सहित कई प्रकार के रोगियों को लाभ होगा, जिससे गतिशीलता में तेजी से और सुरक्षित वापसी संभव होगी।

यह उद्घाटन भारत में रोगी-केंद्रित, प्रौद्योगिकी-संचालित स्वास्थ्य सेवा वितरण में सबसे आगे रहने के स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर के दृष्टिकोण की दिशा में एक और कदम है।

गरीबों की झुग्गियां बचाने के लिए बीजेपी की तानाशाही के खिलाफ 'आप' का विशाल प्रदर्शन रविवार को- सौरभ भारद्वाज

सुषमा रानी

नई दिल्ली। गरीब विरोधी बीजेपी सरकार द्वारा दिल्ली में गरीबों की झुग्गियां तोड़ने के खिलाफ आम आदमी पार्टी रविवार को विशाल प्रदर्शन करेगी। दिल्ली के जंतर मंतर पर सुबह 10 बजे होने वाले इस प्रदर्शन में आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल, वरिष्ठ नेता व पंजाब प्रभारी मनीष सिसोदिया, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज समेत तमाम बड़े नेता शामिल होंगे और गरीबों की झुग्गियां बचाने के लिए उनकी आवाज बुलंद करेंगे। ₹आप₹ द्वारा विशाल प्रदर्शन के मद्देनजर झुग्गी संवाद अभियान चलाया गया था, जिसे झुग्गीवालों का जबरदस्त समर्थन मिला है। अब रविवार को पूरी दिल्ली से बड़ी तादात में झुग्गीवाले प्रदर्शन में शामिल होंगे और 'जहां झुग्गी वहां मकान' देने का वादा पूरा होने के बाद ही झुग्गियां तोड़ने की पुरजोर मांग उठाएंगे।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत बीजेपी के तमाम बड़े नेताओं ने गरीब झुग्गीवालों से वादा किया था कि जहां झुग्गी है, वहां मकान बनाकर देंगे। बीजेपी के झांसे में आकर गरीबों ने वोट देकर उनकी सरकार बनवा दी। सरकार बनने के चंद दिनों बाद ही बीजेपी इन गरीबों की झुग्गियां उजड़ना शुरू कर दिया है। अब तक करीब 10 हजार झुग्गियां तोड़ी जा चुकी हैं और एक लाख से अधिक गरीब झुग्गीवाले बेघर हो चुके हैं। इनके पास रहने का कोई ठिकाना नहीं है। बीजेपी ने जिन लोगों को मकान दिया भी तो वह काफी दूर दिया है, जहां कोई बुनियादी सुविधा नहीं है। जबकि काफी लोगों को अपात्र बताकर मकान नहीं दिया गया है और ये लोग सड़क पर रहने क लिए मजबूर हैं।

उन्होंने कहा कि बीजेपी गरीब विरोधी है। वह दिल्ली से गरीबों को बाहर निकालना चाहती है। इसलिए वह एक-एक झुग्गियों को उजाड़ रही है। आने वाले दिनों में दिल्ली की कई और झुग्गियों पर बुलडोजर एक्शन होने वाला है। ऐसे में सभी झुग्गीवालों को एकजुट होकर अपनी आवाज उठानी जरूरी है। आम आदमी पार्टी हमेशा इन गरीब झुग्गीवालों के साथ खड़ी रही है। अरविंद केजरीवाल ने झुग्गी बस्तियों में सारी बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराकर उन्हें सम्मान की जिंदगी दी थी, लेकिन बीजेपी की सरकार उन्हें उजाड़ने पर तुली हुई है।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि बीजेपी की इस तानाशाही रवैए को लेकर पूरी दिल्ली के गरीबों में भारी आक्रोश है और ये लोग अपनी आवाज बुलंद करने के लिए तैयार हैं। ₹आप₹ द्वारा चलाए गए झुग्गी संवाद को जिस तरह झुग्गीवालों का जबरदस्त समर्थन मिला है, इससे साफ है कि रविवार को होने वाले आम आदमी पार्टी के विशाल प्रदर्शन को भारी समर्थन मिलेगा। प्रदर्शन में पूरी दिल्ली की जनता शामिल होंगी। आम आदमी पार्टी सबसे अपील करती है कि बीजेपी की तानाशाही और गरीबों पर हो रहे बुलडोज़र एक्शन के ख़िलाफ़ एकजुट होकर आवाज़ उठाएं और ग़रीब विरोधी बीजेपी सरकार को होश में लाएं। ग़रीबों को बचाने के लिए जनता और आम आदमी पार्टी के आंदोलन में हिस्सा लें और अपनी आवाज़ को बुलंद करें।

बच्चे को 14.50 करोड़ रुपए का इंजेक्शन लगना है और पैरेंट्स इतनी मोटी रकम जुटाने में असमर्थ हैं - संजय सिंह

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने स्पाइनल मस्कुलर एट्रॉफी (एसएमए) टाइप वन नामक जानलेवा बीमारी से पीड़ित 8 माह के बच्चे के इलाज में मदद के लिए अपनी सैलरी से 51 हजार रुपए की मदद देने की घोषणा की है। साथ ही, देश के प्रधानमंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, सभी राजनेताओं, स्वयंसेवी संस्थाओं समेत आम जनता से भी अपनी क्षमता के अनुसार मदद करने की अपील की है। संजय सिंह ने बताया कि हरियाणा पुलिस में सेवा दे रहे राजेश कुमार के बेटे युवांश की जान बचाने के लिए 14.50 करोड़ रुपए का इंजेक्शन लगना है। अगर यह इंजेक्शन नहीं लगा तो उसकी जान को खतरा है। यह चंदा इंपैक्ट गुरु के जरिए इकट्ठा किया जा रहा है। कोई भी व्यक्ति यहां जाकर सहयोग राशि दे सकता है।

शनिवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेस वार्ता कर संजय सिंह ने कहा कि हरियाणा के रहने वाले मासूम बच्चे का नाम युवांश है और इसकी उम्र आठ महीने है। डॉक्टरों ने बताया है कि बच्चे को स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी (एसएमए) टाइप वन नामक अत्यंत गंभीर बीमारी है। इस बीमारी से ठीक होने के लिए 14 करोड़ रुपए का इंजेक्शन लगता है। इस बारे में मैंने संसद में भी सवाल उठाया था। ऐसे किसी भी बच्चे का जीवन बचाने का काम उसके परिवार के लिए संभव नहीं है। परिवार अपनी पत्नी के गहने, कुछ जमीनें या अपना घर बेच सकता है, लेकिन फिर भी 14 करोड़ रुपये की धनराशि इकट्ठा नहीं कर सकता। ऐसे मामलों में देश के लोगों को खड़ा होना पड़ेगा। अपनी जीवन की जरूरतों में से एक रुपये, हजार रुपये, लाख रुपये निकालकर अपनी क्षमता के अनुसार बच्चे का सहयोग करने के लिए आगे आना पड़ेगा।

संजय सिंह ने कहा कि बच्चे के पिता राजेश कुमार हरियाणा पुलिस के जवान हैं। मैं हरियाणा पुलिस को भी धन्यवाद देना चाहता हूं। हरियाणा के डीजीपी ने हर पुलिसकर्मी से एक-एक दिन की सैलरी बच्चे को देने के लिए अपील की है। यह बहुत अच्छी पहल है। इसी तरह, अन्य राज्यों के पुलिसकर्मियों से भी मदद करें। यह उनके एक भाई से जुड़ा हुआ मामला है। साथ ही, सभी सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं, राजनेताओं, प्रधानमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री से विनती करता हूं कि इस बच्चे का जीवन बचाने के लिए इसका सहयोग कीजिए। मीडिया से अपील है कि इस मामले को प्रमुखता से दिखाए ताकि लोगों को जानकारी मिल सके और वो मदद के लिए आगे आ सके।

संजय सिंह ने कहा कि इस बच्चे के पास समय बहुत कम है। डॉक्टरों ने बताया है कि अगर इसको इंजेक्शन नहीं लगा, तो ढाई साल से ज्यादा इसका जीवन नहीं है। इसलिए मैं सभी से हाथ जोड़कर फिर से विनती करता हूं कि इसके लिए अपनी ओर से सहयोग कीजिए। यह चंदा इंपैक्ट गुरु के माध्यम से इकट्ठा किया जा रहा है। इसके लिए क्यूआर कोड भी है, जिसमें कोई भी व्यक्ति जाकर अपनी सहयोग राशि दे सकता है। बैंकों की सारी जानकारी भी मौजूद है। अगर जल्दी बच्चे को इंजेक्शन नहीं लगा, तो इसकी जान जा सकती है। 30 जून को मेरी सैलरी आ जाएगी, तो मैं 51,000 रुपये की छोटी सी सहयोग राशि इस बच्चे के लिए दूंगा। देशवासियों से भी विनती है कि वह इसकी मदद कीजिए।

वहीं, युवांश के पिता राजेश ने कहा कि मैं देशवासियों से यही कहना चाहूंगा कि ज्यादा से ज्यादा मेरा सहयोग करें, ताकि लोगों के सहयोग से मेरे बच्चे का जीवन बच सके और एक नई उमंग के साथ यह अपना जीवन यापन कर सके। युवांश की मां ने भी अपील की कि मेरे बच्चे का जीवन बचाने के लिए ज्यादा से ज्यादा सहयोग करें।

दिल्ली महिला मोर्चा द्वारा आयोजित मॉक पार्लियामेंट को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता एवं सांसद बांसुरी स्वराज ने किया

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली, : दिल्ली भाजपा महिला मोर्चा द्वारा आज महाराष्ट्र सदन में कांग्रेस द्वारा लगाये गए आपातकाल के काले अध्याय के 50 साल पूरे होने पर मॉक पार्लियामेंट का आयोजन किया गया जिसको दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज ने सम्बोधित किया।

दिल्ली भाजपा महिला मोर्चा अध्यक्ष ऋचा पांडे मिश्रा की उपस्थिति में हुए मॉक पार्लियामेंट सैशन में मोर्चा महामंत्री प्रियल भारद्वाज, सरिता तोमर एवं वैशाली पोद्दार सहित सैकड़ों की संख्या में महिलाएं उपस्थित थीं।

ऋचा पांडेय मिश्रा ने अपने उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए काला दिवस के रुप में आपातकाल को याद किया और कहा कि आपातकाल लगा कर संविधान एवं लोकतंत्र की हत्या करने वाली कांग्रेस द्वारा आज संविधान रक्षा और भारत जोड़ों की बात करना शोभा नहीं देता।

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि इस मॉक पार्लियामेंट के माध्यम से जो संदेश दिल्ली की महिलाओं को दिया जा रहा है वह अपने आप में महिला सशक्तिकरण का उदाहरण है। कांग्रेस के वक्त एक समय था जब अगर कोई सरकार के खिलाफ आवाज उठाता तो ना कोई अपील ना कोई दलील और ना ही कोई कानून, उसे जेल में बंद कर दिया जाता था और फिर भय का वातावरण बना पूरा देश को ही एक तरह की जेल बना दिया गया।

सीएम रेखा गुप्ता ने कहा कि उन लोगों के नाम तय पहले से थे जो देशहित में बोल सकते थे इसलिए लाखो लोगों को रातों रात जेल भेज दिया गया। अखबारों पर बैन लगा दिया गया। मीडिया हाऊस में ताले लगा दिए गए, कोई कानून नहीं और सब कुछ श्रीमती इंदिरा गांधी के कहने पर हो रहा था। कोई आवाज उठाता था उसको जेल में बंद कर दिया गया। उन्होंने कहा कि देश ने ऐसा काला अध्याय कभी नहीं देखा। मनोज कुमार जैसे हीरों पर बैन लगा दिया गया और साथ ही एक नसबंदी अभियान चलाकर लोगों में एक डर पैदा किया गया था।

सीएम रेखा गुप्ता ने कहा कि आज हमें समझने की जरुरत है कि आपातकाल को आखिर काला अध्याय क्यों कहने की जरुरत पड़ी क्योंकि यह काला अध्याय दोबारा ना दोहराना पड़े और यह संविधान हत्या दिवस के रूप में ना मनाया जाए और इस जैसा कोई आपातकाल ना लगे उसके लिए इसे बार बार याद किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि सबको इस बात की समझ होनी चाहिए कि सत्ता सरकार और प्रशासन क्या है और जो सरकार काम कर रही है उसका कर्तव्य होता है कि हर निर्णय जानता के हीत में होनी चाहिए।

सीएम रेखा गुप्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लोकसभा और विधानसभा में 33 फीसदी आरक्षण देकर एक महत्वपूर्ण फैसला लिया है जो महिलाओं को सशक्तिकरण की ओर एक ठोस कदम है। लेकिन देश में आपातकाल सिर्फ कुर्सी बचाने की कहानी थी। प्रधानमंत्री के रुप में नरेन्द्र मोदी जैसे देश को एक गार्जियन मिला है जो राजनीतिक रुप से तो बेहतर हैं ही लेकिन देशवासियों के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखते हैं और कोई देश में भूखा ना सोए उसका भी ध्यान रखते हैं।

सांसद बांसुरी स्वराज ने कहा कि देश में कानून, संविधान और लोकतंत्र की हत्या करना या उसपर अपनी मनमानी चलाने का काम कांग्रेस की सरकार ने किया। जब और जैसे चाहा संविधान में बदलाव किया और वे सभी लोग जो देशहित में बात करते थे, उन्हें जेल में डलवा दिया गया ताकि सरकार जो अपनी लोकप्रियता खो चुकी थी, उसके खिलाफ कोई आवाज ना उठे।

सांसद बांसुरी स्वराज ने कहा कि जब देश में भूख, बेरोजगारी और असंतोष अपने चरम पर था तब सिर्फ सत्ता की लालसा में 25 जून की रात को इंदिरा गांधी ने रेडियो पर आपातकाल लागू करने की घोषणा कर दी। यह निर्णय लोकतंत्र को कुचलने वाला, संविधान को अनदेखा करने वाला और नागरिक अधिकारों का गाला घोंटने वाला था। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 33 फीसदी आरक्षण का परिणाम अगले लोकसभा में हमें देखने को मिलेगा क्योंकि यह आखिरी लोकसभा है जिसमें महिलाओं की संख्या कम है लेकिन आने वाले लोकसभा में महिलाओं की संख्या एवं आवाज पुरूषों को टक्कर देगी।

वैश्विक स्पेस एक्सप्लोरेशन में बड़ा कदम है-मिशन एक्सिओम-4

अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत निरंतर अपने झंडे गाड़ रहा है। उल्लेखनीय है कि हाल ही में एक्सिओम स्पेस द्वारा संचालित वाणिज्यिक मिशन एक्सिओम-4 के जरिये भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला का अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन (आईएसएस) पर पहुंचना भारत के 'नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रम' के लिए संभावनाओं का एक नया द्वार है। कितनी बड़ी बात है कि शुभांशु दुनिया के 634वें अंतरिक्ष यात्री बनें हैं।सच तो यह है कि शुभांशु शुक्ला की यह उपलब्धि भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए मील का पत्थर है। वास्तव में, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि भारत निरंतर अंतरिक्ष के क्षेत्र में अपनी तकनीकी प्रगति, मेहनत और लगन का प्रमाण पूरे विश्व को दे रहा है और भारत ने विश्व के समक्ष यह साबित कर दिया है कि भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में धीरे-धीरे सिरमौर बनने के कगार पर है। सच तो यह है कि आने वाले समय में भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक नई शक्ति बनकर उभरेगा जहां वह विश्व के अन्य देशों का नेतृत्व करता दिखेगा। पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में एक्सिओम-4 के जरिए भारत ने संपूर्ण विश्व को एक नया संदेश दिया है। गौरतलब है कि शुभांशु शुक्ला और चालक दल को लेकर एक्सिओम-4 मिशन 25 जून को कैनेडी स्पेस सेंटर से सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया। गौरतलब है कि इस मिशन में एक्सिओम स्पेस द्वारा संचालित स्पेसएक्स फाल्कन 9 रॉकेट का उपयोग किया गया है। इसरो, निजी क्षेत्र और वैश्विक सहयोग के समन्वय से भारत ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में अपनी वैज्ञानिक क्षमताओं को साबित करते हुए भारत को एक नई पहचान दिलाई है। गौरतलब है कि अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा और भारत के इसरो के बीच हुए समझौते के तहत भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला को इस मिशन के लिए चुना गया, जो अंतरिक्ष में जाने वाले दूसरे भारतीय हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो शुभांशु आइएसएस की यात्रा करने वाले पहले भारतीय है। पाठक जानते होंगे कि 41 साल पहले वर्ष 1984 में राकेश शर्मा ने तत्कालीन सोवियत संघ के यान (सोयूज) से अंतरिक्ष की यात्रा की थी। ग्रुप कैप्टन शुभांशु ने अंतरिक्ष से नमस्कार किया और इस प्रकार से उन्होंने नया इतिहास रच दिया।शुभ्रांशु अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन में कदम रखने वाले पहले भारतीय हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार अंतरिक्ष में 60 प्रयोग किए जाएंगे, जिनमें से 12 में कैप्टन शुभांशु शामिल होंगे, निश्चित ही यह भारत के लिए एक बड़ी उपलब्धि होगी। वैसे शुक्ला भारत द्वारा संचालित सात प्रयोग करेंगे, जिनमें बीज, शैवाल और सूक्ष्मगुरुत्व में मानव शरीर क्रियाविज्ञान पर कार्य शामिल है। गौरतलब है कि भारतीय अंतरिक्षयात्री ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला और तीन अन्य साथियों को लेकर रवाना हुआ अंतरिक्षयान (एक्सिओम-4) 28 घंटे के सफर के बाद 4.02 बजे आइएसएस से जुड़ा। डॉकिंग की प्रक्रिया 4.16 बजे तक पूरी हुई। आइएसएस का हैच खोलने की प्रक्रिया में पौने 2 घंटे लगे और गुरूवार 26 जून 2025 को 6 बजे चारों अंतरिक्षयात्री स्पेस स्टेशन में पहुंच गए। मीडिया रिपोर्ट्स बताती हैं कि कैप्टन शुक्ला के साथ मिशन कमांडर पेगी व्हिटसन (अमरीका), मिशन विशेषज्ञ तिबोर कापू (हंगरी) और पोलैंड के स्लावोज उज्नानस्की विज्मिव्सकी भी आइएसएस पहुंचे हैं। इन चारों एस्ट्रोनॉट के स्पेस स्टेशन पर पहुंचते ही वहां मौजूद अंतरिक्ष यात्रियों ने उनका गले लगाकर स्वागत किया और वेलकम ड्रिंक दिया। शुभांशु ने जब अंतरिक्ष से संदेश दिया कि- 'बच्चे की तरह स्टेप लेना सीख रहा हूं...' उन्होंने अपने संदेश में कहा-' नमस्ते... फ्रॉम स्पेस ! मैं अपने साथी अंतरिक्षयात्रियों के साथ यहां आकर बहुत उत्साहित हूं। सच कहूं तो, जब में कल लॉन्चपैड पर कैप्सूल में बैठा था। 30 दिन के क्वारंटाइन के बाद, मैं बस यही चाहता था कि अब चल पड़े। लेकिन जब यात्रा शुरू हुई, तो ऐसा लगा जैसे आपको सीट में पीछे धकेला जा रहा हो। यह एक अद्भुत राइड थी.. और फिर सब कुछ शांत हो गया। आपने बेल्ट खोली और आप वैक्यूम की शांति में तैर रहे थे।' कहना ग़लत नहीं होगा कि उनका यह संदेश जानकर 140 करोड़ से अधिक देशवासियों की बांछें खिल उठी। उपलब्ध जानकारी के अनुसार वे 14 दिनों तक अंतरिक्ष में रहेंगे, जैसा कि उन्होंने यह बात कही है कि, 'अगले 14 दिन विज्ञान और अनुसंधान को आगे बढ़ाने में अद्भुत होंगे।' बहरहाल, पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि राकेश शर्मा के अलावा अभी तक भारतीय मूल के अंतरिक्षयात्रियों की यदि हम बात करें तो इनमें कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स शामिल रहीं हैं। पाठकों को बताता चलूं कि कल्पना चावला अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय अमरीकी महिला (वर्ष 1997 और वर्ष 2003 में की अंतरिक्ष यात्रा) तथा सुनीता विलियम्स आइएसएस अभियान में हिस्सा लेने वाली भारतीय मूल की यात्री (वर्ष 2006, 2012 और वर्ष 2024 में यात्रा) रहीं हैं। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि एक्सिओम स्पेस द्वारा संचालित इस चौथे मिशन में भारत की भागीदारी यह दर्शाती है कि भारत अब केवल लॉन्च वाहन या सैटेलाइट निर्माण तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मानवयुक्त अंतरिक्ष अभियानों (इंटरनेशनल मेन्ड स्पेस मिशन्स) में सक्रिय भागीदार बनने की ओर भी बढ़ चुका है। पाठकों को बताता चलूं कि एक्सिओम-4 मिशन का प्राथमिक उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) पर वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन करना है। इसमें मानव स्वास्थ्य, माइक्रोग्रैविटी और जैविक प्रणालियों पर शोध, साथ ही जीवन के लिए जरूरी प्रणालियों का परीक्षण और मेडिकल स्टडी करना शामिल है। वास्तव में इस मिशन का उद्देश्य व्यवसाय और अनुसंधान के लिए प्लेटफॉर्म के रूप में कमर्शियल अंतरिक्ष स्टेशनों की व्यवहार्यता का प्रदर्शन करना भी है। इसके अलावा, एक्स-4 का उद्देश्य अंतरिक्ष अन्वेषण में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है। जैसा कि ऊपर जानकारी दे चुका हूं कि इस मिशन में कई देशों के अंतरराष्ट्रीय क्रू मेंबर शामिल किया गया है। यह कमर्शियल और वैश्विक अंतरिक्ष (स्पेस) एक्सप्लोरेशन (अन्वेषण) में एक बड़ा कदम है। इससे कमर्शियल अंतरिक्ष मिशनों और साझेदारियों को बढ़ावा मिलेगा। वास्तव में, कैप्टन शुभांशु की यह अंतरिक्षयात्रा भारत के गगनयान मिशन के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, जो संभवतयाः साल 2027 में भारत का पहला स्वदेशी मानव अंतरिक्ष मिशन (ह्यूमन स्पेस मिशन) होगा। निश्चित ही इस मिशन से देश के युवाओं और वैज्ञानिकों को नवीन प्रेरणा और प्रोत्साहन मिल सकेगा। कहना ग़लत नहीं होगा कि पृथ्वी की कक्षा में स्थित अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) में शुभांशु शुक्ला का अंतरिक्ष प्रवास ऐसी रिसर्च स्टडीज से जुड़ा है, जो पूरी मानवता के लिए उपयोगी होंगे। वास्तव में इस मिशन से अंतरिक्ष स्टार्टअप परिदृश्य को नई ऊर्जा मिल सकेगी। भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में निरंतर उत्तरोत्तर विकास और प्रगति के आयामों को छू रहा है और भारत का अपने पहले प्रयास में ही मंगल ग्रह पर पहुंचना, एक ही मिशन में सौ से ज्यादा उपग्रहों को लॉन्च करना, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला पहला देश बनना, सूर्य के अध्ययन के लिए देश का पहला ऑब्जर्वेशन मिशन आदित्य एल-1 में कामयाबी हासिल करना इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि पिछले दस सालों में करीब 400 उपग्रहों को लॉन्च करने के बाद भारत वर्ष 2035 तक अंतरिक्ष में अपने स्टेशन की स्थापना के साथ ही साथ वर्ष 2040 तक चंद्रमा पर अपना पहला अंतरिक्ष यात्री भेजने की योजना बना रहा है, यह भारत की अंतरिक्ष ऊंचाइयों को दिखाता है। इतना ही नहीं, इसरो के विभिन्न अंतरिक्ष कार्यक्रमों और अंतरिक्ष क्षेत्र में निवेश से समाज और देश को अभूतपूर्व लाभ हुए हैं।नोवास्पेस की एक रिपोर्ट से पता चलता है कि वर्ष 2014 और 2024 के बीच भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र ने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिये 60 बिलियन अमरीकी डॉलर उत्पन्न किये हैं, 4.7 मिलियन रोज़गार उत्पन्न किये और कर राजस्व में 24 बिलियन अमरीकी डॉलर का योगदान दिया है। पाठकों को बताता चलूं कि इसरो विश्व की छठी सबसे बड़ी अंतरिक्ष एजेंसी है और इसके लॉन्च मिशनों की सफलता दर बहुत अधिक रही है, यह हमारे वैज्ञानिकों की अथक मेहनत और प्रयासों का फल है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वर्ष 2024 तक भारतीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का मूल्य लगभग 6,700 करोड़ रुपए (8.4 बिलियन अमरीकी डॉलर) हो गया है, जो वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में 2%-3% का योगदान देता है, जिसके वर्ष 2025 तक 6% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि (सीएजीआर) के साथ 13 बिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुँचने की उम्मीद है। इतना ही नहीं, देश की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था के अगले कुछ वर्षों में पांच गुना बढ़कर 44 अरब डॉलर तक पहुंचने के अनुमान हैं। अंत में यही कहूंगा कि वाणिज्यिक मिशन एक्सिओम-4 निश्चित ही भारत के अंतरिक्ष महाशक्ति बनने की दिशा में एक सशक्त, शानदार कदम है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

अंतरिक्ष की नई उड़ान: एक्सिओम-4 और भारत की वैश्विक पहचान

एक्सिओम-4 मिशन भारत के अंतरिक्ष इतिहास में एक ऐतिहासिक क्षण है। वायुसेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ल की सहभागिता से यह मिशन सिर्फ तकनीकी उपलब्धि नहीं बल्कि वैश्विक मंच पर भारत की उपस्थिति का प्रतीक बन गया है। अमेरिका की एक्सिओम-4 स्पेस और नासा के सहयोग से हुआ यह अभियान भारत को मानव अंतरिक्ष यात्रा के क्षेत्र में नई ऊंचाईयों पर ले गया है। वैज्ञानिक प्रयोगों, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और रणनीतिक साझेदारी के स्तर पर यह मिशन आने वाले गगनयान और भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन की नींव मजबूत करता है।

-प्रियंका सौरभ

- प्रियंका सौरभ, कवियत्री एवं स्वतंत्र पत्रकार, हरियाणा

41 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद जब भारत का कोई प्रतिनिधि अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) की ओर रवाना हुआ, तो यह महज़ एक मिशन नहीं था, बल्कि भारत के अंतरिक्ष विज्ञान, वैश्विक कूटनीति और वैज्ञानिक प्रतिष्ठा का पुनर्जन्म था।एक्सिओम-4 मिशन में भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ल की भागीदारी ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अब अंतरिक्ष की दौड़ में सिर्फ एक सहभागी नहीं, बल्कि एक संभावित नेतृत्वकर्ता के रूप में देखा जा रहा है।

इस मिशन के माध्यम से भारत ने एक साथ कई स्तरों पर उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। सबसे पहले, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बात करें तो भारत ने इस मिशन के तहत सात प्रमुख वैज्ञानिक प्रयोग अंतरिक्ष में भेजे। ये सभी प्रयोग सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण पर आधारित थे और इनका उद्देश्य जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझना था। मेथी और मूंग जैसे बीजों पर किया गया अध्ययन भारतीय कृषि तकनीकों की विशिष्टता को अंतरिक्ष तक ले गया। इससे यह प्रमाणित होता है कि भारत की पारंपरिक खेती भी वैज्ञानिक शोध के लिए प्रासंगिक और आधुनिक है।

इसके अतिरिक्त, सूक्ष्मजीवों, माइक्रोएल्गी और मांसपेशियों के पुनरुत्पादन पर आधारित प्रयोगों ने दीर्घकालिक अंतरिक्ष यात्रा में जीवन समर्थन प्रणालियों के विकास में भारत की उपयोगिता को सिद्ध किया। इससे स्पष्ट है कि भारत केवल अंतरिक्ष में मौजूदगी दर्ज कराने नहीं बल्कि उसमें नवाचार और अनुसंधान के स्तर पर योगदान देने आया है।

शुभांशु शुक्ल का स्पेसएक्स के क्रू ड्रैगन यान को सफलतापूर्वक डॉक करना और अंतरिक्ष में आपातकालीन स्थितियों का प्रशिक्षण प्राप्त करना, आने वाले गगनयान मिशन के लिए अमूल्य अनुभव है। यह भारत के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन के लिए एक मजबूत बुनियाद का कार्य करेगा।

एक्सिओम-4 ने यह भी दिखा दिया कि भारत अब व्यावसायिक अंतरिक्ष उड़ानों में भी प्रवेश कर चुका है। एक्सिओम-4 स्पेस और भारतीय स्टार्टअप स्काईरूट एयरोस्पेस के बीच हुआ समझौता दर्शाता है कि भारत अब केवल सरकारी संसाधनों पर निर्भर नहीं रहना चाहता, बल्कि निजी क्षेत्र के सहयोग से सस्ते और नवीन समाधान विकसित करने की दिशा में अग्रसर है। यह भारतीय अंतरिक्ष नीति की आत्मनिर्भरता और स्टार्टअप संस्कृति की सफलता की कहानी है।

रणनीतिक दृष्टि से देखें तो एक्सिओम-4 भारत और अमेरिका के बीच बढ़ते सहयोग का प्रतीक है, विशेषकर आईसीईटी और आर्टेमिस समझौते जैसी व्यवस्थाओं के अंतर्गत। भारत ने इस मिशन के ज़रिए न केवल अमेरिका बल्कि वैश्विक दक्षिण-उत्तर सहयोग की भावना को भी मज़बूती दी। इस मिशन में भारत के साथ पोलैंड और हंगरी जैसे देशों के अंतरिक्ष यात्री भी शामिल थे। यह वैश्विक समावेशिता और साझेदारी का प्रतीक था।

यह मिशन भारत की ₹सॉफ्ट पावर₹ को भी बढ़ावा देता है। जब दुनिया के समाचार चैनलों पर भारत का नाम मानव अंतरिक्ष यात्रा के साथ जोड़ा गया, तो यह सिर्फ तकनीकी नहीं, कूटनीतिक जीत भी थी। भारत ने यह दिखा दिया कि वह केवल उपग्रह भेजने वाला देश नहीं, बल्कि अंतरिक्ष में मानव भेजने और सहयोग करने वाला देश बन चुका है।

एक्सिओम-4 मिशन से भारत के निजी अंतरिक्ष स्टार्टअप्स को भी नया आत्मविश्वास मिला है। स्काईरूट और अग्निकुल कॉसमॉस जैसी कंपनियाँ अब वैश्विक सहयोग की दिशा में अपने कदम बढ़ा रही हैं। यह भारत के लिए निवेश, तकनीकी सहयोग और वैज्ञानिक नवाचार के नए द्वार खोलने वाला साबित हो सकता है।

इसके अतिरिक्त, इस मिशन ने भारत को गगनयान के लिए आवश्यक अनुभव प्रदान किया है। एक्सिओम-४ को विशेषज्ञों ने ₹बीमा नीति₹ की संज्ञा दी है, जिसका तात्पर्य है कि इस मिशन से भारत को उन जोखिमों को समझने और नियंत्रित करने का अवसर मिला जो गगनयान जैसे जटिल मिशनों में सामने आ सकते हैं। साथ ही, यह अनुभव भारत के भविष्य के अंतरिक्ष स्टेशन ₹भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन₹ के निर्माण की दिशा में भी सहायक होगा।

यह भी महत्वपूर्ण है कि शुभांशु शुक्ल को नासा में आठ महीने का कठोर प्रशिक्षण मिला, जिससे भारत को अब अंतरिक्ष यात्रियों की प्रशिक्षण क्षमता को लेकर एक नया मानक मिल गया है। भविष्य में भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को इसी स्तर पर प्रशिक्षित किया जा सकता है।

एक्सिओम-4 मिशन ने भारत को संयुक्त राष्ट्र के ₹संयुक्त राष्ट्र बाह्य अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग पर समिति₹ जैसे वैश्विक मंचों पर अधिक प्रभावी आवाज़ प्रदान की है। जब कोई देश मानव अंतरिक्ष उड़ान करता है, तो वह न केवल विज्ञान में बल्कि वैश्विक नीति निर्माण में भी एक नई भूमिका निभाने लगता है।

इस पूरे अभियान ने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत अब केवल प्रेक्षक नहीं, बल्कि भागीदार है। यह मिशन भारत के लिए एक 'लिफ्ट-ऑफ मोमेंट' साबित हुआ है — एक ऐसा क्षण जब एक राष्ट्र केवल तकनीकी क्षेत्र में नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, रणनीति और वैश्विक नेतृत्व की दिशा में भी उड़ान भरता है।

अब यह आवश्यक है कि भारत इस उपलब्धि को गगनयान जैसे आगामी मिशनों और अंतरिक्ष क्षेत्र में दीर्घकालिक रणनीतियों के साथ जोड़कर आगे बढ़े। नीति निर्माण से लेकर बजट आवंटन तक और अंतरिक्ष शिक्षा से लेकर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तक — एक्सिओम-4 जैसे मिशनों को भारत की दीर्घकालिक अंतरिक्ष रणनीति का हिस्सा बनाना होगा।

अंततः एक्सिओम-४ केवल एक उड़ान नहीं थी, यह भारत की वैज्ञानिक प्रतिष्ठा, वैश्विक सहभागिता और भविष्य की अंतरिक्ष महाशक्ति बनने की संभावनाओं की घोषणा थी। भारत अब अंतरिक्ष की दौड़ में पीछे नहीं, बल्कि अगली पंक्ति में खड़ा है।

रिसर्च स्कॉलर इन पोलिटिकल साइंस,

कृष्ण कल्पित प्रकरण : यौन-उत्पीड़न की घटना की जाँच हो और आतिथेय के तौर पर 'नई धारा' इसकी ज़म्मिेदारी ले!

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। पटना में 'नई धारा' के राइटर्स रेज़िडेन्स में हुई यौन उत्पीड़न की जिस घटना का हवाला सोशल मीडिया पर बार-बार देखने को मिल रहा है, वह बेहद अफ़सोसनाक है। अगर यह सच है कि रेज़िडेन्ट कवि कृष्ण कल्पित ने, माफ़ी माँगकर या बिना माँगे, तत्काल प्रभाव से वह जगह छोड़ दी है, तो यह अपने आप में घटना के होने का सबूत है। लेकिन साथ ही यह इस बात का भी सबूत है कि यौन-उत्पीड़न के मामले में आयोजक मेज़बान को जिस तरह का हस्तक्षेप करना चाहिए था, उसके बजाये उन्होंने मामले को रफ़ा-दफ़ा करने का रवैया अपनाया। यह सीधे-सीधे उत्पीड़क का बचाव है।

जनवादी लेखक संघ कृष्ण कल्पित की हरकत और 'नई धारा' के इस रवैये की कठोर निंदा करता है। हमारी स्पष्ट राय है कि 'नई धारा' को खुद ज़म्मिेदारी लेकर यौन-उत्पीड़न की इस घटना की जाँच करानी चाहिए थी। ऐसा न होने की स्थिति में लेखक-समुदाय की कोशिश होनी चाहिए कि इस संस्था को भी श्री कल्पित के साथ-साथ क़ानून के दायरे में लाया जाए। हम पीड़िता को आश्वस्त करना चाहते हैं कि अगर वे इस मामले को क़ानूनी प्रक्रिया में ले जाना चाहें, तो हम उनका साथ देने के लिए कृतसंकल्पित हैं। ऐसे मामलों के जानकार किसी विधिवेत्ता से क़ानूनी सलाह लेकर इस दिशा में बढ़ा जा सकता है, लेकिन वह पूरी तरह से

पीड़िता की इच्छा पर निर्भर होगा। इस बीच जिन लोगों ने सोशल मीडिया पर पीड़िता का नाम उछाला है या उनकी तस्वीर साझा कर इशारों में उनकी पहचान ज़ाहिर करने की कोशिश की है, साथ ही जिन्होंने पीड़िता को अपने तौर-तरीक़ों में सुधार लाने का उपदेश दिया है, हम उनकी भी निंदा करते हैं। ये सार्वजनिक क्षेत्र में स्त्री की स्वतंत्र उपस्थिति को हतोत्साह करने वाले क़दम हैं जो उस उपस्थिति को नापसंद करनेवालों के द्वारा ऐसे सभी मौक़ों पर उठाये जाते हैं।

संजीव कुमार, महासचिव
बजरंग बिहारी तिवारी, संयुक्त महासचिव
नलिन रंजन सिंह, संयुक्त महासचिव
संदीप मील, संयुक्त महासचिव

कुटुंब न्यायालय नीमच मे वर्षाकाल के दौरान वृक्षारोपण कार्यकम का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

माननीय प्रधान न्यायाधीश, डॉ. कुलदीप जैन, कुटुंब न्यायालय नीमच के तत्वाधान मे कुटुंब न्यायालय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर माननीय प्रधान न्यायाधीश डॉ. कुलदीप जैन ने वक्षारोपण की महत्ता के संबंध में संक्षिप्त विचार व्यक्त करते हुए बताया कि प्रकृति के संरक्षण एवं मानव जीवन के लिए आज के समय में वृक्षारोपण एक अनिर्वायत्ता है इसके अभाव में मानव जीवन एवं अन्य प्राणियों का भी जीवन खतरे में पड़ रहा है तथा वर्तमान समय में बढ़ते हुए वायु प्रदुषण एवं वाहनों से होने वाले प्रदूषण से बचने के लिए अधिक से अधिक संख्या में छायादार

वृक्षो का वृक्षारोपण वर्षाकाल में करना चाहिए। इस उपलक्ष्य में बड़ी संख्या में अभिभाषण श्री निरंजन दशौरा, श्री विनोद शर्मा, श्री अमित जगधारी, श्री राजेश जोशी, श्री रणजीतसिंह भाटी आदि एवं कुटुंब न्यायालय का स्टॉफ श्री श्रीमती मनोरमा गुप्ता, राहुल राठौर, नरेन्द्र बोराना, विनोद पाटीदार, प्रीति वर्मा, भाविका, गोपाल गायरी, सुखलाल, एवं पक्षकारों एवं विधिक सेवा प्राधिकरण के सदस्यों ने भी वृक्षारोपण में सहयोग किया।

नीमच जिले से भाना की खास रिपोर्ट

राजनीति में अब चापलूसों की चौकड़ी में रहने के दिन लद गए- चौकन्नी हुई जनता-विधायक सांसद व मंत्री को अब टैलेंट चौकड़ी में दिखना बेहतर रहेगा

चापलूसी अस्त्र बनाम हुनर व योग्यता का अस्त्र- अगर पल भर को भी मैं, बे-ज़मीर बन जाता, यकीन मानिए मैं कब का अमीर बन जाता आधुनिक युग में राजनीतिक सामाजिक आध्यात्मिकक्षेत्रों में चापलूसों को हटाकर काबिल व टैलेंट साथियों की सेवाएं लेना समय की मांग है-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर राजनीतिक क्षेत्र में बहुत तेजी के साथ बदलाव होते दिख रहे हैं। एक जमाना था जब पंचायत समिति मेंबर से लेकर मंत्री तक चापलूसों से घिरे रहकर, जी हुजूरी का जीवन जीते थे, मगर आज ऐसादिखा तो हाई कमान बाहर का रास्ता दिखा देते हैं।अपने अन्य नेताओं की चापलूसी के अनेक किस्से हम इलेक्ट्रॉनिक व सोशल मीडिया पर देख चुके हैं परंतु, अब ऐसा युग शुरू हो गया है कि, नेतागण जनता के साथ ईमानदार कर्मठ योग्यता के धनी कर्तव्यनिष्ठ निष्पक्ष व्यक्तियों के सानिध्य में रहना जरूरी है। 2 वर्ष पूर्व हमने देखे कि तीन-चार राज्यों के ऐसे व्यक्तियों को मुख्यमंत्री बनाया गया जो चौथी कतार में बैठे थे, सबसे बड़ी बात वर्तमान राष्ट्रपति महोदय को भी हम दूर-दूर तक नहीं जानते थे। आज जनता ऐसा बदलाव चाहती है, ताकि भारत का सर्वांगीण हिस्सा विकास हो। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र, इस चापलूसी पर पैनी नज़र रखता हूं, व देखता हूं कि हमारी राइस सिटी गोंदिया में दो थाना क्षेत्र है, वहां जब भी नए थानेदार से लेकर एसपी तक वह एसडीओ से लेकर कलेक्टर तक पदभार संभालते हैं, तो एक समाज ग्रुप उनका जबरदस्त स्वागत करता है, व उनके फोटो निकालकर पूरे प्रिंट इलेक्ट्रॉनिक व सोशल मीडिया पर प्रचारित करते हैं, यानें असल में वे यह दिखाना चाहते हैं कि देखो हमारी इतनी पहचान व रुतबा है। मेरा मानना है कि यह ट्रांसफर पोस्टिंग तो होती रहती है, उन्हें अपनी जिम्मेदारी निभानी ही है, परंतु उन अधिकारियों को संज्ञान देना चाहिए कि कहीं इनका कोई हित, स्वार्थ, चापलूसी या कोई गैर कानूनी व्यवसाय व्यापार या दलाली तो नहीं ?यह पता करना उनका कर्तव्य है। ठीक वैसा ही आज समाज व आध्यात्मिक क्षेत्र में भी संज्ञान लेने की जरूरत है, ताकि इन चापलूसों को जड़ से उखाड़ फेंका जा सके, जो अपने निजी स्वार्थ के लिए नेताओं, आध्यात्मिकता व सामाजिक कर्तव्यबध व्यक्तियों के अपने मतलब के लिए आगे पीछे घूमते हैं।चूँकि आज आधुनिक युग में राजनीतिक सामाजिक आध्यात्मिक क्षेत्र में चापलूसों को हटाकर काबिल व टैलेंटेड साथियों को सेवाएं देना समय की मांग है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, राजनीति में अब चापलूसों की चौकड़ी में रहने के दिन लद गए, चौकन्नी हुई जनता, विधायक सांसद व मंत्री को टैलेंट की चौकड़ी में रहने की जरूरत है।

साथियों बात अगर हम चापलूसी की करें तो, भारत में हम दैनिक दिनचर्या में राजनीतिक सामाजिक इत्यादि अनेक क्षेत्रों में चापलूस शब्द अक्सर सुनते रहते हैं। अधिकतम बयानबाज़ी में चापलूस शब्द का उल्लेख किया जाता है। अक्सर हम देखते हैं कि किसी भी पार्टी या सामाजिक संस्था में से अलग होने वाला नेता समाजसेवी सेवक कार्यकर्ता ऐसा जरूर बयान देता है कि पार्टि, संस्था अब चापलूसों से घिर गई है मेरा उसमें काम करना कठिन हो गया था, या फलाना हमारा लीडर चापलूस लोगों की ही सुनता है ! स्वाभिमानी इंसान का वहां मूल्य नहीं ! चापलूसी को झूठी प्रशंसा चाटुकारिता, मक्खनबाजी, खुशामद, बढ़ई दिखावी आवभगत,

चने के झाड़ पर चढ़ाना इत्यादि अनेक शब्दों का एक जुमला प्रसंग के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। अगर हम किसी व्यक्ति की तारीफ में यही उपरोक्त शब्दों को एकीकृत कर अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं तो हमें अप्रत्यक्ष रूप से चापलूस बाज कहा जा सकता है। जबकि पूरी पारदर्शिता, सौ बात की एक बात, कड़वी सच्चाई, मुंह पर बोलना, बिना लाग लपेट के बोलना इत्यादि गुणों वाले व्यक्ति को स्वाभिमानी की संज्ञा दी जाती है और यह व्यक्तित्व चाटुकारिता पर सेर पर सवा सेर साबित होता है क्योंकि बड़े बुजुर्गों ने भी कहा है सच्चाई छुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से ! हालांकि कुछ अपवाद छोड़ दें तो वर्तमान परिस्थितियों में खासकर कुछएक खास क्षेत्रों में चापलूसी करना अधिक फायदेमंद होती जा रही है क्योंकि आज पारदर्शी व्यक्तित्व कड़वी सच्चाई आदि गुणों वाले व्यक्तित्व को उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वाली कहावत ने घेर लिया जाता है याने चापलूसी उस पारदर्शी व्यक्तित्व को चापलूस बताने में आगे होते हैं ऐसा मेरा मानना है।

साथियों बात अगर हम चापलूसी और स्वाभिमानी की करें तो, वर्तमान दौर में चाहे वह क्लब हो या दफ्तर हो और तो और घर क्यों न हो सब जगह चाटुकारिता संस्कृति ने अपना शिकंजा कसा हुआ है ।लोग इंसानियत भूलकर चाटुकारिता को अपना रहे हैं। वैसे भी देखा जाये तो चापलूसी भी एक प्रकार का कला है जो स्वाभिमानी इंसान कभी भी सीख नहीं सकेगा और न ही सीखने की कोशिश करेगा इसके विपरीत स्वाभिमानी होना बहुत बड़ी कला है जो चापलूस इंसान कभी बन ही नहीं सकता चाहे लाख कोशिश भी कर ले क्योकि उसके रगों में स्वाभिमानी व्यक्ति का खून दौड़ रहा होता है। आज हर क्षेत्र में चापलूसों का बोलबाला है। चाहे वह क्लब हो या अन्य दफ्तर हो या यूनियन हो सभी जगह इनके जैसे लोगों का बोलबाला दिखता है। ये चापलूस ऐसे जीव हैं जो आत्मग्लानि का बोध करा देते हैं, झूठी प्रशंसा का पहाड़ खड़ा कर, फिर उस में मोटेमोटे छेद कर देते हैं, अब झेलते रहें हम मिट्टी को। सत्ता बदलते ही चापलूसों का दल बदल जाता है। यानी जिसकी लाठी उस की भैंस, चापलूस उसी के पीछे जा कर खड़ा होगा जिस की हैसियत होगी। सम्मान जताने के लिए चापलूसों के हाथ हमेशा जुड़े रहते हैं और कमर झुकने को यों आतुर रहती है मानो रीढ़ की हड्डी में फ्रैक्चर हो गया है। शर्म को तो सुबहशाम ये गोलगप्पे के पानी में घोल कर पी जाते हैं, जब ये चलते हैं तो अपने हाथ में पकड़े झोले में दोचार जुमले डालना नहीं भूलते।

साथियों बिना किसी डिग्री और ट्रेनिंग के चापलूसी की कला में महारत हासिल करने के लिए सिर्फ थोड़ी बेशर्मी भरी हंसी और काम के आदमी के सामने जीभ लपलपा देना काफी है, फिर देखिए, सामने वाला कैसे हथियार डालता है हमारे सामने, आखिर नेता, अभिनेता से ले कर आम इंसान तक, चापलूसी किसे नहीं भाती भाई, बिना किसी डिगरी और ट्रेनिंग के चापलूसी की कला में महारत हासिल करने के लिए सिर्फ थोड़ी बेशर्मी भरी हंसी और काम के आदमी के सामने जीभ लपलपा देना काफी है, फिर देखिए, सामने वाला कैसे हथियार डालता है आप के सामने, आखिर नेता, अभिनेता से ले कर आम इंसान तक को, चापलूसी किसे नहीं भाती।

साथियों बात अगर हम स्वाभिमानी व्यक्तियों की करें तो, आत्म-सम्मान के स्वस्थ स्तर वाले लोग ।कुछ मूल्यों और सिद्धांतों में दृढ़ता से विश्वास करते हैं, और विरोध मिलने पर भी उनका बचाव करने के लिए तैयार हैं, अनुभव के आलोक में उन्हें संशोधित करने के लिए पर्याप्त सुरक्षित महसूस करते हैं। जो उन्हें सबसे अच्छा विकल्प लगता है, उसके अनुसार कार्य करने में सक्षम हैं, अपने स्वयं के निर्णय पर भरोसा करते हैं, और जब दूसरों को उनकी पसंद पसंद नहीं है तो दोषी महसूस नहीं करते हैं ।अतीत में क्या हुआ, और भविष्य में क्या हो सकता है, इस बारे में अत्यधिक चिंता करने में समय न गँवाएँ। वे अतीत से सीखते हैं और भविष्य की योजना बनाते हैं, लेकिन वर्तमान में तीव्रता से जीते हैं ।असफलताओं और कठिनाइयों के बाद झिझकते नहीं, समस्याओं को हल करने की उनकी क्षमता पर पूरा भरोसा है। जरूरत पड़ने पर वे दूसरों से मदद मांगते हैं ।कुछ प्रतिभाओं, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा या वित्तीय स्थिति में अंतर को स्वीकार करते हुए, खुद को हीन या श्रेष्ठ के बजाय दूसरों के लिए समान समझें ।समझें कि वे दूसरों के लिए एक दिलचस्प और मूल्यवान व्यक्ति कैसे हैं, कम से कम उनके लिए जिनके साथ उनकी दोस्ती है ।हेरफेर का विरोध करें, दूसरों के साथ तभी सहयोग करें जब यह उचित और सुविधाजनक लगे ।विभिन्न आंतरिक भावनाओं और ड्राइव को स्वीकार करें और स्वीकार करें, या तो सकारात्मक या नकारात्मक, उन ड्राइव को दूसरों के सामने तभी प्रकट करें जब वे चुनते हैं ।विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आनंद लेने में सक्षम हैं। दूसरों की भावनाओं और जरूरतों के प्रति संवेदनशील हैं, आम तौर पर स्वीकृत सामाजिक नियमों का सम्मान करते हैं, और दूसरों के खर्च पर समृद्ध होने के अधिकार या इच्छा का दावा नहीं करते हैं ।चुनौतियों के आने पर खुद को या दूसरों को नीचा दिखाए बिना समाधान खोजने और असंतोष की आवाज उठाने की दिशा में काम कर सकते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि राजनीति में अब चापलूसों की चौकड़ी में रहने के दिन लद गए- चौकन्नी हुई जनता-विधायक सांसद व मंत्री को अब टैलेंट चौकड़ी में दिखना बेहतर रहेगा ।चापलूसी अस्त्र बनाम हुनर व योग्यता का अस्त्र-अगर पल भर को भी मैं, बे-ज़मीर बन जाता, यकीन मानिए मैं कब का अमीर बन जाताआधुनिक युग में राजनीतिक सामाजिक आध्यात्मिक क्षेत्रों में चापलूसों को हटाकर काबिल व टैलेंट साथियों की सेवाएं लेना समय की मांग है।

वीडा VX2 तीन रंगो में होगा लॉन्च, पेट्रोल वाले स्कूटर से भी कम हो सकती है कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

हीरो मोटोकॉर्प की इलेक्ट्रिक सब-ब्रांड Vida 1 जुलाई 2025 को Vida VX2 इलेक्ट्रिक स्कूटर लॉन्च करने वाली है। कंपनी ने इसके कई टीजर जारी किए हैं जिनमें स्कूटर के फीचर्स देखने को मिले हैं। Vida VX2 कम-से-कम तीन कलर में लॉन्च होगा और इसमें ड्रम और डिस्क ब्रेक दोनों विकल्प मिलेंगे। माना जा रहा है कि इसकी शुरुआती कीमत 70000 रुपये तक हो सकती है।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर बाजार पिछले कुछ वर्षों से काफी तेजी से बढ़ रहा है। इस रेस में Hero MotoCorp की इलेक्ट्रिक सब-ब्रांड Vida भी किसी से पीछे नहीं है। कंपनी 1 जुलाई 2025 को Vida VX2 इलेक्ट्रिक स्कूटर लॉन्च करने वाली है। इसे लॉन्च करने से पहले कंपनी अभी तक सोशल मीडिया पर इसके कई टीजर को जारी कर चुकी है। इन टीजर्स में स्कूटर्स के कई फीचर्स देखने के लिए मिले हैं। आइए जानते हैं कि Vida VX2 इलेक्ट्रिक स्कूटर किन बेहतरीन फीचर्स के साथ भारत में लॉन्च होने वाला है?

तीन कलर में लॉन्च होगा Vida VX2

इसके नए टीजर के मुताबिक, Vida VX2 इलेक्ट्रिक स्कूटर कम-से-कम तीन कलर ऑप्शन में लॉन्च किया जाएगा। यह कलर ब्लैक, व्हाइट और रेड होने वाले हैं। इसे खरीदने वाले लोग अपनी पसंद के मुताबिक कलर चुन सकेंगे।

ड्रम और डिस्क ब्रेक मिलेगा

Vida VX2 के अभी तक आए टीजर से यह पता चल चुका है कि इसमें एक बड़ा फर्क देखने के लिए मिलेगा। इसके पहले टीजर में स्कूटर में फ्रंट ड्रम ब्रेक दिखाई दिया था, जबकि हालिया टीजर में फ्रंट डिस्क ब्रेक भी देखने के लिए मिला है। इसका मतलब साफ है कि Vida VX2 अलग-अलग वेरिएंट्स के साथ लॉन्च किया जाएगा। इसके बेस मॉडल में ड्रम ब्रेक और हाई वेरिएंट्स में डिस्क ब्रेक देखने के लिए मिलेगा।

Vida ने Vida VX2, VX2 PRO, VX2 PLUS और VX2 GO नामों के लिए ट्रेडमार्क भी फाइल किया है। इससे भी अंदाजा लगाया जा सकता है कि कंपनी VX2 को कई वेरिएंट्स में लॉन्च करेगा। इन वेरिएंट्स में बैटरी कैपेसिटी, टॉप स्पीड और फीचर्स अलग-अलग देखने के लिए मिलेगें।

कितनी होगी कीमत?

Vida VX2 को Vida V2 के नीचे पोजिशन किया जाएगा। ऐसा माना जा रहा है कि इस स्कूटर की शुरुआती कीमत करीब 70,000 रुपये तक हो सकती है। अगर ऐसा होता है, तो Vida VX2 भारतीय बाजार में काफी किफायती इलेक्ट्रिक स्कूटर बन जाएगी। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला Ather Rizta, Bajaj Chetak 3001, TVS iQube, Ola S1X और Honda QC1 जैसे इलेक्ट्रिक स्कूटर से देखने के लिए मिलेगा।

निशान मैग्नाइट पर बंपर डिस्काउंट ऑफर, मिल रही 86,000 रुपये तक की छूट

परिवहन विशेष न्यूज

निसान मोटर इंडिया अपनी पॉपुलर SUV Magnite पर 86000 रुपये तक का डिस्काउंट दे रही है क्योंकि कंपनी ने दो लाख यूनिट्स की बिक्री का माइलस्टोन पूरा कर लिया है। यह छूट ग्राहकों को Magnite की सफलता का जश्न मनाने के लिए दी जा रही है। Magnite को 6.14 लाख रुपये से 10.54 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है।

नईदिल्ली। निसान मोटर इंडिया की भारतीय बाजार में पॉपुलर SUV Magnite पर बंपर डिस्काउंट दे रही है। कंपनी ने अपनी इस एसयूवी पर 86,000 तक के बेनिफिट्स देने की घोषणा की है। कंपनी इतना बड़ा डिस्काउंट ऑफर दो लाख यूनिट्स की सेल्स माइलस्टोन पूरी होने की खुशी में रही है। आइए Nissan Magnite के बारे में विस्तार में जानते हैं।

क्यों मिल रही है छूट?

Nissan Magnite ने भारतीय बाजार में 2 लाख यूनिट्स बेचने का बड़ा मुकाम हासिल कर लिया है। इस सफलता को सेलिब्रेट करने के लिए कंपनी अपने ग्राहकों को आकर्षक डिस्काउंट और बेनिफिट्स दे रही है। आप इसपर मिल रहे डिस्काउंट और बेनिफिट्स का फायदा उठाने के लिए Nissan डीलरशिप पर जाकर पूरी जानकारी हासिल कर सकते हैं।

कीमत और वेरिएंट्स

भारतीय बाजार में Nissan Magnite को 6.14 लाख रुपये से लेकर 10.54 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है। इसके पेट्रोल वर्जन में 1.0-लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन का इस्तेमाल किया जाता है, जिसे मैनुअल गियरबॉक्स के साथ पेश किया जाता है। कंपनी ने हाल ही में इसका CNG वर्जन भी पेश किया है। इसके रिट्रोफिट CNG किट के साथ ऑफर किया जाता है, जिसकी एक्स-शोरूम कीमत 6.89 लाख रुपये है। इसके सीएनजी किट की कीमत में फायर एक्सटिंग्विशर, थर्ड पार्टी वारंटी, आरसी में एंडोर्समेंट और इंस्टॉलेशन फीस भी शामिल है। यह पेट्रोल वर्जन से 75,000 ज्यादा महंगी है। इसके CNG किट को केवल 1.0-लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन के साथ ही पेश किया जाता है। कंपनी ने बीं वेरिएंट्स के लिए अभी CNG का ऑप्शन नहीं दिया है।

माइलेज और वारंटी

Magnite CNG के लिए कंपनी ने अभी ऑफिशियल माइलेज के आंकड़े पूरी तरह से शेयर नहीं किए हैं, लेकिन रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह शहर में करीब 24 km प्रति किलो और हाईवे पर करीब 30 km प्रति किलो तक का माइलेज देती है।

Magnite CNG के लिए कंपनी ने अभी ऑफिशियल माइलेज के आंकड़े पूरी तरह से शेयर नहीं किए हैं, लेकिन रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह शहर में करीब 24 km प्रति किलो और हाईवे पर करीब 30 km प्रति किलो तक का माइलेज देती है।

केटीएम 390 एडवेंचर X की बुकिंग पर लगी रोक, नए मॉडल में मिलेंगे शानदार इलेक्ट्रॉनिक फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

KTM ने भारत में अपनी लोकप्रिय एडवेंचर बाइक 390 Adventure X की बुकिंग रोक दी है। कंपनी का कहना है कि वे इसका अपडेटेड मॉडल लाने वाले हैं जिसमें नए इलेक्ट्रॉनिक फीचर्स होंगे। अपडेटेड मॉडल में कॉर्नरिंग ABS ट्रैक्शन कंट्रोल क्रूज कंट्रोल और अलग-अलग राइडिंग मोड्स मिलेंगे। इंजन पहले जैसा ही 399cc का होगा। कीमत में 10000 से 15000 रुपये की बढ़ोतरी हो सकती है।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में KTM की पॉपुलर एडवेंचर बाइक 390 Adventure X की बुकिंग पर रोक लगा दी गई है। इस बाइक को उन राइडर्स के लिए बनाई गई थी, जो एडवेंचर बाइकिंग का मजा लेना चाहते हैं। इस बाइक की बुकिंग पर रोक लगाने के पीछे का कारण कंपनी ने इसके अपडेटेड मॉडल लाना बता रही है। आइए इसके अपडेटेड मॉडल के बारे में जानते हैं।

क्यों रुकी KTM 390 Adventure X की बुकिंग?

KTM ने 390 Adventure X को 2023 में लॉन्च किया था। यह बाइक असल में स्टैंडर्ड 390 Adventure का एक किफायती वर्जन है। स्टैंडर्ड 390 Adventure की तुलना में Adventure X चलाना काफी बेहतरीन है, जबकि स्टैंडर्ड वर्जन ऑफ-रोडिंग के लिए फोकस्ड है।

हाल में KTM 390 Adventure X की एक्स-शोरूम कीमत 2.91 लाख रुपये है, जबकि टॉप-स्पेक 390 Adventure की एक्स-शोरूम कीमत 3.68 लाख है। इन दोनों में सबसे बड़ा अंतर इलेक्ट्रॉनिक फीचर्स का है। अब यह अपडेट होने वाली है। इसमें वहीं इलेक्ट्रॉनिक फीचर्स मिलने वाले हैं, जो टॉप-स्पेक मॉडल में मिलते हैं।

नए मॉडल के फीचर्स

अभी तक KTM 390 Adventure X में ऑफ-रोड मोड और ऑफ-रोड ABS जैसे बेसिक फीचर्स के साथ पेश किया जाता था, लेकिन अपडेटेड मॉडल में काफी कुछ नया मिलने वाला है। इसमें बाइक को और ज्यादा कंट्रोल में रखने के लिए कॉर्नरिंग ABS, बाइक के पहिए फिसलने से बचाने के लिए ट्रैक्शन कंट्रोल, लंबी राइड्स के लिए क्रूज कंट्रोल और Rain, Street और Off-road जैसे अलग-अलग मोड्स मिलेंगे। यह नए फीचर्स मिलकर बाइक की टूरिंग कैपेसिटी को बढ़ा देंगे और राइडर को ज्यादा कंफर्ट मिलेगा।

पहले जैसा ही मिलेगा इंजन

इसमें वही 399cc, सिंगल-सिलिंडर, लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया जाएगा, जो 45 PS की पावर और 39 Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। इसके इंजन को 6-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा जाएगा।

सस्पेंशन और ब्रेकिंग सिस्टम

इसमें पहले की तरह ही स्टील ट्रेलिस फ्रेम, फ्रंट में 43mm WP Apex USD फोर्क (नॉन-अडजस्टेबल), रियर में प्रीलोड अडजस्टेबल मोनोशॉक मिलेगा। साथ ही ब्रेकिंग के लिए फ्रंट में 320mm डिस्क और रियर में 240mm डिस्क ब्रेक दिया जाएगा।

कितनी होगी अपडेटेड मॉडल की कीमत?

इन नए फीचर्स के साथ अपडेटेड KTM 390 Adventure X की कीमत में करीब 10,000 रुपये से 15,000 रुपये की बढ़ोतरी हो सकती है। इसके बाद भी यह बाइक स्टैंडर्ड 390 Adventure की तुलना में करीब 60,000 रुपये सस्ती रहेगी।

इन नए फीचर्स के साथ अपडेटेड KTM 390 Adventure X की कीमत में करीब 10,000 रुपये से 15,000 रुपये की बढ़ोतरी हो सकती है। इसके बाद भी यह बाइक स्टैंडर्ड 390 Adventure की तुलना में करीब 60,000 रुपये सस्ती रहेगी।

2027 में लॉन्च हो सकती है हुंडई क्रेटा हाइब्रिड, पहले से ज्यादा मिलेगा माइलेज

हुंडई क्रेटा भारतीय बाजार में एक लोकप्रिय एसयूवी है जो 2024 में लॉन्च हुई अपनी दूसरी पीढ़ी में उपलब्ध है। कंपनी अब 2027 तक क्रेटा की तीसरी पीढ़ी को हाइब्रिड तकनीक के साथ लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। नई क्रेटा में 1.5-लीटर पेट्रोल इंजन और इलेक्ट्रिक मोटर के साथ स्ट्रांग हाइब्रिड सिस्टम मिलेगा जिससे माइलेज में सुधार होगा। इसमें चार इंजन विकल्प मिल सकते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय कार बाजार में Hyundai Creta काफी पॉपुलर है। यह पिछले कुछ महीनों से SUV की बिक्री के साथ ही सभी गाड़ियों की सेल की लिस्ट में टॉप पर बनी हुई है। भारतीय बाजार में फिलहाल Creta अपनी दूसरी जनरेशन में मिलती है, जिसे जनवरी 2024 में लॉन्च किया गया था। कंपनी अब अपनी सबसे पॉपुलर SUV को नई पहचान देने की तैयारी कर रही है। साल 2027 तक हुंडई क्रेटा के तीसरे जनरेशन को लॉन्च कर सकती है। इसके साथ ही इसे हाइब्रिट तकनीक से भी लैस किया जा सकता है। आइए इसके बारे में विस्तार से जानते हैं।

2027 में आ सकती है नई Creta Hybrid

Hyundai Creta की तीसरी जनरेशन को बनाने के लिए कंपनी ने काम करना शुरू कर दिया है। इसमें हाइब्रिड पावरट्रेन देखने के लिए मिलेगा, जो इस SUV को अपने सेगमेंट में और भी खास बना देगा। यह पहली बार होगा जब Hyundai भारत में अपनी किसी कॉम्पैक्ट SUV में हाइब्रिड टेक्नोलॉजी देगी। Hyundai Creta Hybrid में मिलने वाला सिस्टम स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड टेक्नोलॉजी पर बेस्ड होगा। इसमें सेल्फ-चार्जिंग हाइब्रिड तकनीक मिल सकती है, जिससे इंजन और इलेक्ट्रिक मोटर दोनों साथ काम करेंगे।

नई हुंडई क्रेटा में 1.5-लीटर, 4-सिलिंडर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन देखने के लिए मिल सकता है। इसमें इलेक्ट्रिक मोटर टॉर्क असिस्ट का काम करेगी और जरूरत पड़ने पर अकेले भी गाड़ी चला सकती है। इसमें एक छोटा बैटरी पैक होगा, जो ब्रेकिंग के दौरान एनर्जी स्टोर करेगा। इस सिस्टम की वजह से माइलेज में बढ़ोतरी देखने को मिलेगी।

माइलेज पर कितना पड़ेगा फर्क?

रिपोर्ट्स के मुताबिक, नई Hyundai Creta Hybrid शहर में करीब 10% ज्यादा माइलेज दे सकती है। हाईवे पर माइलेज में लगभग 5% की बढ़ोतरी हो सकती है। Hyundai की टेक्नोलॉजी और फाइन ट्यूनिंग के चलते असल आंकड़े इससे भी बेहतर हो सकते हैं।

इसे कुल चार इंजन ऑप्शंस में पेश किया जा सकता है। इसमें 1.5L NA पेट्रोल, 1.5L टर्बो पेट्रोल, 1.5L डीजल और नया 1.5L स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड पेट्रोल इंजन दिया जा सकता है।

मर्सिडीज ने पेश की सबसे पावरफुल इलेक्ट्रिक कार; 1360 bhp पॉवर और 360 km/h की है रफ्तार

Mercedes-Benz ने अपनी लग्जरी और परफॉर्मेंस की पहचान को बरकरार रखते हुए AMG के तहत इलेक्ट्रिक कार Mercedes AMG GT-XX Concept पेश किया है। यह पावरफुल कार हीरो-ऑरेंज शेड में पेश की गई है जिसमें 114 kWh की बैटरी लगी है। यह 5 मिनट की चार्जिंग में 400 km की रेंज देती है और 1360 bhp की पावर जनरेट करती है।

नई दिल्ली। Mercedes-Benz का नाम हमेशा से ही लग्जरी और परफॉर्मेंस की दुनिया सबसे ऊपर रहा है। कंपनी ने अपने इस नाम को बनाए रखने के लिए हाई-परफॉर्मेंस डिविजन AMG के तहत एक इलेक्ट्रिक कार को पेश किया है। इस इलेक्ट्रिक कार का नाम Mercedes AMG GT-XX Concept है। कंपनी की यह काफी पावरफुल कार होने वाली है। आइए मर्सिडीज बेंज के इन नई कार के बारे में जानते हैं।

कार का डिजाइन काफी शानदार

Mercedes AMG GT-XX Concept को हीरो-ऑरेंज शेड में पेश किया गया है। इसकी झलक 60s और 70s की C111 कॉन्सेप्ट कार्स और हालिया Vision One-Eleven Concept में देखने के लिए मिलती है। यह एक चार-दरवाजों वाली इलेक्ट्रिक ग्रैन टूरर है, जिसकी स्लोपिंग कूपे रूफलाइन इसे बेहद स्पोर्टी लुक देती है।

इसके आगे की तरफ Panamericana ग्रिल, बड़े एयर इनटेक्स के लिए बोनट स्कूप, LED हेडलाइट्स और स्पोर्टी फ्रंट लिप दिया गया है। साइड प्रोफाइल में 21-इंच एयरोडायनामिक व्हील्स, फ्लश डोर हैंडल्स और स्पोर्टी साइड स्कर्ट्स मिलते हैं। इसके रियर में 700 LED सिग्नेचर्स के साथ 6 सिलिंड्रिकल 3D टेललाइट्स दी गई है। इसकी एयरोडायनामिक एफिशिएंसी भी शानदार है।

रेसिंग कार जैसा इंटीरियर

Mercedes AMG GT-XX Concept का इंटीरियर काफी फ्यूचरिस्टिक है। इसमें ओरेंज इल्युमिनेशन वाली लाइनिंग, 10.2 इंच का डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, 14 इंच का इंफोटेनमेंट स्क्रीन, AMG का स्टीयरिंग योक, पैडल शिफ्टर्स, कार्बन फाइबर बकेट सीट्स, रिसाइकल्ड मटेरियल का इस्तेमाल किया गया है।

बैटरी पैक और रेंज

Mercedes AMG GT-XX Concept में 114 kWh की बैटरी दी गई है। इसमें सोफिस्टिकेशन, कूलिंग टेक्नोलॉजी, इंस्पायर्ड फ्रॉम Mercedes Formula 1 दिया गया है। इसका 800V आर्किटेक्चर जो 850 kW DC चार्जिंग को सपोर्ट करता है। कंपनी ने दावा किया है कि यह महज 5 मिनट की चार्जिंग में 400 km की रेंज दे सकती है। इसमें लगा हुआ मोटर 1360 bhp की पावर जनरेट करता है। इसकी टॉप स्पीड 360 km/h है। इसके पहियों को पावर देने के लिए तीन एक्सियल फ्लक्स मोटर्स का इस्तेमाल किया गया है।

SUV भी लॉन्च करेगी कंपनी

Mercedes AMG GT-XX Concept पर बेस्ड कंपनी एक SUV भी लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। इस SUV को इसी प्लेटफॉर्म पर बनाया जाएगा और इसे साल 2026 के आसपास प्रोडक्शन में लाया जा सकता है।

आज समाचार पत्रों के ऑनलाइन संस्करण पूरी दुनिया में पहुंच रहे हैं

विजय गर्ग

अखबारी पत्रकारिता विश्वास और भरोसे पर आधारित होती है। नैतिक मूल्य, शालीनता और विश्वसनीयता इसके मजबूत आधार हैं। सटीकता, निष्पक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही इन स्तंभों की शाखाओं की भूमिका निभाती हैं। संपादकीय नीति अखबारों की ताकत बनती है। सूचना क्रांति के इस युग में विश्वसनीयता बहुत बड़ी ताकत है।

अगर आप खुद को अपडेट रखना चाहते हैं तो अखबार से बेहतर कोई माध्यम नहीं है। अखबार सूचना का विश्वविद्यालय है। इस बात से सभी सहमत हैं। टेलीविजन चैनल, डिजिटल मीडिया, पाठक भी। आज खबरों ने अपनी जान खो दी है। खबरें सिर्फ अखबारों में ही मिलती हैं। अखबार बहुत महत्वपूर्ण हैं। डिजिटल पर हेडलाइन पढ़ने के बाद लोग सोचते हैं कि उन्होंने खबर पढ़ ली है। लेकिन वहां खबर कहां है? खबर तो अखबारों के पन्नों पर होती है।

समाचार पत्र पत्रकारिता की आधारशिला और आधार होते हैं क्योंकि वे समाचार, सूचना और विचारों के साथ-साथ जीवन के हर महत्वपूर्ण पहलू और पहलू पर बात करते हैं। वे लोगों को जागृत करते हुए सरल तरीके से संतुलित जानकारी प्रदान करते हैं। आज हर कोई हर समय अलग-अलग तरह की पत्रकारिता के संपर्क में रहता है। टेलीविजन है, रेडियो है, सोशल मीडिया है, अखबार हैं, डिजिटल मीडिया है, पत्रिकाएं हैं, ऑनलाइन श्रेणी में नए-नए रूप अस्तित्व में आ रहे हैं। हम सूचना क्रांति के युग में जी रहे हैं। लेकिन एक विशेषज्ञ द्वारा अखबार में लिखा गया लेख आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पहले था। एक प्रतिबद्ध पत्रकार द्वारा तैयार अखबार की हेडलाइन और स्टोरी आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी दशकों पहले थी।

अखबारी पत्रकारिता विश्वास और भरोसे पर आधारित होती है। नैतिक मूल्य, शालीनता और विश्वसनीयता इसके मजबूत आधार हैं। सटीकता, निष्पक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही इन स्तंभों की शाखाओं की भूमिका निभाती हैं। संपादकीय नीति अखबारों की ताकत बनती है। सूचना क्रांति के इस युग में विश्वसनीयता बहुत बड़ी ताकत है। एक तरफ पत्रकारिता की शालीनता है, तो दूसरी तरफ फर्जी खबरों का बोलबाला है। पक्षपात और पूर्वाग्रह की प्रवृत्ति है। तरह-तरह के दबाव हैं। तरह-तरह की चुनौतियां हैं। इन सबके बावजूद अखबार समाज के प्रति और लोगों के प्रति अपनी उचित जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

तकनीक के इस दौर में अख़बारों ने भी तकनीकी रूप से काफ़ी तरक्की की है। डेटा एनालिटिक्स और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म जैसी अत्याधुनिक सुविधाओं के आने से क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। आज के डिजिटल समय में अख़बारों को प्रासंगिक और प्रभावी बनाए रखने के लिए ज़रूरी बदलाव ज़रूरी हो गए हैं। इंटरनेट

और ऐप की सुविधा के साथ अख़बार अब देश-दुनिया भर के पाठकों तक पहुँच रहे हैं। चूँकि ऑनलाइन संस्करण पूरी दुनिया में पहुँच रहा है, इसलिए इसके पाठकों की संख्या में तेज़ी से वृद्धि हो रही है। स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जनमत को प्रभावित करने और बदलने में अख़बार अहम भूमिका निभा रहे हैं।

सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक और राजनीतिक मुद्दों पर गंभीर और संतुलित चर्चा करने में भी समाचार पत्र सबसे आगे हैं। पाठक भावनात्मक स्तर पर उनसे जुड़ाव और जुड़ाव महसूस करते हैं। विज्ञापन के मामले में, समाचार पत्रों जितना प्रभावी और प्रभावशाली कोई दूसरा माध्यम नहीं है क्योंकि समाचार पत्र संबंधित क्षेत्र और लोगों तक सीधी पहुंच सुनिश्चित करते हैं। लिखित सामग्री का मानव मन पर जो प्रभाव पड़ता है, वह पढ़ने और स्क्रीन पर देखने से नहीं होता। समाचार पत्र उन लोगों तक भी पहुंचते हैं जो तकनीकी रूप से कुशल नहीं हैं। जो इंटरनेट या सोशल मीडिया का उपयोग नहीं करते हैं।

प्रिंट फॉर्म में कंटेंट को पढ़ना, समझना और याद रखना आसान होता है। यह आरामदायक होता है। अच्छा लगता है। आज के डिजिटल युग में अख़बारों की सफलता के कई उदाहरण हैं। 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' एक ऐसा अख़बार है जिसने प्रिंट फॉर्म में अपना सर्कुलेशन बनाए रखा है और साथ ही अपने ऑनलाइन पाठकों की संख्या में भी लगातार वृद्धि की है। आज के तेज़ गति वाले तकनीकी युग में, हालांकि डिजिटल मीडिया के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है, लेकिन प्रिंट मीडिया की भूमिका को भी कम नहीं आंका जा सकता है।

दरअसल, समय दोनों का मिश्रण है। डिजिटल मीडिया पर नज़र डालने के बाद, हमें समाचार पत्रों के पन्नों पर जाना होगा ताकि सच्चाई और विवरण को जान सकें। ऐसा करके ही हम समाचारों को, दुनिया को सही ढंग से समझ सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

विज्ञान का अन्वेषण करें: इंजीनियरिंग और चिकित्सा से परे करियर

विजय गर्ग

नौकरी के बाजार के नए युग के साथ, माता-पिता और छात्र अपरंपरागत कैरियर पथ पर निर्णय का सामना कर रहे हैं जो न केवल इंजीनियरिंग और चिकित्सा हैं। ये विविध नौकरियां वे हैं जो न केवल सभी के स्वाद के लिए हैं, बल्कि वे ग्रह पर सबसे अच्छी घटनाओं का स्रोत भी हैं। आज तक के गैर-पारंपरिक कैरियर रास्तों की एक रंगीन सरणी इन तक सीमित नहीं है: यदि आपका किशोर एक रचनात्मक है, यदि वह अपने काम के माध्यम से एक बेहतर समाज के लिए एक वकील है, या यदि वह एक है जो दोहराने के बटन को आगे बढ़ाने का सपना देखता है दुनिया के नवाचार का, तो उसके लिए पूरी तरह से अप्रत्याशित करियर का एक विस्टा है जो इन उतार-चढ़ाव को भुनाने के लिए पाया जाता है।

रचनात्मक व्यवसायों, बॉक्स के बाहर दवा और पर्यावरण विज्ञान जैसे विभिन्न व्यवसायों के लिए। यह क्षेत्र न केवल सफलता की अवधारणा को फिर से परिभाषित करता है, बल्कि एक ही समय में एक युवा पीढ़ी के लिए दरवाजे खोलता है जो चीजों को करने और समाज की बेहतरी में योगदान देने के सामान्य तरीके को चुनौती देने के लिए अत्यधिक प्रेरित होता है।

1.। क्रिएटिव कैरियर पथः नवाचार को फिर से परिभाषित करना

वर्तमान पीढ़ी रचनात्मक और नेत्रहीन आकर्षक करियर की मांग करती है; इसलिए, डिजाइन और रचनात्मक क्षेत्र सबसे अधिक मांग में हैं। ये ऐसे क्षेत्र हैं जहां छात्र न केवल अपनी कल्पनाओं का पता लगा सकते हैं बल्कि वास्तविक जीवन के मुद्दों का ठोस समाधान भी प्रदान कर सकते हैं।

क्रिएटिव डायरेक्टर करियर पाथः यदि आपका बच्चा रचनात्मक टीम, माइंड मैपिंग और बुद्धिशीलता का नेतृत्व करना पसंद करता है, और कहानी कहने से प्रेरित है, तो एक रचनात्मक निर्देशक बनने से अनुनय की दुनिया बढ़ सकती है और चमक सकती है। यह पेशा खुद को विज्ञापन से लेकर फिल्म और डिजिटल मीडिया तक हर जगह ले जाता है।

ग्राफिक डिजाइन और यूएक्स / यूआई डिज़ाइनः ये पेशे छात्रों को ऐसे सामान बनाने के लिए रचनात्मकता और प्रौद्योगिकी को नियोजित करने में सक्षम बनाते हैं जो न केवल सुशोभित करते हैं बल्कि उपयोगकर्ताओं को बहुत संतुष्टि देते हैं। पेशे उन लोगों के लिए सबसे उपयुक्त हैं जो डिजिटल टूल के साथ काम करने का आनंद लेते हैं।

फैशन डिजाइनः फैशन डिजाइन रचनात्मक छात्रों के लिए एक आदर्श

पाठ्यक्रम है जो नवीनतम रुझानों और शैलियों से प्रेरित हैं जो उन्हें अपने स्वयं के अद्वितीय और अपरंपरागत कपड़े बनाने का अवसर देते हैं।

यह एक महान विकल्प क्यों हैः वास्तव में, अभिनव पेशे खुशी लाते हैं। इसके साथ ही, कोई भी मीडिया, विपणन और मनोरंजन क्षेत्रों में भी उस वृद्धि को विकसित कर सकता है।

2.। सामाजिक प्रभाव और समावेश नौकरियां

जो छात्र सामाजिक परिवर्तन के बारे में सहानुभूति और भावुक हैं, उनके लिए सामाजिक कार्य और वकालत में करियर सबसे सार्थक अवसर प्रदान करते हैं। ये समावेश नौकरियां इक्विटी बनाने और समाज में कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों का समर्थन करने पर जोर देती हैं।

सामाजिक कार्यः सामाजिक कार्यकर्ता मानसिक स्वास्थ्य, गरीबी उन्मूलन और सामुदायिक विकास से निपटते हैं। वे आवश्यक सेवाएं प्रदान करते हैं जो लोगों के जीवन को बेहतर बनाते हैं।

मानवाधिकार वकालतः यह क्षेत्र छात्रों को परिवर्तन एजेंटों के रूप में कार्य करने की अनुमति देता है जो समानता, न्याय और पर्यावरण संरक्षण जैसी समस्याओं को संबोधित करते हैं।

क्रिएशन में ब्लॉग से लेकर यूट्यूब तक सब कुछ शामिल है। डिजिटल रचनाकारों के पास अपने शौक को करियर में बदलने का एक अंतहीन अवसर है।

यह एक उत्कृष्ट विकल्प क्यों हैः मीडिया नौकरियां लचीलापन, रचनात्मकता और आत्म अभिव्यक्ति के लिए संभावना की अनुमति देती हैं।

निष्कर्षः विभिन्न कैरियर विकल्पों की खोज तरीका है

अपने किशोर को उन नौकरियों की कोशिश करने के लिए राजी करना जो ऑफ-सेंटर लगती हैं, असंख्य क्षेत्रों के लिए रास्ते बनाती हैं। चाहे वे कलात्मक करियर में प्रवाहित हों, समावेश की वकालत में शामिल हों, या चिकित्सा क्षेत्र में वैकल्पिक करियर की ओर जाएं, या यहां तक कि उन अभियानों में शामिल हों जो पर्यावरण के बेहतर काम करते हैं, ये विकल्प कई प्रकार की प्रतिभाओं के बीच साझा किए जाने हैं और रुचियां।

आप, एक माता-पिता के रूप में, अपने बच्चे के अनुभव का समर्थन कर सकते हैं और उन्हें उस तरह का व्यक्ति बनने के लिए सशक्त बना सकते हैं जो रूढ़ियों की सीमा से परे है। आप दोनों एक यात्रा पर जा सकते हैं जहां उन युवा पाइप सपनों को बाद में बड़े होने वाले चरणों के साथ विलय कर दिया जाता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलौट पंजाब

वर्षावनों के नष्ट होने से संकट में मानव अस्तित्व

विजय गर्ग

वैश्विक जलवायु संतुलन बनाए रखने में सर्वाधिक निर्णायक भूमिका वर्षा वनों की मानी जाती है। लिहाजा इन्हें संरक्षित किए जाने के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से 22 जून को 'विश्व वर्षावन दिवस' का आयोजन किया जाता है। कल इसका आयोजन किया गया। यह एक ऐसा वैश्विक अवसर है, जो हमें वर्षावनों की महत्ता, उनकी दुर्दशा और उनके संरक्षण की आवश्यकता को समझने के लिए प्रेरित करता है । वर्षावनों को पृथ्वी का फेफड़ा कहा जाता है, क्योंकि पृथ्वी के वायुमंडल से विशाल मात्रा में कार्बन डाईआक्साइड अवशोषित कर आक्सीजन का सृजन करते हैं।

ब्राजील में अमेजन का दो-तिहाई हिस्सा स्थित है, वहां वर्ष 2001 से 2023 के बीच 6.89 करोड़ हेक्टेयर वृक्ष आवरण नष्ट हो चुका है, जो विश्व की कुल वन कटाई का 43 प्रतिशत है। यूनिवर्सिटी आफ मैरीलैंड की 2024 की रिपोर्ट बताती है कि बीते वर्ष अमेजन क्षेत्र में हर मिनट औसतन 10 फुटबाल मैदान के बराबर वन क्षेत्र समाप्त हुआ, जो अब तक का सबसे गंभीर रिकार्ड है। अफ्रीका, दक्षिण एशिया, इंडोनेशिया, कांगो बेसिन, मध्य अमेरिका और मलेशिया जैसे क्षेत्रों के वर्षावन भी व्यापक विनाश की स्थिति में पहुंच चुके हैं । कृषि विस्तार, अवैध खनन, वनों की अवैध कटाई, शहरीकरण, बांध निर्माण, सड़क परियोजनाएं और जलवायु परिवर्तन जैसी गतिविधियां वर्षावनों को निगल रही हैं। उल्लेखनीय है कि विश्व में लगभग 3.3 करोड़ लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से वर्षावनों पर निर्भर करते हैं, जिनमें 80 से 90 प्रतिशत लोग छोटे और मध्यम स्तर के उद्यम संचालक होते हैं। वर्षावन आधारित परागण तंत्र दुनिया की लगभग 75 प्रतिशत प्रमुख फसलों के लिए आवश्यक है। यही कारण है कि वर्षावनों को भोजन सुरक्षा की पहली पंक्ति माना जाता है। वर्षावनों का विनाश तीन बड़े संकटों- जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का क्षरण और मानव स्वास्थ्य संकट को जन्म देता है। वैज्ञानिक शोधों से सिद्ध हो चुका है कि वर्षावन 90 से 140 अरब टन कार्बन डाईआक्साइड संग्रहित करते हैं। लिहाजा इन वनों का संरक्षण जरूरी है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

समीक्षा: "चूल्हे से चाँद तक" — चूल्हे की आँच से चाँद की कविता तक की यात्रा

✍ समीक्षक: सोनल शर्मा, देहरादून

प्रियंका सौरभ का यह काव्य संग्रह 'चूल्हे से चाँद तक' केवल कविता नहीं, स्त्री आत्मा की यात्रा है। यह वह आवाज़ है, जिसे सदियों से दबाया गया, पर वह फिर भी जलती रही – रोटियों के साथ, परातों के बीच, और आँसुओं में घुली स्याही के माध्यम से।

इस संग्रह की कविताएं परंपरा और प्रतिरोध के बीच की वह खाई भरती हैं, जो पितृसत्ता ने पीढ़ियों से गहरी की है। इन कविताओं में स्त्री केवल 'प्रेरणा' नहीं है, बल्कि वह स्वयं कविता है — जिसमें भाव भी है, लय भी और आक्रोश भी।

◇ स्त्री की आत्मा से निकली चीख: 'चूल्हे से चाँद तक की यात्रा'

संग्रह की शीर्षक कविता ही इस संकलन की आत्मा है। यह उस अनाम, अनदेखी स्त्री की कहानी है, जो इतिहास में दर्ज नहीं, पर हर घर की नींव रही है। कविता की आरंभिक पंक्तियाँ ही पाठक को चौंका देती हैं:

"न रच सकी इतिहास में जितनी लड़ाइयाँ,
उतनी लड़ी है वह — खामोश, मगर पूरी ताक़त से।"

यह कविता बताती है कि स्त्री की हर दैनिक गतिविधि एक संघर्ष है — परात में गूंथा आटा, माँजे गए बर्तन, आँखों की राख — सब कुछ क्रांति के प्रतीक हैं। जब वह चूल्हे से चाँद तक पहुँचती है, तो यह केवल भौगोलिक नहीं, आत्मिक और वैचारिक उड़ान है। कविता कहती है:

"कविता ने जब यह पहचाना,
तब लिखी गई स्त्री की पहली मुकम्मल कहानी।"

◇ देशभक्ति की चुप सिसकियाँ: 'घूंघट से गूंज तक'

यह कविता एक शहीद की मौत को केवल एक व्यक्ति की मृत्यु नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए छाया हुआ शून्य मानती है। यह रचना वीरगाथा नहीं, भावनाओं की गठरी है, जिसमें हर सदस्य का दर्द गूंजता है:

"शहीद होती है बहन की राखी,
जो अब सिर्फ़ तस्वीरों में कलाई तलाशती है।
शहीद होती है माँ की ममता,
जो दीपावली पर दीप बन जलती है — बिना उत्तर के।"

यहाँ प्रियंका ने सैनिक के परिवार के टूटते तंतुओं

को ऐसा काव्यात्मक आकार दिया है, जो किसी रिपोर्ताज से अधिक विश्वसनीय और मार्मिक लगता है।

◇ प्रेम की पुनर्परिभाषा: 'वो स्त्रियाँ सौभाग्यशाली थीं'

यह कविता समकालीन स्त्री विमर्श में प्रेम की एक नई भाषा गढ़ती है। यह स्त्री को पूजा की वस्तु नहीं बनाती, बल्कि उसे बराबरी का स्पर्श देती है। प्रियंका सौरभ लिखती हैं:

"वो पुरुष जो प्रेम में पूजा नहीं,
पर बराबरी का स्पर्श दे सका।
जो स्त्री को 'कम' नहीं,
'कभी' नहीं कह सका।"

इस कविता की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह 'प्रेम' को बिना ग्लैमर के, पूरी आत्मीयता से प्रस्तुत करती है — जहाँ स्त्री एक व्यक्ति बनती है, न कि केवल रिश्तों में गूंथी गई एक परछाई।

◇ आत्ममंथन का महाभारत: 'तुम शकुनि नहीं, पर बनते क्यों हो?'

यह रचना एक आत्मालोचनात्मक प्रस्तुति है, जो पाठक से संवाद करती है। कविता किसी दूसरे को नहीं, बल्कि स्वयं को संबोधित है — अपने भीतर के षड्यंत्र को पहचानने की कोशिश:

"तुम्हारे भीतर की महाभारत,
अभी भी अधूरी है, जारी है।
जागो उस भीतर के युद्ध से,
और अपने साये को स्वीकारो।"

यह कविता बहुत कम शब्दों में वह बेचैनी पैदा करती है, जो समाज को नहीं, व्यक्ति को बदलने का आग्रह करती है।

◇ शिक्षा और पक्षपात की त्रासदी: 'द्रोणाचार्य की वर्ग नीति'

प्रियंका की यह कविता हमारे सामाजिक-शैक्षणिक ढाँचे की पोल खोलती है। 'द्रोणाचार्य' जैसे प्रतिष्ठित प्रतीक के माध्यम से वह यह दिखाने में सफल होती हैं कि न्याय केवल शिक्षा नहीं, साहस भी मांगता है:

"ज्ञान बाँटना मेरा कर्म था,
पर न्याय कहीं खो गया।
वर्ग नीति ने उसे बंदी बना लिया।"

यह कविता उस शिक्षकीय विफलता की बात करती है, जो ज्ञान को वर्ग विशेष के लिए सीमित कर देती है।

📌 शिल्प और भाषा

प्रियंका की भाषा सीधी, पर सशक्त है। वह प्रतीकों के माध्यम से बात करती हैं — परात, दुपट्टा, चूड़ियाँ, घूंघट, राखी, छाया — ये सब कुछ उनके काव्य-लोक के जीवंत पात्र बन जाते हैं। उन्होंने हर कविता को केवल छंद में नहीं, चेतना में बुना है।

उनकी कविताओं में कहीं भी दिखावे की शैली नहीं है। वे सहजता से गहरे अर्थों को पिरोती हैं। यह संग्रह छंदबद्धता या अलंकरण के पीछे नहीं भागता, बल्कि मर्म की तलाश करता है।

'चूल्हे से चाँद तक' उस स्त्री की आवाज़ है, जिसे सदियों तक बस 'प्रेरणा' बनाकर रखा गया। यह संग्रह कहता है कि अब समय है, जब स्त्री स्वयं कविता बने — शस्त्र बने — और अपने सपनों की परिभाषा लिखे।

यह काव्य-संग्रह हर उस पाठक के लिए ज़रूरी है, जो कविता को केवल पढ़ना नहीं, जीना चाहता है। इसमें आँसू भी हैं, प्रतिरोध भी, और सबसे महत्वपूर्ण — उम्मीद भी।

यह संग्रह हिंदी कविता की नई स्त्री-आवाज़ों में एक सशक्त हस्ताक्षर है, जो पाठक के मन में देर तक गूंजता है।

पुस्तक का नाम:
चूल्हे से चाँद तक (हिंदी काव्य संग्रह)
लेखिका:
प्रियंका सौरभ
#333, परी वाटिका, कौशल्या भवन,
वी.पी.ओ. बरवां, सिवानी,
भिवानी, हरियाणा – 127045
701537570। 01255-281381
priyankasauabh9416@gmail.com

समीक्षक:
सोनल शर्मा, देहरादून

प्रकाशक:
आर.के. फीचर्स, प्रज्ञानशाला (पंजीकृत)
भिवानी, हरियाणा, भारत

प्रथम संस्करण: 2025
आईएसबीएन (ISBN): 978-0-6335-1903-2
मूल्य: ₹250/-
भाषा: हिंदी
प्रकार: काव्य-संग्रह
पृष्ठ संख्या: 111
प्रिंट प्रकार: पेपरबैक / परंपरागत मुद्रण

महासागर सफाई सफलतापूर्वक महान प्रशांत कचरा पैच में प्लास्टिक पकड़ता है

विजय गर्ग

कैलिफोर्निया और हवाई के बीच घूमता हुआ मानव जाति का शर्मनाक बकवास पदचिह्न अभी-अभी अपने मैच को पूरा कर सकता है।

विकास में वर्षों के बाद, महासागर क्लीनअप आधिकारिक तौर पर शुरू हुआ है - महान प्रशांत कचरा पैच के लिए अंत की शुरुआत का संकेत। उद्यमी बोयान स्लैट को विनाशकारी प्लास्टिक के दुनिया के महासागरों को शुद्ध करने के लिए एक प्रणाली विकसित करने में छह साल हो गए हैं।

सात साल पहले इस यात्रा की शुरुआत करने के बाद, उच्च समुद्रों के अक्षम्य वातावरण में परीक्षण का यह पहला वर्ष दृढ़ता से इंगित करता है कि हमारी दृष्टि प्राप्य है और प्लास्टिक कचरे के समुद्र से छुटकारा पाने के हमारे मिशन की शुरुआत, जो दशकों से संचित है, हमारे भीतर है जगहें।

स्लैट ने 2013 में गैर-लाभकारी रद ओशन क्लीनअप्र की स्थापना की, जो एक परोपकारी लक्ष्य के साथ एक महत्वाकांक्षी परियोजना है; प्रशांत महासागर में कचरा-लादेन भंवर से प्लास्टिक को हटाना, एक कचरा राक्षसी जो टेक्सास के आकार को दोगुना करता है। समूह ने एक यू-आकार का पकड़ने वाला उपकरण डिज़ाइन किया जो एक विशाल हाथ की तरह प्लास्टिक को अपनी तह में इकट्ठा करता है, अनिवार्य रूप से गहरे महासागर में एक समुद्र तट बनाता है। इस परियोजना में एक अस्थायी 2,000 फुट के उछाल के साथ एक आपूर्ति जहाज शामिल है जो समुद्री प्लास्टिक एकत्र करता है, इसलिए इसे पुनर्नवीनीकरण किया जा सकता है। सिस्टम में एक पतला 10-फुट स्कर्ट शामिल है जो सतह के ठीक नीचे तैरते हुए प्लास्टिक को पकड़ता है।

सिस्टम 001 / बी का उद्देश्य संशोधनों का परीक्षण करना था, मुख्य रूप से सिस्टम और प्लास्टिक के बीच असंगत गति अंतर को सही करने का लक्ष्य था। पैराशूट सी एंकर के साथ सिस्टम को कम करके संगति का एहसास हुआ, जिससे तेजी से चलने वाले प्लास्टिक मलबे को सिस्टम में तैरने की अनुमति मिली। इस चुनौती के समाधान के कारण एक और। प्लास्टिक बूम के ऊपर तैर कर अभी भी सिस्टम से बच रहा था।

"और अब हम वही कर पा रहे हैं जिसे आप कॉर्कलाइन कहते हैं, इसलिए एक बड़ी बाधा जो सतह पर तैर रही है, जो प्लास्टिक को वास्तव में सिस्टम को फिर से छोड़ने से रोकती है,"

अब तक, टीम ने प्लास्टिक की वस्तुओं की एक बड़ी विविधता एकत्र की है। बड़े मछली पकड़ने के जाल से लेकर डिब्बों और बक्से जैसी प्लास्टिक की वस्तुओं तक। सिस्टम माइक्रो-प्लास्टिक को पकड़ने में भी प्रभावी साबित हुआ है, जिसकी लंबाई 1 मिलीमीटर है।

हालांकि अभी भी अपने शुरुआती दौर में, "द ओशन क्लीनअप्र परियोजना हमारे महासागरों की सफाई और उन पर भरोसा करने वाले नाजुक पारिस्थितिक तंत्रों की रक्षा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् वैज्ञानिक, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

जहां गणना है, वहीं निर्णय है; जहां निर्णय है, वहीं विकास है

[हर आंकड़ा एक संकेत है — परिवर्तन का, चेतना का, प्रगति का]

आंकड़े केवल संख्याएं नहीं, वे समाज का जीवंत चेहरा हैं—हर अंक में छिपी है एक कहानी, हर गणना में बसता है सत्य, और हर तथ्य में बसता है भविष्य का सपना। 29 जून को मनाया जाने वाला राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस महज एक तारीख नहीं, बल्कि एक प्रेरक आह्वान है—वह आह्वान जो तथ्यों की ताकत से भारत को प्रगति की नई ऊंचाइयों तक ले जाता है। यह दिन भारत के महान सांख्यिकीविद् प्रोफेसर प्रशांत चंद्र महालनोबिस की दूरदर्शिता को सलाम करता है, जिन्होंने सांख्यिकी को केवल गणित का हिस्सा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का आधार बनाया। 2025 की थीम, ₹निर्णय लेने के लिए आंकड़ों का उपयोग₹, हमें याद दिलाती है कि सही आंकड़े सही निर्णयों का प्राण हैं। यह दिन हमें प्रेरित करता है कि हम अंधेरे अनुमानों को त्यागें और तथ्यों की रोशनी में एक सशक्त, समृद्ध भारत का निर्माण करें।

सांख्यिकी वह जादुई चश्मा है, जो समाज की जटिलताओं को सरल बनाता है और सत्य को उजागर करता है। भारत जैसे विविधता से भरे देश में, जहां हर क्षेत्र, हर समुदाय और हर व्यक्ति की अपनी कहानी और चुनौतियां हैं, सांख्यिकी वह दिशासूचक यंत्र है, जो नीति निर्माताओं को सही रास्ता दिखाता है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएसओ) के 2022-23 के आंकड़ों के अनुसार, ग्रामीण भारत में प्रति व्यक्ति मासिक खर्च 3,773 रुपये और शहरी क्षेत्रों में 6,459 रुपये था। ये आंकड़े न केवल आर्थिक असमानता को दर्शाते हैं, बल्कि नीतियों को समावेशी और प्रभावी बनाने में भी मदद करते हैं। 2025 की थीम ₹निर्णय लेने के लिए आंकड़ों का उपयोग₹ इस बात पर बल देती है कि सटीक डेटा के बिना न तो ₹मेक इन इंडिया₹ जैसी महत्वाकांक्षी पहल सफल हो सकती हैं और न ही ₹आयुष्मान भारत₹ जैसी योजनाएं लाखों लोगों तक पहुंच सकती हैं। सांख्यिकी वह आधार है, जो स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, पर्यावरण और शासन जैसे हर क्षेत्र में तथ्य-आधारित निर्णयों को संभव बनाता है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस का उद्देश्य केवल विशेषज्ञों या शोधकर्ताओं तक सीमित नहीं है। यह दिन हर नागरिक, विशेषकर युवाओं और विद्यार्थियों को सांख्यिकी की ताकत से जोड़ने का अवसर है। 2025 की थीम हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि आंकड़े न केवल बड़े नीतिगत निर्णयों के लिए, बल्कि हमारे रोजमर्रा के जीवन में भी महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, कोविड-19 महामारी के दौरान सांख्यिकीय मॉडलिंग ने टीकाकरण रणनीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत ने 2021-22 में 2 बिलियन से अधिक वैक्सीन खुराकें वितरित कीं, जो सटीक डेटा और विश्लेषण के बिना असंभव था। इसी तरह, डेटा साइंस, मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे आधुनिक क्षेत्र सांख्यिकी की नींव पर खड़े हैं। विश्व बैंक के अनुसार, 2024 में वैश्विक डेटा उत्पादन 147 जेटाबाइट्स तक पहुंच गया, और यह आंकड़ा 2025 में और बढ़ने की उम्मीद है। लेकिन इस विशाल डेटा का उपयोग तभी संभव है, जब हमारे पास सांख्यिकीय साक्षरता और कुशल जनशक्ति हो।

प्रो. महालनोबिस की दूरदर्शिता ने भारत में सांख्यिकी को एक नया आयाम दिया। उनकी स्थापित भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आईएसआई) आज भी वैश्विक स्तर पर शोध और विश्लेषण का एक प्रमुख केंद्र है। उनके द्वारा शुरू किया गया राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएस) देश की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को समझने का मजबूत आधार प्रदान करता है। उनकी ₹महालनोबिस दूरी₹ (महालनोबिस डिस्टन्स) आज भी डेटा साइंस और मशीन लर्निंग में व्यापक रूप से उपयोग होती है, जो उनकी सोच की प्रासंगिकता को दर्शाता है। महालनोबिस का मानना था कि सांख्यिकी केवल संख्याओं का खेल नहीं, बल्कि समाज को समझने और उसका कल्याण करने का दृष्टिकोण है। उनकी यह सोच आज के डिजिटल युग में और भी प्रासंगिक हो गई है, जहां बिग डेटा और डेटा एनालिटिक्स सांख्यिकी की नींव पर फल-फूल रहे हैं। भारतीय डेटा साइंस बाजार 2025 तक 16 बिलियन डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है, और यह सांख्यिकी की शक्ति का ही प्रमाण है।

सांख्यिकी का महत्व केवल नीतियों तक सीमित नहीं है। यह समाज के हर वर्ग को सशक्त बनाती है। एक किसान मौसम के आंकड़ों के आधार पर फसल की बुआई करता है, एक उद्यमी उपभोक्ता व्यवहार के डेटा के आधार पर व्यवसाय बढ़ाता है, और एक छात्र डेटा विश्लेषण के जरिए भविष्य की तकनीकों को समझता है। 2025 की थीम हमें यह सिखाती है कि सही आंकड़े सही समय पर सही निर्णय लेने की कुंजी हैं। लेकिन इसके लिए सांख्यिकीय साक्षरता जरूरी है। भारत में सांख्यिकी शिक्षा को बढ़ावा देना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हमें अफवाहों और भावनात्मक निर्णयों से बचना चाहिए और तथ्यों पर आधारित सोच को अपनाना चाहिए। एक सटीक आंकड़ा कई बार एक बड़े सामाजिक परिवर्तन की नींव बन सकता है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एक आंदोलन है—सत्य की खोज, तथ्यों पर आधारित निर्णय और एक समृद्ध भारत के निर्माण का आंदोलन। यह दिन हमें प्रेरित करता है कि हम सांख्यिकी को न केवल एक विषय के रूप में देखें, बल्कि इसे समाज के हर क्षेत्र में लागू करें। इस दिन संकल्प लें कि हम आंकड़ों की शक्ति को अपनाएंगे, सांख्यिकीय जागरूकता को बढ़ाएंगे और एक ऐसे भारत का निर्माण करेंगे, जहां हर निर्णय तथ्यों पर आधारित हो। क्योंकि जब आंकड़े बोलते हैं, तो समाज बदलता है, और जब समाज बदलता है, तो भारत विश्व मंच पर एक नई पहचान बनाता है। आंकड़े मौन हैं, लेकिन उनके बोल सत्य की गूंज हैं—इस गूंज को सुनें और एक सशक्त भारत का निर्माण करें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

स्मृतिशेष - कविकुल में अब फक्कड़ नहीं बचा- गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'

एक दिन के अन्तर से क्रमशः तीन कवियों पद्मश्री डॉ सुरेन्द्र दुबे जी, सुरेश फक्कड़ जी, जमुना प्रसाद पाण्डे अबोध जी के परलोकगमन का मतलब साहित्य के तीन सितारों का डूबना है। जिनकी उपस्थिति मात्र से अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों के मंचों पर कई रसों की आभा विभामय हो जाती थी। सात्विकी आचरण स्वतः प्रतिभाषित हो जाते थे। जिन्होंने अपनी लेखनी और वाचिक कविताई से समाज को संस्कार दिए, जो कभी हमारे बीच बैठकर अपने आचरणों से हमें भी बहुत कुछ सिखा जाते थे, ऐसे तीनों कवि देवताओं की संगत करने के लिए हमें छोड़कर स्वर्ग सिधार गए। तीनों विभूषित विभूतियों को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इस लेख में कविवर सुरेश फक्कड़ जी के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ।

बैसवाड़े की धरती ने लगभग सभी क्षेत्रों में एक से बढ़कर एक विभूतियाँ दीं हैं। जिनकी खनक और गमक समूचे भारत को ही नहीं अपितु दुनिया को प्रभावित करती रही है। इन्हीं में एक विभूति का नाम है सुरेश सिंह फक्कड़, कवि सम्मेलनों के मंच पर उनकी गरिमामयी उपस्थिति की छाप लम्बे समय तक अनुभूत की जाती रहेगी।

अपनी कविताओं के माध्यम से उन्नाव जनपद के नाम को दूर-दूर तक प्रकाशित करने वाले वीर रस के इस अनूठे कवि ने ग्राम विकास अधिकारी के रूप में फिर एडीओ के रूप में बीघापुर ब्लॉक में अपनी श्लाघनीय सेवाएँ जिस समर्पण भाव से दीं वह भाव नई पौध को प्रेरित करता रहेगा। कभी किसी जरूरतमन्द के कार्य को उन्होंने टाला नहीं। इस कवि का असमय चले जाना साहित्य जगत को दुःखी कर गया। वे पिछले कई दिन से कानपुर के एक निजी अस्पताल में लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर थे, उनके जाने से काव्य जगत को जो साहित्यिक क्षति हुई, उसे लम्बे समय तक भरा नहीं जा सकेगा। युग का एक ऐसा कवि जिसने कविता पढ़ने के लिए मान देय की कभी माग नहीं की। जो मिल गया उसमें सन्तोष कर लिया। इतना ही नहीं कवि सम्मेलन से मिलने वाले लिफाफे को कभी खोल कर नहीं देखा। देश के लिए बलिदान देने वाले शहीदों के प्रति उनकी समर्पित श्रद्धा अवर्णनीय है।

कई प्रेरक आदर्शों को उन्होंने अपने आचरण में उतारा था। कोलकाता के हमारे मित्र विश्वजीत शर्मा ने कवि सम्मेलन का आयोजन किया तो दूसरे दिन कोलकाता में ही आयोजित दूसरे कवि सम्मेलनों में हिस्सा न लेते हुए वे खुदीराम बोस की प्रतिमा पर किराए पर कार लेकर अकेले पुष्प अर्पित करने चले गए। खुदीराम बोस की समाधि मुजफ्फरपुर (बिहार) में है। यह स्थान कोलकाता से लगभग 680 किमी दूर है। Specifically, उनका स्मारक मुजफ्फरपुर जेल के पास, बूढ़ी गंडक नदी के तट पर स्थित है। 11 अगस्त,1908 को खुदीराम बोस को मुजफ्फरपुर जेल में फाँसी दी गई थी। उनकी चिता का स्थल चन्दवारा में सोडा गोदाम चौक के पास गण्डक नदी के तट पर बनाया गया था। मुजफ्फरपुर जेल का नाम बदलकर खुदीराम बोस मेमोरियल सेंट्रल जेल कर दिया गया है।

11 जून को मुम्बई के कवि डॉ राज बुन्देली ने मुझे बताया कि फक्कड़ जी बहुत बीमार चल रहे हैं, यह जानकर बहुत दुख हुआ और 12 जून को मैंने फक्कड़ जी को फोन लगाया 3 मिनट 13 सेकंड तक बात होती रही। वे अस्पताल में विस्तर पर थे। उन्होंने अपने लीवर की समस्या बताई कहा लाइफ सपोर्ट पर हूँ, तकलीफ तो है देखो क्या होता है। बड़े प्रसन्न हुए और मेरे द्वारा फोन किए जाने पर अपने आनन्द के अनुभव को साझा किया। जैसा कवियों में होता है मैं तेरी मनुहार करूँ तू मेरी मनुहार कर, इस आलम्ब से बात चलती रही। वे मुझे भदौरिया न कहते हुए भदवरिया सा. कहते थे। बात समाप्त करते-करते उन्होंने कहा भदवरिया साहब ईश्वर ने साथ दिया तो मंच पर एक बार आपके साथ फिर रचनाएँ सुनाऊँगा। उस समय बात करते हुए 1 मिनट को भी ऐसा नहीं लगा कि फक्कड़ जी 15 दिन बाद ही हमें छोड़ कर चले जायेंगे। किसी शाइर का एक शेर आज मुकम्मल हो गया-

"कल तो कहते थे कि बिस्तर से उठा जाता नहीं,
आज दुनिया से चले जाने की ताकत आ गई।"

शायद ही कोई ऐसा मंचीय कवि होगा जो उन्हें न जानता हो। ईश्वर ने उन्हें किस माटी का बनाया था नहीं मालूम। हर व्यक्ति उनको बड़ी मुश्किल से समझ पाता था। सन्तत्व और वीरत्व दोनों का समावेश उनके व्यवहार में समाविष्ट था। उनका स्नेह प्रगाढ़ता की पराकाष्ठा को चूमता था, वहीं उनका क्रोध भी ऐसा कि आ गया तो किसी को न छोड़े। न जाने कितने ही कवियों को उन्होंने जी भर कर दुलारा और दुलारा ही नहीं संरक्षण भी दिया तो न जाने कितनों को उन्होंने अपना अघोषित और प्रच्छन्न निन्दक भी बना लिया था। मंच पर दूसरों की कविताएँ पढ़ने वाले और नशाखोर कवि उनसे बुरी तरह घबराते थे। नशाखोरी से उन्हें बेहद घृणा थी।

वे सिद्धान्तों और अपने नियमों को मानने वाले पक्के सदाचारी थे। कवि सम्मेलन के मंचों के अपराजेय इस योद्धा ने मान देय रूप में मिली धनराशि के लिफाफे में कितने रुपए रखे हैं, कभी खोल कर नहीं देखे। ईमानदारी और धर्म धारणा के साक्षात दर्शन थे। मुम्बई, कोलकाता, बाराँ, भुवनेश्वर कोटा, इन्दौर, झालावाड़ व अन्य कई शहरों में हमने डॉ राज बुन्देली, सुरेश फक्कड़, जगदीश जलजला, डॉ सुरेश पराग, डॉ शिवा त्रिपाठी आदि कई स्वनामधन्य कवियों ने साथ-साथ खूब काव्यपाठ किये हैं। श्रोता गण सुबह 7 बजे तक सुनते रहते थे। इनमें फक्कड़ जी का काव्य पाठ बहुत चमत्कारी होता था।

फक्कड़ जी यथा नाम तथा गुण थे। पूरी तरह अलमस्त होने के साथ-साथ वे मन से भी फक्कड़ ही थे। फक्कड़ता जुनूनी होती है। यह कभी दिव्यता से विभूषित होती है तो कभी उद्दाम उद्दीपन से कजरारी और परिहेय भी। ऐसे अक्खड़ फक्कड़ ही कुछ अनूठा कर पाते हैं। कविता से श्रोताओं के दिल में सीधे उतर जाने की जो शक्ति सरस्वती ने उन्हें सौंपी थी, वह बड़े-बड़े कवियों को प्राप्त नहीं होती। लखनऊ के पुनीत सन्देश में मेरी पहली रचना फक्कड़ जी ने ही प्रकाशित करवाई थी। तभी से सम्पादक कृष्ण कुमार सिंह जी से व अनिल सिंह चौहान जी से मेरे व्यक्तिगत सम्बन्ध बने हैं। सच कहूँ तो फक्कड़ जैसा कवि ढूँढो तो भी न मिलेगा।

उनके "कविता और विश्वास" नामक एक आलेख से उनके जीवन के व्यवहार का किंचित दर्शन मिल जायेगा। उनके शब्दों में "कवियों का लक्ष्मी से बैर है। यह कहावत कभी सच थी। लेकिन पहले के कवि निर्धन नहीं, फक्कड़पन के बादशाह होते थे। वे तुलसी बाबा की तरह सिंहासन को ललकारते थे। तुलसी अब का होयेंगे नर के मनसबदार। भाई संतन को कहा सीकरी सों काम ?

मैंने तो अब तक जितने कविता जीवी श्रद्धेय बड़े कवियो को अपने आयोजनों में बुलाया उनमें दो चार को छोड़ किसी ने कभी लिफाफे की बात तक नहीं की है।

अब कवियों के पास अकूत लक्ष्मी हैं। एक कविता के पढ़ने पर लाखों का पेमेंट होता है। कवियों का स्तर ऊँचा उठाने में उन्हें शानदार सम्मान दिलाने में सारा योगदान बेशक प्रतिभा के अत्यन्त धनी, प्रत्युत्पन्न मति वाले कुमार विश्वास को जाता है। उनकी प्रतिभा पर किसी को कोई शक नहीं होना चाहिए, नहीं उनकी निष्ठा पर ही उँगली उठ सकती है, पर इसका परिणाम इतना खराब हुआ कि कविता आज साधना नहीं उद्योग बन गई है। कविता मसखरी, लफ्फाजी, द्विअर्थी संवाद और चरित्र हीनता से इस हद तक गिरी कि मिर्जापुर 2 जैसी पिक्चर बनानी पड़ी। कवि तो राजा हो गए पर कविता भिखारिन हो गई।

पहले जो श्रोता पूरी रात बैठकर कविता सुनते थे और न जाने कितनी कविताएँ याद कर लेते थे, जो कवि देवता की तरह त्रिकाल दर्शी बनकर एक दोहे से रंग भवन में डूबे राजा जयसिंह का पूरा जीवन ही बदल देते थे। वे मंचों से बहुत दूर हो गये। आज के अधिकांश कवि विभिन्न दलों के प्रवक्ता हो गए हैं। कुछ कवि आज बी जे पी के दरबारी हैं किन्तु भविष्य की आशंका से चोरी छुपे सैंफई के चक्कर लगाने लगे हैं। अच्छे श्रोता और कविता जीवी कवि मंच से बहुत दूर हो गए हैं।

देश में पैसों का ग्लैमर देख करोड़ों कवि हो गए हैं, न जाने कितनी बहनें आर्केस्ट्रा से आकर इस क्षेत्र में एक साल बाद जहाज से उड़ने लगीं हैं। कविता चोर अब डकैत हो गए हैं। बड़े-बड़े कवि यह सब देखकर भी मौन हो जाते हैं, इतना ही नहीं उनकी पीठ थपथपाते हैं। आखिर वे आयोजक जो हैं ना! सुनते हैं चरित्रहीनता अब समूह में भी होने लगी है। कवि जो आयोजक नहीं है वो कवि है ही नही। कई नामधारी कवि वा आयोजक बाल दिवस को सबसे बड़ा त्योहार मानते हैं। आज के नामधरी कवि कवि सम्मेलन का ठेका लेते हैं।

कुमार जी आपने जो कदम एक पुनीत उद्देश्य लेकर उठाया था वो इतना विकृत हो जायेगा शायद आपको भी इसका अंदाजा नहीं रहा होगा। इसका कुछ तो दोषी आपको इतिहास कहेगा। हमारी कुछ बहनें बहुत विदुषी हैं, मौलिक हैं पर वे इन जिस्म खोरों के खिलाफ कुछ बोलती नहीं हैं। मैं कई लोगो को जानता हूँ जो कुमार जी को पानी पी-पी कर गरियाते हैं किन्तु उनके द्वारा मंच मिलते ही उन्हें फरिश्ता बताने लगते हैं। कुछ चुटकुले बाजों, चोरों के खिलाफ लिखते तो बहुत हैं पर किसी का नाम बताने में उनकी नानी मर जाती है। क्या भारत में है कोई कवि ऐसा है जो फक्कड़ की तरह मंच पर घंटी बजवा सके। किसी चोर को कविता पढ़ते समय ही माइक से हटा दे ?? मेरे भाई ऊँट की चोरी निहुरे निहुरे नहीं होती है। आशीष अनल ने जो मिशन चलाया है उसका साथ दें सभी, तभी कविता कोमा से बाहर आकर अपनी पुरानी प्रतिष्ठा पा सकेगी।"

उनके काव्य कथ्य की बानगी दो छोटी रचनाओं से देना चाहूँगा- पहला मुक्तक श्रृंगार का है तो दूसरा कवित्त देश प्रेम को दर्शाता है देखिए- श्रृंगार का एक मुक्तक- "फूल शबनम से जल गया होगा, रुख हवा का बदल गया होगा। रात में छत पर तुम खड़ी होगी, चाँद का दम निकल गया होगा।।"

देश प्रेम का एक कवित्त- "जहाँ गर्भ में युद्ध की सीखें कला अभिमन्यु विशेष का देश है ये। जहाँ बालक सिंह के दाँत गिनें ऐसी वीरता का परिवेश है ये।। सवा लाख से एक लड़ाते जहाँ वहाँ वाहे गुरु दशमेश है ये, श्रीराम ने जन्म जहाँ पै लिया ऐसा पावन भारत देश है ये।।"

उन्नाव के सेरमपुर गाँव में जन्मे धानी खेड़ा में बस गए अभी उन्नाव में रहते थे। पनई कला में हुए कवि सम्मेलन में घण्टी वाली घटना घटी थी आगरा के एक कवि की फूहड़ कविता पाठ पर मंच पर ही फक्कड जी ने ऐसी घंटी बजाई थी कि काव्य जगत में चर्चा का विषय बन गई थी। जिन्दगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहे वीर रस के इस को लखनऊ के मेदान्ता अस्पताल ले जा रहे थे उसी समय नवाबगंज के निकट सरस्वती मेडिकल कॉलेज में उन्होंने अंतिम सांस ली। इस तरह जिन्दगी से कई बार जंग जीतने वाला फक्कड़ आज जिंदगी की जंग हार गया। यह दुखद समाचार बहुत ही पीड़ा देने वाला है। ईश्वर सभी परिजनों को इस बज्रपाती दुख को सहन करने की शक्ति दे। मैं उस विराट व्यक्तित्व को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। ईश्वर पुण्य आत्मा को सद्गति प्रदान करे एवं अपने श्रीचरणों में स्थान दे। ॐ शान्तिः! ॐ शान्तिः! ॐ शान्तिः!!

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण' इन्दौर

गुटनिरपेक्षता की नीति और ईरान का साथ

इष्ट देव सांकृत्यायन

ईरान और इजराइल के बीच चल रहे युद्ध का मसला अभी हल नहीं हुआ लेकिन ईरान ने भारत से मिले समर्थन और शांति प्रयासों में भागीदारी के लिए आभार जता दिया। क्या यह एक थोथी औपचारिकता भर है? इसके पहले कि इस तथ्य का विश्लेषण किया जाए, मैं आपको यह याद दिला देना जरूरी समझता हूँ कि कुछ ही दिनों पूर्व सोनिया गांधी ने ईरान के विरुद्ध होने को लेकर भारत सरकार की भर्त्सना की थी और स्पष्ट शब्दों में कहा था कि भारत की विदेश नीति अब 'नॉनएलाइंड' से 'ऑल एलाइंड' हो चुकी है। अपने को 'निष्पक्ष' बताने वाले कुछ पत्रकार और प्रोफेसर भी किंतु-परंतु के साथ ऐसा ही कुछ कह चुके थे।

एक अखबार में तो एक पत्रकार और प्रोफेसर ने मिलकर एक पूरा पन्ना रंग डाला था, यह बताने पर कि ईरान पर हुई बमबारी का दुष्परिणाम भारत को भुगतना पड़ेगा, पछुआ हवाओं के चलते। ये चेरनोबिल बनने जा रहा है। यह अलग बात है कि दोनों को यह पता तक नहीं कि भारत में पछुआ हवाएँ चलती कब हैं और कितने दिन। हाँ, बस ये है कि अखबार का एक पन्ना अपनी बकवास से रंगकर उन्होंने अपनी मोदी विरोधी चाहत जाहिर कर दी। चूँकि वह हवा केवल प्रधानमंत्री निवास में आएगी, ऐसा नहीं कहा जा सकता था। अतः प्रोफेसर साहिबा और पत्रकार भाई ने मिलकर इन काल्पनिक हवाओं के जरिये काल्पनिक रेडिएशन को पूरे पश्चिम भारत में फैला दिया।

भारत में दुनिया के किसी भी कोने से आने वाली हवाएँ शायद कुछ पत्रकारों और प्रोफेसरों के बस में हैं। या तो उन्होंने डोरेमॉन की तरह किसी गैजेट का आविष्कार कर लिया है, या फिर बाबा बंगाली शाह तांत्रिक की तरह कोई सर्वकार्यसाधक मंत्र सिद्ध कर लिया है वरना ये हवाएँ तब भी चल सकती थीं जब इजराइल पर बमबारी हुई थी, तब भी चल सकती थीं जब उत्तर कोरिया ने दक्षिण कोरिया, या चीन ने ताइवान, या यूक्रेन ने रूस पर बम गिराए लेकिन नहीं, तब इन हवाओं के पैर फ्रैक्चर हो गए थे या फिर इजराइल को ही उस समय नेप्चून ग्रह पर शिफ्ट कर दिया गया था। अब रेडिएशन से सजी-सँवरी हवाओं को वहाँ से इधर आने के लिए यूरेनस, गुरु और मंगल ग्रह को पार करना पड़ता। उनका मेकअप बिगड़ जाता।

अब इसके पहले कि 'नॉनएलाइंड' और 'ऑल एलाइंड' पर बात की जाए, एक और बात स्पष्ट कर लेते हैं। राजनीति की दुनिया में स्थायी कुछ नहीं होता – दोस्ती, न दुश्मनी और न ही उदासीनता। कूटनीति की दुनिया तो इससे भी क्रूर है। वहाँ तो स्थायित्व की संकल्पना तक नहीं है। मीम्स की दुनिया से बाहर निकलें तो पता चलेगा कि राजनीति में तो फिर भी देश-काल-परिस्थिति के अनुसार लोक मर्यादा का थोड़ा ध्यान रखना पड़ता है पर कूटनीति में इस बात का कोई अर्थ ही नहीं है कि लोग क्या कहेंगे।

मुझे इजराइल और ईरान दोनों से सहानुभूति है लेकिन वैसे नहीं जैसे सोनिया गांधी को है। सोनिया गांधी ने विषवमन किया था। ईरान के पक्ष में खड़े न होने के लिए मोदी को कोसा था और वह भी 'नॉन एलाइंस' के नाम पर। यह 'नॉन एलाइनमेंट' की दृष्टि से कितना सही था? राहुल गांधी तो मुनीर के अमेरिका बुलाए जाने पर ही लहालोट हुए जा रहे थे। हमारे तमाम पत्रकार-प्रोफेसर मित्र जो राहुल गांधी को ही अपनी बौद्धिक क्षमता का प्रेरणास्रोत मानते हैं, भी तब बिछे जा रहे थे। बाद में आपने देखा ही मुनीर का ऐतिहासिक रूप से कैसा बर्बर दुरुपयोग ट्रंप ने किया।

मैं यह नहीं कह रहा कि ईरान हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण है। भारत अपने करीब 78 ट्रिलियन रुपये लगा चुका है चाबहार पोर्ट पर। यह निवेश ऐसे ही नहीं किया गया था। इसके मूल में कुछ भरोसे भी हैं। तमाम कील-पेंच के बावजूद कूटनीति के अपने भरोसे भी होते हैं। भारत ने हमेशा ईरान के उस भरोसे की रक्षा की है और बहुत बार ईरान ने भी की है, केवल उन अवसरों को छोड़कर जब भारत की पाकिस्तान से बिगड़ी है। ऐसे मामलों में ईरान धीरे से पाकिस्तान के साथ हो गया है, बिलकुल वैसे ही जैसे अभी चीन उसके साथ हो गया। चीन ने कोई बम तो नहीं भेजा लेकिन धीरे से मिसाइल बनाने का काफी कुछ कच्चा माल ईरान को भेज दिया। कुछ इसी प्रकार का व्यवहार पीछे भारत-पाकिस्तान युद्धों के दौरान ईरान कर चुका है, उसी पाकिस्तान के लिए जिसने अभी एक लंच के बदले अमेरिका को ईरान के खिलाफ तमाम सुविधाएँ मुहैया कराई हैं।

बात साथ देने की करें तो इजराइल कभी पीछे नहीं रहा है। बावजूद इसके कि हमने यासर अराफात जैसे मानवता के दुश्मन आतंकवादी को सम्मानित किया जबकि वह इजराइल का दुश्मन नंबर एक था। फिर भी जरूरत पर इजराइल भारत के साथ रहा है। उस इजराइल से हम कैसे बिगाड़ सकते हैं! इजराइल से हमें इसलिए भी नहीं बिगाड़ना चाहिए क्योंकि इजराइल भी इस्लामी आतंकवाद का उतना ही शिकार है जितना कि भारत या फ्रांस और कूटनीति का तकाजा यह है कि हम ईरान से भी क्यों बिगाड़ें?

असल में 'नॉन एलाइनमेंट' यानी गुटनिरपेक्षता का यही अर्थ है। सही या गलत जो भी हो, पर भारत की नीति यही है और यह नीति नेहरू जी के समय में ही बनी थी। ऐसा नहीं कि यह नीति बनाने के लिए अकेले नेहरू जी जिम्मेदार हों लेकिन नेहरू इस नीति का पालन न कर सके। वे सोवियत संघ की गोद में बैठ गए। नेहरू क्यों गुटनिरपेक्ष नहीं रह सके और क्यों उन्हें सोवियत संघ की गोद में बैठना पड़ा, क्यों उन्हें रूस और चीन दोनों से ब्लैकमेल होना पड़ा... यह एक अलग वृत्तांत है। इस पर फिर कभी।

अब जब सोनिया गांधी या उनके चट्टे-बट्टे बुद्धिजीवी मोदी से वही गलती दुहराने की अपेक्षा कर रहे हैं तो वह भी कोई अकारण नहीं है। असल में सोनिया गांधी चाहती ये हैं कि मोदी खुले तौर पर ईरान या इजराइल के पक्ष में खड़े हों। वे कह चाहे जो रही हैं लेकिन उनका यह इरादा नहीं है कि मोदी ईरान के ही पक्ष में खड़े हों। उनकी बातों पर विचार करते हुए यह ध्यान रखें कि वे उपाध्यक्ष जॉर्ज सोरोस के फाउंडेशन की रही हैं, खामेनेई के किसी संस्थान की नहीं। जॉर्ज सोरोस कोई मुसलमान नहीं, यहूदी हैं और हर यहूदी इजराइल का पदेन नागरिक है। मैं किसी फंड-अनुदान की बात नहीं करुंगा। डीप स्टेट के सारे काम वैसे भी छद्म भेष में होते हैं।

जनगणना और आदिवासी पहचान का सवाल : (आलेख : बृंदा करात, अनुवाद : संजय पराते)

जनगणना 2027 के लिए गजट अधिसूचना में जो इतनी ज्यादा देर की गई है, उसकी हो रही आलोचना पूरी तरह से सही है, क्योंकि वादा किया गया था कि जनगणना के साथ ही जाति जनगणना की जाएगी। लेकिन गजट अधिसूचना में इस मामले में स्पष्टता का अभाव है। आदिवासी/एसटी (ये दोनों शब्द एक-दूसरे की जगह उपयोग में लाए जाते हैं) समुदायों की लंबे समय से चली आ रही इस मांग पर भी शायद ही कोई चर्चा हो कि जनगणना के हिस्से के रूप में आस्था की प्रणालियों सहित उनकी विशिष्ट पहचान को मान्यता दी जाए।

जनगणना में व्यक्ति-विशेष की धार्मिक मान्यताओं के पंजीकरण के माध्यम से देश की धार्मिक जनसांख्यिकी का पता लगाना शामिल है। उल्लिखित धर्म हिंदू धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म, सिख धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म हैं। अन्य मान्यताओं वाले लोगों के लिए ₹अन्य धार्मिक विश्वास₹ (ओआरपी) का एक और सामान्य कॉलम है, लेकिन आदिवासी/एसटी समुदायों की मान्यताओं के लिए कोई कॉलम नहीं है। कई मामलों में यह चूक असंवैधानिक है।

संविधान में आदिवासी/एसटी विश्वासों, रीति-रिवाजों और परंपराओं की सुरक्षा के लिए विशिष्ट प्रावधान हैं, जैसे कि पांचवीं और छठी अनुसूची में परिलक्षित होते हैं। इसके अलावा अनुच्छेद 371-ए और 371-बी में क्रमशः नागालैंड और मिजोरम में प्रथागत कानूनों और प्रथाओं के लिए विशिष्ट सुरक्षा है। संविधान अनुच्छेद 25 और 26 के तहत धर्म की स्वतंत्रता की गारंटी देता है, जो किसी विश्वास को मानने, उसका निर्वहन करने और प्रचार करने और धार्मिक मामलों का प्रबंधन करने के अधिकार को सुनिश्चित करता है। आदिवासियों/एसटी के लिए, इन अधिकारों को जनगणना सहित हर सामान्य कानूनी और नीतिगत ढांचे में प्रकृति पूजा और पैतृक परंपराओं पर केंद्रित अलग-अलग आस्था आधारित विश्वासों और प्रथाओं को मान्यता देने में रूपांतरित करना चाहिए। जनगणना को छह प्रमुख धर्मों या अस्पष्ट ओआरपी श्रेणी तक सीमित रखना आदिवासियों को मुख्य धारा के धर्मों के साथ गलत पहचान स्थापित करने या ओआरपी जैसी एक व्यापक और अस्पष्ट श्रेणी में धकेलने के लिए मजबूर करना है और यह संविधान के अनुच्छेद-25 की भावना का उल्लंघन करता है।

यह गलत पहचान 2011 की जनगणना के उपलब्ध आंकड़ों में भी दिखाई देती है। 2011 की जनगणना में आदिवासी/एसटी की आबादी 10.43 करोड़ या तब की कुल 120 करोड़ की आबादी का 8.6 प्रतिशत बताई गई थी। इन 10.43 करोड़ आदिवासियों/एसटी ने अपनी धार्मिक पहचान कैसे दर्ज की? अगर जनगणना की तालिका सी-01 में दिए गए ₹अन्य धार्मिक विश्वास (ओआरपी)₹ कॉलम को देखें, तो ओआरपी के तहत केवल 0.66 प्रतिशत आबादी या सिर्फ़ 79 लाख लोगों ने ही पंजीकरण कराया है, जिसका मतलब है कि एसटी समुदायों के बड़े हिस्से ने अपनी धार्मिक या आध्यात्मिक पहचान दर्ज नहीं कराई है या उन्हें दूसरे धर्मों के साथ गलत पहचान दर्ज करानी पड़ी। यह स्पष्ट रूप से अनुचित और अन्यायपूर्ण है।

एक और पहलू भी है। आदिवासी समुदायों के अधिकांश लोग दूर-दराज के ग्रामीण इलाकों में रहते हैं और उन्हें ओआरपी विकल्प के अर्थ के बारे में बहुत कम जानकारी है। यह जागरूकता केवल उन जगहों पर है, जहाँ आदिवासी संगठनों ने आदिवासी पहचान को अपनी पहचान के साधन के रूप में ओआरपी के तहत अपने विशिष्ट धर्म के पंजीकरण के बारे में सक्रिय रूप से जानकारी प्रदान की है, जहाँ ओआरपी की संख्या में वृद्धि हुई है। यह जनगणना तालिकाओं के परिशिष्ट में दिए गए ओआरपी के आगे के विश्लेषण में पाया गया है। झारखंड में जहाँ सरना आधारित लामबंदी हुई है, ओआरपी के तहत सरना के नाम पर विशेष रूप से पंजीकरण किसी भी राज्य की तुलना में सबसे अधिक था, जहाँ 49 लाख व्यक्तियों ने ओआरपी

कॉलम में सरना के रूप में पंजीकरण कराया था। मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में, जहाँ गोंड समुदाय का लामबंदी महत्वपूर्ण है, वहाँ 10 लाख से अधिक व्यक्तियों ने ओआरपी कॉलम में गोंड धर्म के रूप में पंजीकरण कराया है। दूसरे शब्दों में, जहां सामान्य जानकारी ₹अन्य धार्मिक विश्वास₹ कॉलम की अस्पष्टता को तोड़ती है, आदिवासी समुदाय अपने स्वयं के धर्मों को पंजीकृत करना पसंद करते हैं।

यह मुद्दा इसलिए महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि आदिवासी अधिकारों को प्रभावित करने वाले राजनीतिक संदर्भ बदल गए हैं। आदिवासियों के बीच ईसाई मिशनरियों और ईसाई धर्मांतरित लोगों को आरएसएस से जुड़े संगठनों द्वारा निशाना बनाया जा रहा है और यह तो जगजाहिर है ही कि बहु-प्रचारित घर वापसी कार्यक्रम आदि के जरिए पिछले कुछ सालों में इन पर हमले भी बढ़े हैं। मोदी सरकार के शासन के एक दशक में आरएसएस संगठनों के काम का विस्तार आरएसएस के इस आख्यान को मजबूत करने के लिए हुआ है कि ₹वनवासी₹ ऐतिहासिक रूप से वृहद हिंदू परिवार का हिस्सा हैं। आदिवासी समुदायों के हिंदूकरण के ये नए तरीके हैं, जिसमें राज्य की शक्ति का इस्तेमाल करके पारंपरिक आदिवासी प्रमुखों के हिस्सों को विभिन्न तरीकों से अपने साथ शामिल किया जाता है और उन पर दबाव भी बनाया जाता है। वे आदिवासी रीति-रिवाजों को हिंदू प्रथाओं के साथ जोड़ने, पारंपरिक मंत्रों के बीच हिंदू देवताओं का जश्न मनाने वाले नारे लगाने, आदिवासी इलाकों में मंदिरों का निर्माण और हिंदू त्योहारों को मनाने, हिंदू धार्मिक नारों के साथ भगवा झंडे फहराने, अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए पवित्र आदिवासी क्षेत्रों से मिट्टी लाने आदि की रणनीति के साधन बन गए हैं। प्रतिष्ठित सरकारी ईएमआर स्कूलों में पढ़ने वाले आदिवासी बच्चों को उनकी अपनी परंपराओं से ज़्यादा हिंदू रीति-रिवाज़, भजन और त्यौहारों के बारे में पढ़ाया जाता है। गरीब आदिवासी इलाकों में चल रहे आरएसएस संचालित स्कूलों के नेटवर्क के विस्तार के लिए फंड की कमी नहीं है और प्रसिद्ध कॉरपोरेटों के सीएसआर फंड आसानी से उपलब्ध हैं। मुद्दा यह है कि यह आरएसएस के मुख्य एजेंडे के हिस्से के रूप में आदिवासियों के बीच एक व्यापक हिंदुत्व पहचान के निर्माण की दिशा में एक सुविचारित योजना है।

इससे आरएसएस का घोर पाखंड और आदिवासी पहचान और संस्कृति के प्रति उसकी वास्तविक अवमानना भी उजागर होती है। आरएसएस की मांग है कि जो आदिवासी ईसाई धर्म अपनाते हैं, उनसे अनुसूचित जनजाति के रूप में उनकी मान्यता छीन ली जानी चाहिए, क्योंकि उनके अनुसार आदिवासी धर्म और मान्यताओं के प्रति निष्ठा ही यह निर्धारित करती है कि व्यक्ति आदिवासी है या नहीं। फिर भी जो आदिवासी हिंदू रीति-रिवाजों का पालन करते हैं और हिंदू देवी-देवताओं की पूजा करते हैं या खुद को हिंदू के रूप में पहचानते हैं, वे अभी भी एसटी के रूप में मान्यता के पात्र हैं। वास्तव में संवैधानिक और कानूनी स्थिति यह है कि किसी भी समुदाय या समूह को अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता देना धार्मिक संबद्धता से नहीं, बल्कि कई अन्य कारकों से जुड़ा है।

वर्तमान शासन की 'एक राष्ट्र, एक संस्कृति' परियोजना का संपूर्ण केंद्रीकरण और एकरूपता, आदिवासी समुदायों को गहराई से और नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। आदिवासी/एसटी के रूप में पहचाने जाने वाले 700 समुदायों में समानता और विविधता दोनों हैं। वास्तव में, भारत की विविधता का प्रतिनिधित्व एसटी समुदायों द्वारा किया जाता है, जो सांस्कृतिक, भाषाई और आध्यात्मिक विविधता के समृद्ध विरासत का प्रतीक हैं। आदिवासी समुदायों द्वारा हिंदुत्व में उन्हें आत्मसात करने के नए रूपों और तरीकों के खिलाफ़ कड़ा प्रतिरोध किया जा रहा है। जनगणना में आदिवासी आस्था को मान्यता देने की मांग प्रतिरोध का एक ऐसा ही रूप है।

नवंबर 2020 में हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाली झारखंड सरकार ने 2021 की जनगणना में सरना को एक अलग धर्म के रूप में शामिल करने के लिए एक प्रस्ताव पारित करने के लिए राज्य विधानसभा का एक विशेष सत्र बुलाया था। प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया गया था। यहां तक कि भाजपा ने भी इसका विरोध करने की हिम्मत नहीं की। इसे मंजूरी और समावेश के लिए केंद्र के पास भेजा गया था। कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। 2021 में होने वाली जनगणना अब 2027 में की जाएगी, लेकिन यह प्रस्ताव आज भी उतना ही प्रासंगिक है। बहरहाल, यह मुद्दा केवल एक राज्य या एक विशिष्ट आदिवासी विश्वास तक सीमित नहीं है। चूंकि सभी राज्यों और सभी आदिवासी समुदायों के बीच विश्वासों की विविधता है, इसलिए जनगणना में आदिवासी/एसटी धर्म शीर्षक से एक अलग कॉलम जोड़ा जाना चाहिए, जिसमें आदिवासी अपने विशेष विश्वास को दर्ज कर सकें। इस तरह आदिवासी धर्म उल्लिखित अन्य छह धर्मों के बराबर हो जाएंगे। इस मांग को सभी राजनीतिक दलों के समर्थन की जरूरत है और उन्हें लोकतंत्र को मजबूत करने और न्याय के लिए आदिवासियों के संवैधानिक अधिकारों को मजबूत करने के लिए इस तरह के समावेश के लिए सरकार पर दबाव बनाना चाहिए।

****('हिन्दू' से साभार। लेखिका माकपा पोलिट ब्यूरो की पूर्व सदस्य और भारत में महिला आंदोलन की जुझारू नेता हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।***

अहमदाबाद-पुरी ट्रेन में लगी आग: यात्रियों को तुरंत निकाला गया

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : कालाहांडी जिले के केसिंगा रेलवे स्टेशन पर एक बड़ी घटना घटी। अहमदाबाद से पुरी जाने वाली फास्ट ट्रेन जो टिटिलागढ़ से केसिंगा होते हुए गुजर रही थी, केसिंगा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 1 पर समय पर पहुंची। लेकिन ट्रेन के पहुंचते ही अचानक ट्रेन के बीच में एस-1 कोच में आग लग गई और धुआं निकलने लगा। आग का अहसास होते ही ट्रेन के कोच में बैठे यात्री घबराकर कोच से बाहर निकल आए। यात्री डरकर स्टेशन परिसर में ट्रेन से उतर गए। कोच में आग लगने और धुआं निकलने का अहसास होते ही स्टेशन प्रबंधक प्रशांत भोई ने आरपीएफ की मदद से आग बुझाई। ट्रेन में सवार यात्री मामूली रूप से घायल हो गए। केसिंगा रेलवे स्टेशन पर ट्रेन 40 मिनट देरी से पहुंची। बाद में ट्रेन की जांच के बाद ट्रेन सामान्य हुई और पुरी की ओर रवाना हुई। ट्रेन में अचानक आग लगने का कारण अभी पता नहीं चल पाया है, लेकिन रेलवे विभाग ने बताया है कि मामले की जांच की जा रही है। ट्रेन एक घंटे की देरी से पुरी के लिए रवाना हुई।

खेतों से विकास तक: कृषि बना अर्थव्यवस्था की रीढ़ [कृषि विकास की राह में भारत: आंकड़े बोलते हैं]

भारत की धरती, जहां हर मिट्टी का कण मेहनत और समर्पण की कहानी कहता है, आज एक नई ऊंचाई की ओर बढ़ रही है। वित्त वर्ष 2024 में कृषि क्षेत्र का उत्पादन 19.49 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया है, जो न केवल आर्थिक प्रगति का प्रतीक है, बल्कि हमारे अन्नदाताओं की मेहनत और सरकार की नीतियों का जीवंत प्रमाण भी है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) की ताजा रिपोर्ट, जो सांख्यिकी व कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एमओएसपीआई) के तहत जारी की गई, बताती है कि 2011-12 से 2023-24 के बीच कृषि और संबद्ध क्षेत्रों का सकल मूल्य उत्पादन (जीवीओ) स्थिर मूल्यों पर 54.6 प्रतिशत बढ़ा है। यह वृद्धि, जो 19.08 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 19.49 लाख करोड़ रुपये तक पहुंची, भारतीय कृषि की लचीलता और संभावनाओं को दर्शाती है। लेकिन यह सिर्फ आंकड़ों की कहानी नहीं है; यह उस किसान की कहानी है, जो सूरज की पहली किरण के साथ खेतों में उतरता है और फसलों को अपनी मेहनत से सींचता है।

कृषि क्षेत्र का योगदान केवल रुपये-पैसों में नहीं मापा जा सकता। यह भारत की आत्मा है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को जीवंत रखती है। एनएसओ की रिपोर्ट के अनुसार, फसल क्षेत्र 2023-24 में 15.95 लाख करोड़ रुपये के जीवीओ के साथ कुल कृषि जीवीओ का 54.1 प्रतिशत हिस्सा रखता है। इसमें अनाज और फल-सब्जियां 52.5 प्रतिशत योगदान देती हैं, जिनमें धान और गेहूं अकेले 85 प्रतिशत हिस्सा रखते हैं। यह आंकड़ा बताता है कि भारत की खाद्य सुरक्षा का आधार अनाज उत्पादन है, जो न केवल देश की 140 करोड़ आबादी का पेट भरता है, बल्कि वैश्विक बाजार में भी भारत को मजबूत स्थिति प्रदान करता है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, तेलंगाना और हरियाणा जैसे राज्य अनाज उत्पादन में 53 प्रतिशत योगदान देकर इस क्षेत्र की रीढ़ बने हुए हैं। उत्तर प्रदेश, जो 2011-12 में 18.6 प्रतिशत हिस्सेदारी से 2023-24 में 17.2 प्रतिशत पर आ गया, फिर भी शीर्ष पर है। यह राज्यों की मेहनत और संसाधनों का सही उपयोग दर्शाता है।

फल और सब्जी उत्पादन में भी भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है। 2023-24 में केले ने आम को पीछे छोड़ते हुए फल समूह में 47,000 करोड़ रुपये का जीवीओ दर्ज किया, जबकि आम का योगदान 46,100 करोड़ रुपये रहा। यह बदलाव न केवल बाजार की बदलती मांग को दर्शाता है, बल्कि किसानों की विविधीकरण की ओर बढ़ती रुचि को भी दर्शाता है। सब्जियों में आलू का दबदबा कायम है, जिसका जीवीओ 2011-12 के 31,300 करोड़ रुपये से बढ़कर 2023-24 में 37,200 करोड़ रुपये हो गया। फूलों की खेती ने भी इस अवधि में 17,400 करोड़ रुपये से 18,100 करोड़ रुपये तक की छलांग लगाई, जो बागवानी क्षेत्र में वाणिज्यिक अवसरों की बढ़ती संभावनाओं को उजागर करता है। ये आंकड़े न केवल उत्पादन की वृद्धि दर्शाते हैं, बल्कि यह भी बताते हैं कि भारतीय किसान अब पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर उच्च मूल्य वाली फसलों की ओर रुख कर रहे हैं।

कृषि क्षेत्र की यह प्रगति कई कारकों का परिणाम है। सरकार की योजनाएं, जैसे प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, पीएम-किसान, और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई), ने किसानों को आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रदान की है। उदाहरण के लिए, पीएम-किसान योजना के तहत 2023-24 में 60,000 करोड़ रुपये आवंटित किए गए, जिससे लाखों छोटे और सीमांत किसानों को प्रति वर्ष 6,000 रुपये की आय सहायता मिली। मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना ने 22 करोड़ से अधिक किसानों को मिट्टी की उर्वरता की जानकारी दी, जिससे खाद और उर्वरकों का उपयोग अधिक प्रभावी हुआ। सूक्ष्म सिंचाई और सौर ऊर्जा आधारित पंपों को बढ़ावा देने वाली योजनाओं ने पानी और ऊर्जा की बचत की, जिससे उत्पादन लागत कम हुई और पैदावार बढ़ी। साथ ही, ड्रोन जैसे आधुनिक उपकरणों का उपयोग, जैसा कि मध्य प्रदेश के इंदौर में शुरू किए गए ड्रोन पायलट प्रशिक्षण कार्यक्रम से स्पष्ट है, खेती को तकनीकी रूप से सशक्त बना रहा है।

हालांकि, चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं। 2023-24 में खाद्यान्न उत्पादन 33.22 करोड़ टन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा, जिसमें चावल 13.78 करोड़ टन और गेहूं 11.32 करोड़ टन रहा, लेकिन दालों और तिलहनों का उत्पादन क्रमशः 2.42 करोड़ टन और 3.96 करोड़ टन तक सीमित रहा। महाराष्ट्र और राजस्थान जैसे राज्यों में सूखे की स्थिति ने इन फसलों को प्रभावित किया। जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की उर्वरता में कमी, और बाजार तक पहुंच की कमी जैसी समस्याएं किसानों के सामने बाधाएं खड़ी करती हैं। इसके बावजूद, भारतीय कृषि ने अपनी लचीलता साबित की है। 1950-51 में जीडीपी में 54 प्रतिशत हिस्सेदारी रखने वाला यह क्षेत्र आज 15.4 प्रतिशत तक सीमित हो गया है, फिर भी यह 53 प्रतिशत से अधिक श्रमशक्ति को रोजगार देता है। यह विडंबना दर्शाती है कि कृषि क्षेत्र को और अधिक निवेश, अनुसंधान, और नवाचार की आवश्यकता है।

कृषि क्षेत्र की यह सफलता केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं है। यह उन लाखों किसानों की कहानी है, जो अपने पसीने से धरती को सींचते हैं। यह उन महिलाओं की कहानी है, जो खेतों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं। यह उन युवाओं की कहानी है, जो ड्रोन और स्टार्टअप्स के जरिए खेती को नया आयाम दे रहे हैं। सरकार की नीतियां, जैसे न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को उत्पादन लागत से 50 प्रतिशत अधिक रखना और उर्वरक सब्सिडी, ने किसानों को सशक्त बनाया है। लेकिन भविष्य में हमें और अधिक करना होगा। 2025 तक 300 मिलियन टन खाद्यान्न उत्पादन का लक्ष्य हासिल करने के लिए हमें जलवायु-सहिष्णु फसलों, टिकाऊ खेती, और डिजिटल तकनीकों पर ध्यान देना होगा।

जैसे सूरज हर सुबह नई उम्मीद लेकर उगता है, वैसे ही भारतीय कृषि क्षेत्र हर साल नई ऊंचाइयां छू रहा है। 19.49 लाख करोड़ रुपये का यह आंकड़ा केवल एक संख्या नहीं, बल्कि भारत के अन्नदाताओं की मेहनत, सरकार की नीतियों, और तकनीकी प्रगति का संगम है। यह कहानी अधूरी नहीं रहनी चाहिए। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे किसानों को उनकी मेहनत का पूरा मूल्य मिले, उनकी फसलें बाजार तक पहुंचें, और उनकी अगली पीढ़ी खेती को गर्व के साथ अपनाए। क्योंकि जब तक भारत का किसान समृद्ध होगा, भारत की आत्मा समृद्ध रहेगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

निःशुल्क '109' शव वाहन सेवा जल्द

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राज्य सरकार जल्द ही निःशुल्क '109' शव वाहन सेवा शुरू करने जा रही है। यह सेवा 108 एंबुलेंस सेवा की तर्ज पर चलाई जाएगी और यह पूरी तरह निःशुल्क होगी। निःशुल्क शव वाहन सेवा से संबंधित दिशा-निर्देश जल्द ही आएंगे। इस संबंध में सरकार स्तर पर तैयारियां शुरू हो गई हैं। निःशुल्क एंबुलेंस सेवा की तरह ही सरकार निःशुल्क शव वाहन सेवा भी शुरू करेगी। इस संबंध में स्वास्थ्य मंत्री ने पहले ही घोषणा कर दी थी कि राज्य में निःशुल्क शव वाहन सेवा के प्रबंधन के लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग सुविचारित नियमावली तैयार करेगा। इस संबंध में दो जुलाई को मुख्य सचिव की अध्यक्षता में बैठक होगी। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की विशेष सचिव स्मिता बिस्वाल की ओर से जारी पत्र में गृह, लोक प्रशासन एवं लोक शिकायत, वित्त एवं वाणिज्य तथा परिवहन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिवों एवं प्रधान सचिवों को बैठक में उपस्थित रहने को कहा गया है।

कोरियर सविस के कर्म योगी व्यक्तिव के धनी ओ पी कुरील का निधन

परिवहन विशेष न्यूज

कर्म ही पूजा समझ कर अपने काम को पूरा करने वाले कर्म योगी व्यक्तिव के धनी ओम प्रकाश कुरील का निधन दुखत है। इन्दौर में कोरियर सविर्स की नींव कहीं जाने वाली सबसे पुरानी संस्था मधुर कोरियर सर्विस के सबसे पुराने साथी, ओ पी कुरील जी अन्नपूर्णा क्षेत्र मे मधुर कोरियर सर्विस में जब कोई काम नहीं हो पा रहा होता था तो मधुर परिवार के पितृ पुरुष व मलिक स्व शरद जोशी जी तब ओमप्रकाश कुरील जी ही सबसे उचित नाम उन्हें दिखता था। कलेक्टर , राऊ, राजेन्द्र नगर, खण्डवा रोड और सुदामा नगर क्षेत्र के डाक पार्सल डिलीवरी सिस्टम को परफेक्ट करने में उनकी सेवा निरंतर मिलतीं रही ।

वहाँ लगभग 1000 के लगभग डाक डिलीवरी प्रतिदिन आती थी उन्होंने दस से ज्यादा लड़को की टीम बनाकर उस क्षेत्र को शिकायत मुक्त कर दिया था1

जब पुराने दौर डॉक्यूमेंट चैक डीडी का था तब इंदौर के सबसे बड़े एरिया की डिलीवरी सम्हाल कर संस्थान को चिंतान्मुक्त रखा था1 कोई भी डाक पार्सल

डॉक्यूमेंट अगर ओमप्रकाशजी की ब्रांच मे गया है तो उसकी डिलीवरी सही जगह हो ही जायेगी 1 क्योंकि वह मधुर परिवार के विश्वासपात्र साथी थे। तभी संस्थान के प्रतिनिधि या मेनेजर या कोई बहार की ब्रांच वाले शिकायत करते तो

सही जवाब मिला जाता था । अगर पार्टी घर पर नहीं होती थी और अगर गलती से वह डाक पेंडिंग रह जाती तो उनका ईमानदारी वाला सही जवाब आ जाता था । डिलेवरी बाय नहीं आया या फिर अन्य कोई भी कारण हो उसके बाद वह उसे तुरंत डिलीवरी करवा देते थे और कम्पलेन्ट को क्लोज कर देते थे1 ओ पी कुरील काम की

धुन और अपनी बात के पक्के थे । मधुर परिवार के हमारे सबसे पुराने साथी ओमप्रकाश कुरील जी के निधन से बहुत दुख हुआ। आप की कार्यप्रणाली हम सभी का हमेशा मागदर्शन करतीं रहेंगी।आपका काम के प्रति समर्पण हमेशा याद रहेगा। मधुर कोरियर परिवार आप को विनम्र श्रद्धांजली देता है1हम सभी को इस बात पर बहुत अच्छा लगा कि कुरील जी की

बिटिया ने भी अपनी पढ़ाई के साथ अपने पापा का हाथ थामे रखा। उन्होंने बिटिया को भी अपने साथ रखा और उन्हें भी मेहनत और ईमानदारी के साथ काम करने हेतु प्रेरित किया। हम सभी इस दुःख की घड़ी मे उसके और पूरे परिवार के साथ है । जितनी हिम्मत बिटिया ने काम और ओमप्रकाश जी की बीमारी मे दिखाई उसके साहस को हम सभी प्रणाम करते हैं। दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि व शत शत नमन

ॐ शान्ति।। श्री मान

प्रेषक - मधुर परिवार इन्दौर मध्यप्रदेश

अपनी पुलिस को ईडी की तरह इम्पावरमेंट कर रहा झारखंड , अब जप्त करायेगी काली संपत्ति

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। झारखंड पुलिस को अब ईडी की तरह उतारा जायेगा । आपराधिक कृत्य और प्रोसीड ऑफ क्राइम (पीओसी) से अर्जित चल-अचल संपत्ति जब्त कर सकेगी। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस)- 2023 की धारा 107 के तहत कार्रवाई के लिए डीजीपी अनुराग गुप्ता के आदेश पर पुलिस मुख्यालय में आईजी रैंक के अधिकारी की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय कमेटी बनायी गई थी। कमेटी ने प्रोसीड ऑफ क्राइम से अर्जित संपत्ति को स्थायी रूप से जब्त करने को लेकर कार्रवाई से जुड़ी अनुशंसा बनाकर इसके लागू करने से जुड़ा प्रस्ताव पुलिस मुख्यालय के जरिए गृह विभाग को भेजा है। गृह विभाग के आदेश के बाद राज्य सरकार इस संबंध में कार्रवाई कर पाएगी।

पुलिस मुख्यालय कमेटी की अनुशंसाः पुलिस मुख्यालय ने अचल संपत्ति की जब्ती के मामले में भी मॉड्स तैयार किया है। जानकारी के मुताबिक, अगर अपराध के जरिए कोई अचल संपत्ति (जमीन) अर्जित की जाती है तो जिले के उपायुक्त से भी जमीन की विस्तृत रिपोर्ट ली जाएगी। इसके लिए 15 दिनों की डेडलाइन तय की गई है। रिपोर्ट मिलने के बाद संबंधित एसपी मजिस्ट्रेट के समक्ष कार्रवाई के लिए पत्राचार कर सकते हैं। अबतक एनडीपीएस और नक्सल से जुड़े कांडों में भी पुलिस अपराध से अर्जित संपत्ति की जब्ती की कार्रवाई करती थी।

बीएनएसएस की धारा 107 के तहत अपराध से अर्जित संपत्ति की जब्ती का प्रावधान है। यदि किसी केस में जांच पदाधिकारी को लगता है कि कोई संपत्ति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आपराधिक गतिविधि से अर्जित की गई है तो इसकी जब्ती की प्रक्रिया की जा सकती है। जांच पदाधिकारी को 107 के तहत कार्रवाई के लिए पहले संबंधित एसपी से मंजूरी लेनी होगी। मंजूरी के बाद एसपी इस संबंध में मजिस्ट्रेट को प्रस्ताव भेजेंगे। मजिस्ट्रेट की अनुमति से पुलिस चल या अचल संपत्ति जब्त कर पाएगी। ईडी में प्रोसीड ऑफ क्राइम से अर्जित संपत्ति एडुकेटिंग अथॉरिटी के आदेश से जब्त की जायेगी ।

जब हुनर ने तोड़ी डिग्री की दीवार : रिंकू सिंह की नियुक्ति पर बहस

मैदान पर गगनचुंबी छक्कों से दुनिया को हतप्रभ करने वाले रिंकू सिंह अब एक नए और अनपेक्षित क्षेत्र में कदम रख रहे हैं—उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा अधिकारी (बीएसए) के पद पर उनकी नियुक्ति ने न केवल खेल प्रेमियों, बल्कि पूरे देश का ध्यान खींचा है। यह खबर जितनी चौंकाने वाली है, उतनी ही प्रेरणादायक भी, क्योंकि रिंकू, जिन्होंने अभी हाईस्कूल की पढ़ाई भी पूरी नहीं की, अब एक ऐसे प्रशासनिक पद पर आसीन हो रहे हैं, जिसके लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता स्नातकोत्तर (पीजी) निर्धारित है। यह नियुक्ति, जो उत्तर प्रदेश सरकार की अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता सीधी भर्ती नियमावली के तहत हुई है, न केवल नियमों की अनूठी व्याख्या प्रस्तुत करती है, बल्कि यह उस दूरदर्शी सोच को भी रेखांकित करती है, जो खेल की असाधारण उपलब्धियों को प्रशासनिक जिम्मेदारियों से जोड़कर समाज में नई प्रेरणा का संचार करती है। सवाल यह है कि क्या एक क्रिकेटर, जिसने गेंद को सीमा रेखा पार कराने में महारत हासिल की, अब शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में भी वही जादू बिखेर पाएगा?

उत्तर प्रदेश सरकार की यह पहल, जिसमें रिंकू सिंह सहित सात अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता खिलाड़ियों को विभिन्न विभागों में नियुक्त किया गया है, खेल और प्रशासन के बीच एक अभूतपूर्व संगम को दर्शाती है। इस नियमावली के तहत, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों को शैक्षिक योग्यता की बाध्यता से मुक्त रखा गया है। यह नीति उस प्रगतिशील दृष्टिकोण को उजागर करती है, जहां प्रतिभा और समर्पण को कागजी डिग्रियों से ऊपर प्राथमिकता दी जाती है। विभागीय अधिकारियों का कहना है कि रिंकू जैसे ख्यातिलब्ध खिलाड़ी न केवल युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं, बल्कि शिक्षा विभाग जैसे संवेदनशील क्षेत्र में ब्रांड एंबेसडर की भूमिका निभाकर इसे और प्रभावी बना सकते हैं। उनकी मौजूदगी नई पीढ़ी को यह संदेश देती है कि मेहनत, जुनून और लगन से कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है। रिंकू की यह नियुक्ति केवल एक प्रशासनिक निर्णय नहीं, बल्कि एक सामाजिक संदेश है, जो यह बताता है कि खेल की उपलब्धियां समाज के हर क्षेत्र में बदलाव की बुनियाद बन सकती हैं।

हालांकि, यह नियुक्ति अपने साथ कुछ कठिन शर्तें भी लाती है। रिंकू को अगले सात वर्षों में निर्धारित शैक्षिक योग्यता हासिल करनी होगी, अन्यथा वे पदोन्नति के अवसर से वंचित रह जाएंगे। इसके अलावा, उनकी नियुक्ति उसी वर्ष भर्ती हुए अन्य अभ्यर्थियों में कनिष्ठ स्तर पर होगी। यह प्रावधान न केवल नीति की पारदर्शिता और जवाबदेही को दर्शाता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि खेल की उपलब्धियों का सम्मान करते हुए प्रशासनिक जिम्मेदारियों के लिए आवश्यक योग्यता को महत्व दिया जाए। यह एक ऐसा संतुलन है, जो समाज को यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या प्रतिभा और डिग्री के बीच का अंतर वाकई इतना गहरा है, जितना हम समझते हैं? यह नीति न केवल खिलाड़ियों को अवसर देती है, बल्कि उन्हें यह चुनौती भी देती है कि वे खुद को नए क्षेत्र में साबित करें।

रिंकू सिंह की यह नियुक्ति एक साहसिक और दूरदर्शी कदम है, जो खेल और शिक्षा के बीच एक अनोखा सेतु बनाती है। यह उन तमाम युवाओं के लिए एक प्रेरणादायक संदेश है, जो अपने सपनों को सच करने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। लेकिन यह नियुक्ति कुछ गंभीर सवाल भी उठाती है। क्या शैक्षिक योग्यता को पूरी तरह दरकिनार कर प्रशासनिक पदों पर नियुक्ति अन्य योग्य उम्मीदवारों के साथ अन्याय नहीं है? क्या यह नीति उन लोगों के लिए अवसरों को सीमित नहीं करती, जो वर्षों से शैक्षिक और प्रशासनिक तैयारी में जुटे हैं? यह बहस न केवल नीतियों की गहराई को उजागर करती है, बल्कि समाज में खेल, शिक्षा और प्रशासन के बीच एक नए संवाद की शुरुआत करती है। यह एक ऐसा अवसर है, जो हमें यह सोचने के लिए मजबूर करता है कि क्या हमारी व्यवस्था में प्रतिभा को प्रोत्साहन देने और योग्यता को संतुलित करने का सही तरीका अपनाया जा रहा है?

रिंकू सिंह की कहानी केवल एक क्रिकेटर की कहानी नहीं है। यह उस भारत की कहानी है, जो प्रतिभा को पहचानता है, उसे अवसर देता है और उसे नई ऊंचाइयों तक ले जाता है। मैदान पर अपनी ताबड़तोड़ बल्लेबाजी से लाखों दिल जीतने वाला यह युवा अब शिक्षा के क्षेत्र में अपनी पारी खेलने को तैयार है। यदि रिंकू इस अवसर का उपयोग कर शैक्षिक योग्यता हासिल करते हैं और प्रशासनिक जिम्मेदारियों को बखूबी निभाते हैं, तो यह न केवल उनकी व्यक्तिगत जीत होगी, बल्कि उन लाखों युवाओं के लिए एक ऐसी मिसाल होगी, जो सपनों को हकीकत में बदलने की ताकत रखते हैं। उनकी यह नई पारी न केवल शिक्षा विभाग के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए एक नया अध्याय लिखने का वादा करती है।

यह नियुक्ति हमें एक गहरे सामाजिक सत्य की ओर भी ले जाती है। भारत जैसे देश में, जहां शिक्षा और खेल दोनों को अलग-अलग दायरे में देखा जाता है, रिंकू की कहानी इन दोनों को जोड़ने का एक अनूठा प्रयास है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम अपने युवाओं को उनके जुनून और प्रतिभा के आधार पर अवसर दे रहे हैं, या हम अभी भी पुरानी कसौटियों में बंधे हैं? रिंकू की यह यात्रा केवल एक प्रशासनिक नियुक्ति नहीं है; यह एक सामाजिक क्रांति का प्रतीक है, जो यह साबित करती है कि जुनून, मेहनत और प्रतिभा के आगे कोई बाधा टिक नहीं सकती।

रिंकू सिंह का यह नया अध्याय न केवल उनके लिए, बल्कि पूरे देश के लिए एक प्रेरणा है। यह हमें यह विश्वास दिलाता है कि सपने, चाहे वे क्रिकेट के मैदान पर हों या प्रशासन के गलियारों में, मेहनत और समर्पण से हकीकत में बदले जा सकते हैं। यदि रिंकू इस चुनौती को स्वीकार कर अपने नए किरदार में उत्कृष्टता हासिल करते हैं, तो वे न केवल एक क्रिकेटर के रूप में, बल्कि एक प्रशासक और प्रेरणा के प्रतीक के रूप में भी इतिहास रचेंगे। यह कहानी उस भारत की है, जो बदल रहा है, जो प्रतिभा को गले लगा रहा है, और जो यह साबित कर रहा है कि असंभव कुछ भी नहीं। रिंकू सिंह की यह पारी सिर्फ शुरुआत है—एक ऐसी शुरुआत, जो लाखों युवाओं को अपने सपनों की उड़ान भरने की हिम्मत देगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

जन शताब्दी एक्सप्रेस पर पथराव के आरोप में एक व्यक्ति गिरफ्तार

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : भद्रक रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने हावड़ा जाने वाली जन शताब्दी एक्सप्रेस संख्या 12074 पर पथराव की घटना के संबंध में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। 27 जून को खुर्दा रोड मंडल सुरक्षा नियंत्रण से रेलवे मदद के माध्यम से एक शिकायत प्राप्त हुई थी, जिसमें बताया गया था कि रंडिया बौडपुर और भद्रक स्टेशनों के बीच पथराव के कारण कोच संख्या डी/13 की खिड़की का शीशा टूट गया था। घटना में कोई घायल नहीं हुआ।

भद्रक के प्रभारी आरपीएफ निरीक्षक ने तत्काल कार्रवाई करते हुए अपनी टीम के साथ प्रभावित सेक्शन में ट्रैक के किनारे तलाशी अभियान शुरू किया। घटना के संबंध में एक संदिग्ध को हिरासत में लिया गया और बाद में उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

रेलवे अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है। आरोपी को आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए माननीय एसडीजेएम कोर्ट, भद्रक के समक्ष पेश किया जाएगा।

आरपीएफ ने रेल यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है और जनता से अनुरोध किया है कि वे किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना रेलवे सहायता या रेलवे हेल्पलाइन नंबर 139 पर दें।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**